रांची, धनबाद एवं पटना से प्रकाशित

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in

सोमवार, 15 जनवरी 2024 ● पौष शुक्ल 04 , संवत 2080 ● पृष्ठ : 16, मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 1, अंक : 268

आमंत्रण मूल्य : ₹ 5 मात्र

शीतलहर की चपेट में झारखंड, कांके का पारा @2.5°

रवि भारती/शुभम किशोर। रांची

झारखंड भीषण शीतलहर की चपेट में है. उत्तर-पश्चिम से आने वाली हवाओं ने ठंड बढ़ा दी है. मौसम विभाग के द्वारा जारी चेतावनी में बताया गया कि पिछले 24 घंटे में राज्य में 3 से 7 से तक न्यूनतम तापमान में गिरावट दर्ज की गई. 17 व 18 जनवरी को रांची समेत राज्य के कई जिलों में हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश होने की संभावना है. राज्य में अगले 3-4 दिनों के दौरान न्यूनतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है. राजधानी रांची के कांके का पारा लुढ़क कर 2.5 डिग्री सेल्सियस पर आ गया है. वहीं गढ़वा में सबसे कम न्यूनतम तापमान 4.08 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया. मौसम केंद्र के अनुसार कई जिलों में शीतलहर चलने की भी संभावना जताई गई है. सोमवार यानी 15 जनवरी को गढ़वा, पलामू, चतरा, लातेहार, लोहरदगा, गुमला, सिमडेगा में शीतलहर चलने की संभावना जताई गई है. इसके बाद आसमान मुख्यातः साफ हो जाएगा. मौसम शुष्क रहेगा.

अगले कुछ दिन न्यूनतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं

11
जिलों में छाया रहेगा घना कोहरा, 7 जिलों में शीतलहरी की संभावना

17 और 18 को हो सकती है बारिश

मौसम केंद्र के मुताबिक 17 और 18 जनवरी को दक्षिणी, मध्य और उत्तर-पूर्वी भागों में कहीं-कहीं हल्के दर्जे की बारिश होने संभावना है. इसका असर साहिबगंज, गोड्डा, पाकुड़, दुमका, देवघर, जामताड़ा, धनबाद, बोकारो, रामगढ़, रांची, खूंटी, गुमला, सिमडेगा, सरायकेला-खरसावां, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिम सिंहभूम जिलों में देखने को मिलेगा.

छाया रहेगा घना कोहरा

शीत लहर को लेकर मौसम विभाग ने येलो अलर्ट जारी किया है. वहीं राज्य के उत्तरी भागों में 15 और 16 जनवरी को कहीं-कहीं मध्यम से घना कोहरा रहने की संभावना है. इसका असर गढ़वा, पलामू, चतरा, कोडरमा, हजारीबाग, गिरिडीह, देवघर, दुमका, पाकुड़, साहिबगंज, गोड्डा जिले में देखने को मिलेगा.

क्या है तापमान की स्थिति

मौसम विभाग के अनुसार 14 जनवरी को न्यूननतम तापमान 2.5 डिग्री सेल्सियस और अधिकतम तापमान 19.3 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया. हवा की गति 3.3 किलोमीटर प्रतिघंटा दर्ज की गई. अगले दो दिनों के दौरान न्यूनतम तापमान में कोई बड़े बदलाव की संभावना नहीं है. इसके बाद अगले तीन दिन इसमें धीरे-धीरे 3 से 4 डिग्री सेल्सियस की बढ़ोतरी हो सकती है.

क्या रहा अधिकतम और न्यूनतम तापमान (डिग्री सेल्सियस)

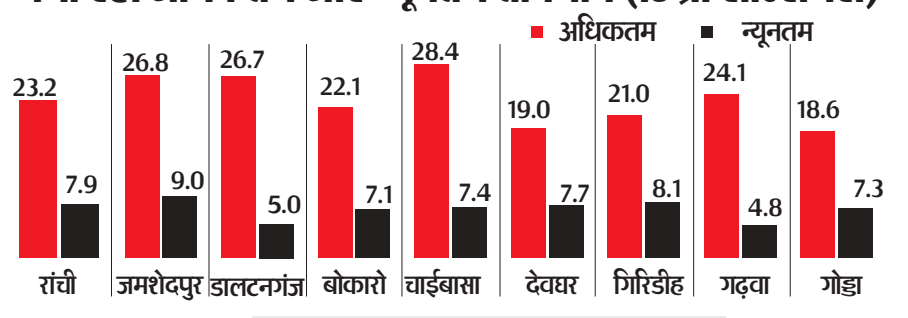

शीतलहरी से कैसे करें बचाव

- त्वचा को नियमित रूप से तेल/क्रीम से मॉइश्चाराइज करें.
- विटामिन-सी से भरपूर फल और सब्जियां खाएं और पर्याप्त तरल पदार्थ, खासकर गर्म तरल पदार्थ पीएं.
- बाहरी गतिविधियों से बचें या सीमित करें.
- कपड़े को सूखा रखें, यदि गीला हो तो शरीर की गर्मी के नुकसान को रोकने के लिए तुरंत कपड़े बदलें.
- गुनगुने पानी से नहाएं, त्वचा को जोर से न रगड़ें.
- यदि त्वचा काली पड़ जाए तो डॉक्टर से परामर्श लें.
- जहरीले धुएं से बचने के लिए हीटर का उपयोग करते समय वेंटिलेशन बनाये रखें.
- विद्युत और गैस के उपयोग में सुरक्षा उपाय करें.
- वाहन चलाते समय या किसी परिवहन माध्यम से बाहर निकलते समय सावधान रहें
- वाहन चलाते समय फॉग लाइट का प्रयोग करें
- यात्रा के समय किसी भी पुनर्निर्धारण के लिए एयरलाइंस और रेलवे और राज्य परिवहन से संपर्क में रहें
- जब तक आपातकालीन स्थिति न हो तब तक घर से सुबह-शाम बाहर निकलने से बचें.

मौसम

शहर	अधिकतम	न्यूनतम
धनबाद	23.3	10.8
जमशेदपुर	27.6	09.0
डालटनगंज	26.4	05.0

तापमान डिग्री सेल्सियस में.

सर्राफा

सोना (बिक्री)	59,400
चांदी (किलो)	77,000

ब्रीफ खबरें

मिलिंद देवड़ा कांग्रेस छोड़ शिवसेना में शामिल

मुंबई। पूर्व केंद्रीय मंत्री मिलिंद देवड़ा रविवार की सुबह कांग्रेस छोड़ने के बाद महाराष्ट्र के सीएम एकनाथ शिंदे के सामने में शिवसेना में शामिल हो गए. कांग्रेस ने आरोप लगाया कि पीएम मोदी ने भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू होने से पहले ''हेडलाइन मैनेजमेंट'' के मकसद से मिलिंद देवड़ा का इस्तीफा इसी दिन के लिए तय किया, लेकिन इसका कोई असर नहीं होगा. उधर, शरद पवार की अगुवाई वाली राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी की नेता सुप्रिया सुले ने भी भाजपा का मखौल उड़ाया और पूछा कि क्या उसके पास अपनी कोई प्रतिभा नहीं है. इससे पहले कांग्रेस छोड़ने के बाद मिलिंद देवड़ा ने कहा कि 55 साल का कांग्रेस का साथ अब नहीं रहा. इसका मुझे गहरा दुख है, लेकिन परिस्थितियां विपरीत हो गयी हैं, इसीलिए दुखी मन से कांग्रेस छोड़ रहा हूं.

-पेज 15 भी देखें

मोदी ने दी पोंगल और मकर संक्रांति की बधाई

चेन्नई/दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रविवार को देशवासियों को पोंगल और मकर संक्रांति की बधाई दी है. उन्होंने कहा कि पोंगल एक भारत श्रेष्ठ भारत की राष्ट्रीय भावना को प्रतिबिंबित करता है और यही भावनात्मक जुड़ाव काशी-तमिल संगमम् और सौराष्ट्र-तमिल संगमम् में भी देखने को मिला. इसके साथ ही मकर संक्रांति पर्व सूर्य के उत्तरायण होने पर मनायी जाती है. अब शुभ कार्य करने का वक्त है.

'टाइगर जिंदा है', इतिहास दोहराएगा

नयी दिल्ली। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने आगामी लोकसभा चुनाव में भाजपा के जीत के दावे को खारिज करते हुए कहा है कि 'टाइगर जिंदा है' और विपक्षी गठबंधन ''इंडिया'' 2004 का वह इतिहास इस बार दोहराएगा, जब 'भारत उदय' अभियान के बावजूद भाजपा को पराजित किया गया था.

चीन की तुलना में नेपाल का करीबी भारत है

जनकपुर (नेपाल)। नेपाल के पूर्व उपप्रधानमंत्री एवं नेपाली कांग्रेस के वरिष्ठ नेता बिमलेन्द्र निधि ने कहा है कि क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत और चीन जैसे बड़े देशों के बीच स्थित नेपाल पर दोनों पड़ोसी देशों का प्रभाव है, लेकिन बेटी-रोटी का संबंध होने के कारण तुलनात्मक रूप से नेपाल का सांस्कृतिक, भौगोलिक और राजनीतिक संबंध भारत से अधिक प्रगाढ़ है.

1250 करोड़ के अवैध खनन मामले में ईडी की कार्रवाई हुई तेज

पत्थर व्यवसायी कन्हैया खुडानिया समेत 30 लोगों को एकसाथ समन

17 जनवरी से पूछताछ

सौरभ सिंह। रांची

साहिबगंज जिले में हुए 1250 करोड़ के अवैध खनन मामले में प्रवर्तन निदेशालय की कार्रवाई तेज हो गयी है. ईडी ने साहिबगंज के पत्थर व्यवसायी कन्हैया खुडानिया सहित 30 लोगों को समन भेज कर पूछताछ के लिए रांची कार्यालय बुलाया है. इस मामले में ईडी खुडानिया सहित उनसे जुड़े लोगों से 17 जनवरी से पूछताछ शुरू करेगी. ज्ञात हो कि तीन जनवरी को पत्थर व्यवसायी कन्हैया खुडानिया के घर में छापेमारी के दौरान ईडी को छह लाख नकदी के साथ 30 अलग-अलग बेनामी खातों के बारे में पता चला था. इन खातों से संबंधित पासबुक भी ईडी टीम के हाथ लगे हैं.

ईडी की टीम ने बैंक खातों की पड़ताल के दौरान पता लगाया है कि ये बैंक खाते किनके-किनके नाम पर हैं. खातों की जांच के दौरान जिन लोगों के नाम सामने आये हैं, उन लोगों को समन जारी किया गया है. अब इस मामले में खुडानिया से जुड़े सभी 30 खाताधारकों से ईडी की टीम पूछताछ करेगी. ईडी द्वारा अबतक की गयी जांच में किराये के बैंक अकाउंट की भी जानकारी मिली है. इन किराये के अकाउंट से भी करोड़ों का ट्रांजेक्शन किया गया है.

विनोद सिंह से ईडी आज करेगी पूछताछ : अवैध खनन मामले में विनोद सिंह से प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) की टीम सोमवार को पूछताछ करेगी. ईडी ने विनोद सिंह के रातू रोड लाह कोठी स्थित आवास सहिक शहर के एमजी रोड पर रोस्पा टावर स्थित कार्यालय में एक साथ छापेमारी कर कई दस्तावेज बरामद किए थे. ईडी ने उनके ऑफिस को सील भी कर दिया था. विनोद सिंह के दफ्तर से मिले दस्तावेज व अन्य डिवाइस के बारे में ईडी की टीम उनसे जानकारी लेना चाहती है.

खास बातें

- 3 जनवरी को हुई रेड में ईडी को मिले हैं कई दस्तावेज
- ईडी अब इस केस को जल्द से जल्द निपटाने के मूड में है

सहिबगंज डीसी पूछताछ के लिए नहीं हुए थे हाजिर

इससे पहले ईडी ने बीते 11 जनवरी को साहिबगंज के डीसी रामनिवास यादव को पूछताछ के लिए बुलाया था. हालांकि वे ईडी के समक्ष उपस्थित नहीं हुए थे. इस बीच झारखंड की कैबिनेट सचिव वंदना दादेल ने ईडी को पत्र लिख कर यह जानकारी मांगी थी कि वह राज्य सरकार के अफसरों से किस आधार पर पूछताछ के लिए समन जारी कर रही है.

सीएम के प्रेस सलाहकार सहित 12 ठिकानों पर हुई थी रेड

साहिबगंज में 1250 करोड़ के अवैध खनन और ईडी के गवाह विजय हांसदा को प्रभावित करने से जुड़े मामले में प्रवर्तन निदेशालय ने बीते तीन जनवरी को बड़ी कार्रवाई की थी. ईडी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन के प्रेस सलाहकार अभिषेक प्रसाद उर्फ पिंटू, साहिबगंज के डीसी रामनिवास यादव, डीएसपी राजेंद्र दुबे, साहिबगंज के खनन कारोबारी खुडानिया बंधु, मुख्यमंत्री के दोस्त विनोद कुमार सिंह, रौशन सिंह, कोलकाता के कारोबारी अभय सरावगी, पूर्व विधायक पप्पू यादव, रांची के बिरसा मुंडा जेल के जमादार अवधेश कुमार के ठिकानों पर छापेमारी की थी. ईडी की टीम बिरसा मुंडा केंद्रीय कारा भी गयी थी.

सीएम हेमंत को भेजा आठवां समन

इधर जमीन घोटाले में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को ईडी ने शनिवार को पत्र लिख कर आठवां समन भेजा. ईडी ने हेमंत सोरेन से अब तक पूछताछ के लिए नहीं आने का कारण पूछा है. हेमंत सोरेन से इस मामले में जवाब देने के लिए एक 16 से 20 जनवरी तक का समय दिया है. ईडी ने सीएम को 16 से 20 जनवरी तक इस पत्र का जवाब देने के साथ हाजिर होने को कहा है.16 से 20 जनवरी तक या तो खुद आएं या ईडी को उनके पास आना पड़ेगा.

कहां-कहां हुई थी रेड

- रामनिवास यादव डीसी साहिबगंज के साहिबगंज स्थित सरकारी आवास और जयपुर स्थित दो पैतृक आवास
- अभिषेक श्रीवास्तव उर्फ पिंटू के रांची में आर्यपुरी स्थित घर
- विनोद सिंह, आर्किटेक्ट, रांची में पिस्का मोड़ स्थित घर
- रौशन सिंह, रांची के चुटिया में कृष्णापुरी स्थित मकान
- राजेंद्र दुबे, डीएसपी साहिबगंज, हजारीबाग स्थित आवास
- राजकिशोर यादव उर्फ पप्पू यादव, पूर्व विधायक कटोरिया बांका, ब्रह्मसमाज रोड, देवघर
- कन्हैया खुडानिया, साहिबगंज
- अभय सरावगी, जेडब्ल्यू मैरिएट रोड, कोलकाता

पूर्व विधायक पप्पू यादव से ईडी कर चुकी है पूछताछ

साहिबगंज में अवैध खनन व गवाहों को प्रभावित करने से जुड़े मामले में ईडी ने बीते नौ जनवरी को साहिबगंज डीसी रामनिवास यादव के करीबी पूर्व विधायक पप्पू यादव से रांची जोनल ऑफिस में पूछताछ की थी. ईडी अफसरों के अनुसार, पूर्व विधायक ने पूछताछ के दौरान कोई खास जानकारी उपलब्ध नहीं करायी है. डीसी समेत अन्य लोगों से अपने रिश्तों व अवैध खनन के मामले में गवाहों को प्रभावित करने व मनी लॉन्ड्रिंग मामले में संलिप्तता से पूर्व विधायक यादव ने इनकार किया था.

शेल कंपनियों से निवेश के भी साक्ष्य मिले थे

रेड में ईडी को शेल कंपनियों से निवेश, संदिग्ध ट्रांजेक्शन के साक्ष्य हाथ लगे थे, जिसकी प्रारंभिक जांच पूरी हो गयी है. जांच में ईडी को अवैध खनन के साथ मनी लॉन्ड्रिंग की जानकारियां मिली है, जिसमें लोगों की संलिप्तता का भी पता चला है. अब ईडी इस बारे में लोगों की भूमिका की जांच करेगी. इसलिए समन जारी कर पूछताछ के लिए बुलाया जा रहा है.

राहुल गांधी ने शुरू की भारत जोड़ो न्याय यात्रा, बोले

पूरा देश अन्याय के दौर में है

एजेंसियां। इंफाल

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने रविवार को यहां 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' की शुरुआत की और कहा कि यह यात्रा इसलिए निकालनी पड़ी, क्योंकि देश बड़े अन्याय के दौर से गुजर रहा है. उन्होंने यह भी कहा कि देश के सामने एक ऐसा दृष्टिकोण रखा जाएगा, जो नफरत और हिंसा पर आधारित नहीं होगा, बल्कि सद्भाव, भाईचारे और समान भागीदारी वाला होगा. उन्होंने मणिपुर हिंसा का उल्लेख करते हुए दावा किया कि राज्य (मणिपुर) में जो हुआ, वो भाजपा, आरएसएस की नफरत की राजनीति का प्रतीक है.

राहुल ने कहा कि देश में एकाधिकार कायम किया जा रहा है और बड़े पैमाने पर कारोबार बंद हो गए हैं तथा भयंकर बेरोजगारी है. कटाक्ष करते हुए कहा, हम अपने मन की बात नहीं बताना चाहते, हम आपके मन की बात सुनना चाहते हैं. उन्होंने कहा, 29 जून को मैं मणिपुर आया था और उस दौरे में जो मैंने देखा, जो सुना,... मैंने पहले कभी नहीं देखा था, नहीं सुना था. 2004 से मैं राजनीति में हूं, पहली बार मैं हिंदुस्तान के एक प्रदेश में गया, जहां शासन का पूरा का पूरा ढांचा ध्वस्त हो गया था. उन्होंने दावा किया, जिसको हम मणिपुर कहते थे, 29 जून के बाद वो मणिपुर रहा ही नहीं... , बंट गया, कोने-कोने में नफरत फैली, लाखों लोगों को नुकसान हुआ, भाई-बहन, माता-पिता आंखों के सामने मरे. -शेष पेज 13 पर

बसों से होगी यात्रा : राहुल ने कहा, मैं चाहता था कि, जैसे हमने भारत जोड़ो यात्रा के दौरान पैदल यात्रा की, वैसे ही हम ईस्ट से वेस्ट तक यात्रा करें. लोगों ने यात्रा शुरू करने के लिए अलग-अलग सुझाव दिए, लेकिन मैंने कहा कि, अगली भारत जोड़ो यात्रा सिर्फ मणिपुर से शुरू हो सकती है. कहा कि, हमने नफरत को मिटाने और भारत को एक सूत्र में बांधने की बात की है. हमने भारत जोड़ो यात्रा 1 में इस अभियान की शुरुआत की है. लोगों ने हमसे कहा कि हमें भी पूर्व से पश्चिम की ओर यात्रा करनी चाहिए, जैसे हमने कन्याकुमारी से कश्मीर तक की थी. चूंकि हमारे पास समय कम है, इसलिए हमने इसे बसों का उपयोग करके एक हाइब्रिड यात्रा के रूप में करने का निर्णय लिया.

राजनीति झारखंड की 5 समेत देश की 47 लोस सीटों पर हो सकती है पीएम मोदी की महारैली

आदिवासी बहुल सीटों पर मोदी का फोकस, लगाएंगे जोर

सत्य शरण मिश्रा। रांची

देश की 47 लोकसभा सीटें आदिवासियों के लिए आरक्षित है. लोकसभा चुनाव में अधिक से अधिक एसटी सुरक्षित सीटें जीतने के लिए भाजपा ने बड़ा गेम प्लान तैयार किया है. इसके तहत प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी देश के सभी 47 एसटी सुरक्षित सीटों पर महारैली करने वाले हैं. इसमें झारखंड की भी 5 लोकसभा सीट (राजमहल, दुमका, सिंहभूम, खूंटी और लोहरदगा) शामिल हैं.

2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा ने देश के 47 में से 27 सीटों पर जीत हासिल की थी. 2019 के लोकसभा चुनाव में 4 सीटें और भाजपा की झोली में आईं. कुल 31 एसटी रिजर्व सीटों पर भाजपा ने परचम लहराया था. भाजपा 2024 के चुनाव में कम से 40 प्लस का टॉर्गेट लेकर चल रही है. इसी रणनीति के तहत फरवरी महीने में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी झारखंड और गुजरात में दो रैलियों को संबोधित कर सकते हैं.

2024 में एसटी सुरक्षित 2 सीटें हार गयी थी भाजपा

बता दें कि 2019 के लोकसभा चुनाव में भाजपा झारखंड में आदिवासी सुरक्षित 5 में से तीन सीटों पर ही चुनाव जीत पाई थी. भाजपा के खाते में सिर्फ दुमका, खूंटी और लोहरदगा सीटें आई थीं, जबकि राजमहल और सिंहभूम सीट पर भाजपा हार गई थी. सिंहभूम भाजपा की सिटिंग सीट थी, लेकिन यह सीट उसे गंवानी पड़ी. वहीं खूंटी और लोहरदगा में भी भाजपा का प्रदर्शन अच्छा नहीं था. खूंटी में अर्जुन मुंडा सिर्फ 1445 से चुनाव जीत पाये थे. वहीं लोहरदगा में भाजपा के सुदर्शन भगत सिर्फ 1 फीसदी वोट से ही चुनाव जीते थे. पीएम मोदी की प्रस्तावित महारैली हारी हुई दोनों सीटों को जीतने और कमजोर सीटों पर जान फूंकने के लिए होगी.

आदिवासियों को रिझाने के लिए भाजपा और मोदी ने झोंक दी है ताकत

आदिवासी वोटरों को रिझाने में भाजपा ने पूरी ताकत झोंक दी है. पीएम मोदी विशेष रूप से आदिवासियों पर फोकस कर रहे हैं. उन्होंने भगवान बिरसा मुंडा के जन्मदिन को जनजातीय गौरव दिवस घोषित किया. वहीं 15 नवंबर 2023 को बिरसा मुंडा के पैतृक गांव उलिहातू से विकसित भारत संकल्प यात्रा की शुरुआत की थी. आजादी के बाद पहली बार किसी प्रधानमंत्री ने उलिहातू का दौरा किया. भाजपा इन सब बातों को लेकर जनता के बीच जा रही है. लोगों को बता रही है कि मोदी ने आदिवासियों के लिए क्या-क्या किया है. चुनाव से पहले एक बार फिर मोदी भी आकर आदिवासियों को बताएंगे कि उन्होंने उनके लिए क्या-क्या किया है.

मालदीव के राष्ट्रपति ने फिर दिखाए भारत विरोधी तेवर

एजेंसी। माले

मालदीव और भारत के बीच संबंधों में तल्खी बढ़ती जा रही. मालदीव के राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने एक बार फिर से रविवार को 'इंडिया आउट' का राग अलापा है. मुइज्जू ने भारत से अपने सैन्यबलों को मालदीव से हटाने की मांग फिर दोहराई है.

उन्होंने 15 मार्च तक की तारीख दी है. इससे पहले मालदीव ने भारतीय सैनिकों को हटाने की मांग की थी. वहां अभी 88 भारतीय सैनिक हैं. चीन की हालिया यात्रा कर स्वदेश लौटे राष्ट्रपति मुइज्जू अब भारत को लेकर तीखी बयानबाजी कर रहे हैं. शनिवार को भी मुइज्जू ने भारत का नाम लिए बिना कहा था कि 'हम छोटे हो सकते हैं लेकिन इससे उनको हमें धमकाने का लाइसेंस नहीं मिल जाता है.' इस बीच, भारत सरकार की तरफ से इस मामले पर कोई त्वरित टिप्पणी नहीं की गई है. सन ऑनलाइन अखबार की रिपोर्ट के मुताबिक, राष्ट्रपति के पब्लिक पॉलिसी सेक्रेटरी अब्दुल्ला नाज़िम इब्राहिम ने कहा कि राष्ट्रपति मुइज्जू ने औपचारिक रूप से भारत से 15 मार्च तक सैनिकों को बुलाने को कहा है. उन्होंने यह भी साफ किया कि भारतीय सैनिक यहां नहीं रह सकते. उन्होंने कहा कि यह राष्ट्रपति डॉ. मोहम्मद मुइज्जू और उनकी प्रशासनिक नीति है.

बोले मुइज्जू

- दिया समय, कहा-15 मार्च तक भारत अपनी सेनाएं हटा ले
- हम छोटे देश हैं, तो कोई हमें धमका नहीं सकता है

जाने कहां गए वो दिन...क्या जलवे थे सरकार के साहब बहादुरों के

रवि भारती। रांची

वो भी क्या दिन थे ? पसीना भी गुलाब हुआ करता था. जिधर देखो, इनका जलवा ही जलवा था. बस नाम ही काफी था. नाम लिया नहीं कि काम आसानी से हो जाता था. एक फोन ही तो करना होता था. ' साहब बहादुर' (पर्सनल सेक्रेटरी) का फोन आते ही अफसर हों या बाबू, इंजीनियर हों या ओवरसियर सबकी घिग्घी बंध जाती थी. कई ' साहब बहादुरों ' की ख्याति राज्य के अंदर गांव-गांव तक फैली हुई थी. 'सरकार बहादुर' (मंत्री) तो बाद में याद किए जाते थे, पहले तो सलाम बंदगी ' साहब बहादुरों ' को ही करना पड़ता था. अपना मत्था इनके दर पर जब टिकता था, तो आगे बढ़ने का पासपोर्ट जारी होता था. इनका रुतबा देखने और सुनने लायक होता था. मजाल है कि कोई इनकी इजाजत के बगैर ' सरकार बहादुर' से मिल ले? मंत्रालय में इनकी इच्छा के बगैर एक पत्ता भी नहीं हिल सकता था. ' साहब बहादुरों ' की धमक और हनक मंत्रालय और सचिवालय से लेकर ब्लॉक के हाकिमों तक हुआ करती थी. इनकी कोई हुक्म उदूली नहीं कर सकता था.

लंबी है साहब बहादुरों की फेहरिस्त

झारखंड में साहब बहादुरों की एक लंबी फेहरिस्त रही है. याद कीजिए एक ' साहब बहादुर' अतीश सिंह को. अतीश की रांची से दिल्ली तक धमा-चौकड़ी मची रहती थी. नाम ही काफी था. अतीश सिंह का फोन आया नहीं कि काम हुआ. दूसरे शख्स मनोज सिंह थे. शुरुआती दिनों में वह पहले वित्त मंत्री के 'साहब बहादुर' रहे. फिर ज्यों-ज्यों उनका रुतबा बढ़ा, हर सरकार में वह बतौर 'साहब बहादुर' अपना जलवा बिखरते रहे. इसी बीच व्यक्तिगत राजस्व वृद्धि में भी आगे रहे. नतीजा यह रहा कि आय से अधिक संपत्ति मामले में उन्हें जांच एजेंसी ने धर लिया. बहुत दिनों तक वह झारखंड से लेकर बिहार के गांव-गांव तक भागते फिरे. इन साहब बहादुरों में एक नाम आपको जरूर याद होगा, संजय झा. क्या अंदाज थे श्रीमान के. उनके सरकार बहादुर भी कम दिलेर नहीं थे. उनकी काफी गहरी छनती थी. ऐसे ही साहब बहादुरों की फेहरिस्त बहुत लंबी है. ' साहब बहादुरों ' की इस लंबी श्रृंखला में कई नाम ऐसे हैं जो सबके यारों के यार बन कर रहे हैं. इनमें से हिमांशु का नाम एक ऐसी शख्सीयत का है जो आज भी सबके 'अपने ' हैं. सत्ता में रहें या सत्ता से बाहर, इनका अंदाज कभी नहीं बदला.

राज्य बनने के तुरंत बाद ही दिखने लगा था जलवा

राज्य बनने के तुरंत बाद ही इनका जलवा देखने को मिल गया था. हर मंत्री के पास एक से एक नायाब शख्सीयत बतौर साहब बहादुर पदस्थ थे. आपकी जुबां पर मंत्री का नाम चढ़ न चढ़े, इन 'साहब बहादुरों' के नाम जरूर चढ़े रहते थे. मंत्रियों के साथ अब कहां वैसे साहब बहादुर रहे? वे अभी कहां हैं, किस अंदाज और हालात में हैं, आम लोगों को नहीं पता ? उनकी एक अलग पौध ही थी. मानो धरा पर उनका अवतरण इसी काम के लिए ही हुआ है.

आपकी बात

अगर कोई व्यक्ति मृत्यु उपरांत देह दान कर देता है तो उसका अंग किसी और के काम आ सकता है.

नाम : छोटी कुमारी
कार्य : गृहिणी
निवास स्थान : झुमरीतिलैया

अन्य महिलाओं की तरह ही छोटी कुमारी अपना जीवन गुजर बसर कर रही हैं. इनके ऊपर भी पति व बच्चों की जिम्मेदारियां हैं. इनका जन्म 13 जुलाई 1998 को गिरिडीह जिले के बिरनी प्रखंड में हुई थी. इनकी बचपन की पढ़ाई बिरनी मिडिल स्कूल में और उच्च शिक्षा 2 उच्च विधालय बिरनी से हुई. इन्होंने जेजे कॉलेज झुमरीतिलैया से ग्रेजुएशन कंपलीट कर बीएड की पढाई कश्मीर विश्वविद्यालय से कर रहीं हैं. इनकी शादी आठ वर्ष पूर्व जयनगर में हुई. इन्होंने मृत्यु उपरांत अंग दान या देह दान करने की शपथ ले रखी है. इनका मानना है कि अगर किसी व्यक्ति की मृत्यु हो जाती है तो फिर उनके परिजन मृत्यु उपरान्त उसे जला या दफना देते हैं. जिससे उनके शरीर का अंग जल कर राख और मिट्टी से खाक हो जाता है. परंतु अगर कोई व्यक्ति मृत्यु उपरांत देह दान कर देता है तो उसका अंग किसी और के काम आ सकता है. किसी नेत्रहीन व्यक्ति को नेत्र मिल सकता है. ठीक उसी प्रकार से किडनी फेल मरीजों को किड़नी मिल जाता है. जिससे किसी जरुरतमंद व्यक्ति को नया जीवन मिल सकता है.

60 लाख कार्डधारियों में सिर्फ 11.83% को मिल पाया अनाज

- 11 जिलों में 10 फीसदी से भी कम बंटा चावल और गेहूं
- बांटा जाना है 14 .61 करोड़ किलोग्राम चावल और गेहूं
- अब तक बंटा है सिर्फ 1.72 करोड़ किलोग्राम अनाज

प्रमुख संवाददाता। रांची

राज्य में अब तक 6098082 कार्डधारियों के बीच सिर्फ 11.83 फीसदी ही अनाज मिल पाया है. ये आंकड़े 13 जनवरी 2024 तक के हैं. आंकड़ों के अनुसार राज्य में अब तक 1395882.286 किलोग्राम चावल और 3332793.363 किलोग्राम गेंहूं ही बंट पाया है. जबकि 117407342 किलोग्राम चावल और 28698753 किलोग्राम गेहूं बांटा जाना है. इस हिसाब से कुल 14.61 करोड़ किलोग्राम अनाज बांटा जाना है, जिसमें अब तक सिर्फ 1.72 करोड़ किलोग्राम अनाज ही बंट पाया है.

13 जिलों में 10 फीसदी से भी कम बंटा है अनाज : राज्य के 13 जिलों में 10 फीसदी से भी कम अनाज बंट पाया है. सरायकेला-खरसांवा में 2.47 फीसदी ही अनाज बंटा है. गढ़वा में 2.53 फीसदी, लोहरदगा में 2.69 फीसदी, गिरिडीह में 3.25 फीसदी, कोडरमा में 4.01 फीसदी, वहीं बोकारो में 8.61 फीसदी, धनबाद में 9.49 फीसदी, गोड्डा में 6.92 फीसदी, हजारीबाग में 9.66 फीसदी, लातेहार में 7.88 फीसदी, पाकुड़ में 7.01 फीसदी, पलामू में 9.31 फीसदी और पश्चिम सिंहभूम में 8.66 फीसदी ही अनाज बंट पाया है.

चार जिलो में 20 फीसदी से अधिक बंटा है अनाज : राज्य के सिर्फ चार जिलों में 20 फीसदी से अधिक अनाज बंटा है. इसमें रामगढ़ में सबसे अधिक 29.35 फीसदी अनाज बंटा है. वहीं देवघर में 25.25 फीसदी अनाज बंटा है. इसके अलावा खंटी में 24.03 और साहिबगंज में 21.08 फीसदी ही अनाज बंट पाया है. जबकि राजधानी रांची में 19.08 फीसदी ही अनाज बंट पाया है.

जिला	चावल बंटा(किग्रा)	गेहूं बंटा (किग्रा)	दोनों के वितरण का प्रतिशत
बोकारो	48690.070	12164.450	8.61
चतरा	608045.970	147137.345	15.06
देवघर	1345758.310	333187.110	25.25
धनबाद	754075.457	188149.721	9.49
दुमका	896681.300	207611.480	17.3
पूर्वी सिंहभूम	1104077.020	261179.220	14.53
गढ़वा	140747.380	20563.170	2.53
गिरिडीह	294798.380	72273.260	3.25
गोड्डा	343879.600	72428	6.92
गुमला	440789.120	107515.130	12.27
हजारीबाग	571013.340	141411.450	8.66
जामताड़ा	544287.290	135986.410	17.82
कोडरमा	93380.100	22704.170	4.01
लातेहार	230198.700	53474.740	7.88
लोहरदगा	51805.750	12005.220	2.69
पाकुड़	253958.310	48565.940	7.01
पलामू	752340.834	168006.416	9.31
रांची	1847503.225	455516.181	19.08
साहिबगंज	936190.090	199548.050	21.08
सरायकेला	98267	24543.420	2.47
सिमडेगा	287985.580	71919.360	11.88
पश्चिमी सिंहभूम	552383.710	137677.460	8.66
खूंटी	556977.050	139012.430	24.03
रामगढ़	766772.690	190730.220	29.35

स्पेशल ब्रांच के 450 सब इंस्पेक्टर की वरीयता सूची जारी

रांची। स्पेशल ब्रांच के 450 सब इंस्पेक्टर की वरीयता सूची जारी की गयी है. स्पेशल ब्रांच के डीआईजी ने आदेश जारी किया है. जारी आदेश में कहा है कि स्पेशल ब्रांच के सीधे नियुक्त सब इंस्पेक्टर रैंक के पदाधिकारी की सूची जारी किये जाने की तिथि से 15 दिनों के अंदर अगर किसी को कोई आपत्ति हो, तो इसकी जानकारी उपलब्ध करायें. यदि किसी सब इंस्पेक्टर का नाम वरीयता सूची से छूट गया है, तो वो भी इसकी जानकारी दें.

CLASSIFIED

साहिबगंज व दुमका पुलिस लाइन में ₹79.72 करोड़ से बनेंगे नये क्वार्टर

संवाददाता। रांची

साहिबगंज और दुमका पुलिस लाइन में क्वार्टरों से वंचित पुलिस कर्मियों के लिए राहत की खबर है.

- अब पुलिस कर्मियों की संख्या बढ़ी है तो निश्चित रूप से क्वार्टरों की जरूरत भी बढ़ी है

इन दोनों जिलों के पुलिस लाइन में 79.72 करोड़ की लागत से नये क्वार्टर बनाये जाएंगे. ताकि सभी कर्मियों को पुलिस लाइन में ही क्वार्टर उपलब्ध हो सकें. झारखंड पुलिस हाउसिंग कॉरपोरेशन इम दोनों जिलों के पुलिस लाइन में 3 के 19 भवन का निर्माण करेगी. साहिबगंज में 59.91 करोड़ से 14 भवनों का निर्माण होगा, जबकि दुमका पुलिस लाइन में 19. 81 करोड़ की लागत से पांच भवन का निर्माण कराया जायेगा. झारखंड गृह विभाग ने इससे संबंधित आदेश जारी कर दी है.

किराए के मकानों में रहते हैं पुलिसकर्मी

गौरतलब है कि साहिबगंज और दुमका पुलिस लाइन काफी समय पहले बनायी गयी थी. उस समय यहां पुलिस कर्मियों की संख्या कम थी. लेकिन अब पुलिस कर्मियों की संख्या बढ़ी है तो निश्चित रूप से क्वार्टरों की जरूरत भी बढ़ी है. इसलिए यहां नये क्वार्टरों का निर्माण कराया जाएगा. बता दें कि पुलिस लाइन में क्वार्टरों की कमी होने से 100 से ज्यादा पुलिस कर्मी शहर में अलग-अलग जगहों पर किराए पर मकान लेकर रहे हैं.

आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय अध्यक्ष बने डोमन सिंह मुंडा

रांची। आजसू पार्टी के केंद्रीय अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो के निर्देशानुसार डोमन सिंह मुंडा को आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय अध्यक्ष एवं डॉ मुकुंद चंद्र मेहता को आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय महासचिव मनोनीत किया गया है. डोमन सिंह मुंडा को आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय अध्यक्ष एवं डॉ मुकुंद चंद्र महतो को आजसू बुद्धिजीवी मंच के केंद्रीय महासचिव बनाए जाने पर आजसू पार्टी के केंद्रीय मुख्य प्रवक्ता डॉ देवशरण भगत, उपाध्यक्ष हसन अंसारी, केंद्रीय महासचिव लंबोदर महतो, रौशनलाल चौधरी, राजेंद्र मेहता, हरेलाल महतो, कौशिक चांद, अंचल किंगर, अरविंद कुमार, सज्जाद आलम, प्रो मिथलेश सिंह, प्रो केपी सिन्हा, प्रो शंभू सिंह, शिव शंकर प्रसाद, जितेंद्र सिंह, आदित्य महतो सहित अन्य ने बधाई दी.

- डॉ मुकुंद चंद्र मेहता बनाए गए केंद्रीय महासचिव बनाए गए

राजनीति में सामूहिक विचार अहम : सुदेश

संवाददाता। रांची

राजनीति में किसी एक व्यक्ति का विचार नहीं बल्कि सामूहिकता के बोध के साथ अनेक विचारों को समाहित करना महत्वपूर्ण होता है. कल की चिंता से पहले हमें आज लिए जा रहे राजनीतिक फैसलों के प्रति गंभीर होने की आवश्यकता है. अगर हम आज गंभीर नहीं हुए तो आने वाले समय में हमें इसका नुकसान उठाना होगा. उक्त बातें पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने हरमू स्थित केंद्रीय कार्यालय में आयोजित मिलन समारोह में कही. इस दौरान मो. सरफ़राज़ अलाम और मो. शाहनवाज़ अलाम के नेतृत्व में रांची शहर के सैकड़ों युवाओं ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की.

पार्टी में सभी की भावनाओं का होता है सम्मान : सुदेश महतो ने कहा कि राजनीति किसी एक व्यक्ति के विचार से नहीं बल्कि अनेक विचारों को एक जगह समाहित करने से चलती और सशक्त दिखती है.

खास बातें

- मिलन समारोह ने सैकड़ों ने थामा पार्टी का दामन
- इंडी अलायंस सिर्फ चुनाव लड़ने व जीतने की कोशिश तक सीमित

राजनीति में सामूहिकता को प्लेटफार्म देने का काम आजसू पार्टी करती है। पार्टी में सभी की भावनाओं का सम्मान होता है. भावनाओं के सम्मान और विचारों को राज्य के विकास में लगाना हमारा लक्ष्य है. इंडी अलायन्स सिर्फ चुनाव लड़ने और जीतने की कोशिश तक ही सीमित है. इसमें देश और देशवासियों की तरक्की नहीं दिखाई देती है. देश एवं देशवासियों के प्रति इनकी कोई जवाबदेही नजर नहीं आती है.

इन्होंने थामा आजसू का दामन : मो. सरफ़राज़ अलाम, मो. शाहनवाज़ अलाम, वसीम आलम, शाहिद, आयण, अनस, मिट्ठू, अमन,शाकिब,ओबैश अलाम, दानिश, फरहान, आबेदीन, अट्टनस, आरिज़, वसीम, शाद, अफ्फान, राजू, साहेब, अमीर, सलमान, असीम, शाहनवाज़, जावेद, शान, नौशाद, उफान, अनस खान, मुटन अलाम, ओवैसी, इरशाद, तैयब, तनवीर अलाम समेत सैकड़ों युवाओं ने पार्टी की सदस्यता ग्रहण की.

जयंती पर याद किए गए डॉ. बहादुर सिंह

अखिल झारखंड बुद्धिजीवी मंच के पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष डॉ बहादुर सिंह की जयंती पर उनके चित्र पर माल्यार्पण कर और उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई. इस दौरान उनकी याद में एक मिनट का मौन रख कर उन्हें नमन किया गया. पार्टी अध्यक्ष सुदेश कुमार महतो ने उन्हें याद करते हुए कहा कि शिक्षा के क्षेत्र में बहादुर जी ने उल्लेखनीय कार्य किए हैं. उन्होंने अपनी सोच और ऊर्जा से पार्टी के विचारों को जन जन तक पहुंचाने का काम किया था. पार्टी में उनके योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकता है. इस दौरान पार्टी के केंद्रीय महासचिव राजेन्द्र मेहता, केंद्रीय सांगठनिक सचिव एस अली, केंद्रीय प्रवक्ता सुधीर यादव, केंद्रीय मीडिया संजोयक परवाज़ खान मुख्य रूप से उपस्थित रहे.

राज्यभर की खबरों के लिए स्कैन करें

शुभम संदेश

एक राज्य - एक अखबार

www.lagatar.in

सोमवार, 15 जनवरी 2024 ● पौष शुक्ल 04 , संवत 2080 ● पृष्ठ : 16, मूल्य : ₹ ~~6~~ ● वर्ष : 1, अंक : 268 आमंत्रण मूल्य : ₹ 5 मात्र

ब्रीफ खबरें

हाईटेंशन तार की चपेट में आकर युवक की मौत

हजारीबाग। जिले में 28 वर्षीय युवक की हाई-टेंशन तार की चपेट में आकर मौत हो गयी. पुलिस के मुताबिक, घटना के बाद लोगों ने कई घंटों के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग दो को अवरुद्ध कर दिया. पुलिस अधिकारी (बरही) नजीर अख्तर ने बताया कि घटना पंचमाधव इलाके में उस समय हुई, जब गणेश ठाकुर अपनी नाई की दुकान खोलने जा रहा था कि तभी उसके ऊपर बिजली का तार टूटकर आ गिरा. स्थानीय लोगों ने पांच घंटे के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग दो को अवरुद्ध कर दिया और परिवार को मुआवजा व मृतक के परिवार के सदस्य को रोजगार देने की मांग की. कांग्रेस विधायक उमाशंकर अकेला मौके पर पहुंचे और मृतक के परिजनों से मिले. विधायक ने उन्हें सरकारी नियमों के अनुसार मुआवजे के भुगतान का आश्वासन दिया.

मैथन आदर्श सेवा समिति ने गरीबों के बीच बांटे कंबल

मैथन। मैथन आदर्श सेवा समिति ने मिनी मार्केट स्थित अपने कार्यालय से जरूरतमंदों के बीच कंबल वितरण किया. अध्यक्ष सह झामुमो नेता अशोक मंडल ने बताया कि समिति 23 वर्षों से सेवा कार्य करती आ रही है. बताया कि कोरोना के समय भी समिति ने गांवों में जाकर कम्बल बांटा था. अशोक मंडल के अलावा चितरंजन साहा, केंद्रीय विद्यालय के शिक्षक तलत अहमद, समिति के कार्यकारी अध्यक्ष अर्जुन पाठक विकल, उपाध्यक्ष विनोद सिंह, बीणा ठक्कर, नंदनी मालवीय, संगीता गांगुली आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन समिति के सचिव शंकर गांगुली ने किया.

कोयला व डीजल चोरों के खिलाफ हुआ घेराव

मैथन। ईसीएल मुगमा एरिया के बड़मुरी कोलियरी के मजदूरों ने रविवार को बीसीकेयू के बैनर तले ओपी का घेराव किया. कोयला व डीजल चोरों के खिलाफ कार्रवाई की मांग को लेकर एग्यारकुंड प्रखंड के सीओ कृष्णा मरांडी एवं ओपी प्रभारी को ज्ञापन सौंपा. ओपी प्रभारी ने आश्वस्त किया कि एक सप्ताह का समय दें. कोयला व डीजल चोरों के खिलाफ कड़ी कारवाई होगी. कहा कि ईसीएल प्रबंधन नामजद प्राथमिकी दर्ज नहीं कराता है. जिससे पुलिस को कार्रवाई में तकनीकी समस्या होती है. वहीं यूनियन नेताओं ने कहा कि चोरों के आंतक से मजदूरों में दहशत है. कोलियरी में काम करने के दौरान सैकड़ों कोयला व डीजल चोर हरवे हथियार के साथ खदान में आ जाते हैं.

एफआईएच महिला हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर

दूसरे दिन के मुकाबले

करो या मरो मुकाबले में जीता भारत

न्यूजीलैंड को 3-1 से हरा कर पहली जीत दर्ज की

शुभम किशोर। रांची

एफआईएच महिला हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर के अपने दूसरे करो या मरो मुकाबले में रविवार को भारत ने न्यूजीलैंड को हरा कर अपनी पहली जीत दर्ज की. इस जीत से टीम इंडिया के सेमीफाइनल खेलने की उम्मीदें जिंदा हो गयी हैं. रविवार को दिन का आखिरी मुकाबला भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेला गया. पहले मैच में मिली हार को भुला कर भारत ने मैच के 41वें सेकंड में गोल कर इरादा साफ कर दिया. झारखंड की संगीता कुमारी ने न्यूज़ीलैंड के डिफेंस को भेद कर शानदार फील्ड गोल किया. न्यूजीलैंड ने पलटवार करते हुए मैच के 9 वें मिनट में मिले पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में बदल कर 1-1 से बराबरी की. मेगन हल ने

न्यूजीलैंड के लिए गोल किया. भारत ने आक्रामक खेल खेलते हुए 12 वें मिनट में पेनॉल्टी को गोल में बदल कर 2-1 की लीड बनाई. उदिता ने

झारखंड की सलीमा टेटे को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया

भारत के लिए दूसरा गोल किया. भारत के लिए तीसरा गोल नेहा ने 14वें मिनट में किया. न्यूजीलैंड के डिफेंस में सेंध लगा कर फील्ड गोल कर 3-1 की लीड ली. पहले क्वार्टर में हुए शानदार गेम के बाद बाकी के तीन क्वार्टर में कांटे की टक्कर हुई. हालांकि दोनों टीमें गोल करने में असमर्थ रहीं. दोनों टीम को 5-5 पेनाल्टी कॉर्नर मिले. झारखंड की सलीमा टेटे को प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया. उन्होंने कहा कि पूरी टीम ने 100 परसेंट परफॉर्म किया. भारत का अगला मुकाबला इटली के साथ 16 जनवरी को खेला जाएगा.

यूएसए की दूसरी और चिली की पहली जीत पर रोका

रांची। एफआईएच महिला हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर में रविवार को दिन में खेले गये तीन मैचों में यूएसए ने इटली को 2-0 से हरा कर लगातार दूसरी जीत दर्ज की. वहीं चिली ने चेक रिपब्लिक को 6-0 से हरा कर टूर्नामेंट में पहली जीत दर्ज की. एक अन्य मैच में जापान ने मजबूत दावेदार जर्मनी 1-1 की बराबरी पर रोक कर सबको हतप्रभ कर दिया. हॉकी मैचों को देखने के लिए मोरहाबादी मैदान में आम से खास लोगों की भारी भीड़ उमड रही है. पूरी रांची हॉकी के रंग में रंगी नजर आ रही है.

चिली ने चेक रिपब्लिक के खिलाफ दागे 6 गोल

मैनुएला उरोज के दो गोल की मदद से चिली ने पूल ए के अपने दूसरे मैच में चेक गणराज्य को 6-0 से हराकर खुद को दौड़ में बरकरार रखा. विश्व रैंकिंग में 15वें स्थान पर काबिज चिली को इससे पहले शनिवार को जर्मनी से 0-3 से हार का सामना करना पड़ा था. लगातार दूसरी हार के बाद विश्व रैंकिंग में 25वें स्थान पर काबिज चेक गणराज्य की टीम इसके साथ ही ओलंपिक क्वालीफायर के दौड़ से बाहर हो गयी. टीम को टूर्नामेंट के शुरुआती मैच में जापान से 0-2 से हार का सामना करना पड़ा था. उरोज ने 36वें और 47वें मिनट में मैदानी गोल किये. टीम के लिए अन्य गोल कॉन्सुएलो डी लास हेरास (13वें), कैमिला कैरम (38वें), एंटोनियो मोरालेस ऑर्चर्ड (44वें) और मारिया माल्डोनाडो (58वें) ने किये. चिली अपने अंतिम पूल मैच में मंगलवार को जापान से भिड़ेगी, जबकि चेक गणराज्य का मुकाबला दुनिया के पांचवें नंबर की टीम जर्मनी से होगा.

जापान ने जर्मनी को बराबरी पर रोका

जर्मनी और जापान के बीच मुकाबले में जापान ने जर्मनी को 1-1 की बराबरी पर रोक दिया. जर्मनी 15 पेनाल्टी कॉर्नर को गोल में तब्दील नही कर सकी. वहीं जापान को मात्र 1 पेनाल्टी कॉर्नर मिला जिस पर उसने गोल मारकर मुकाबले को बराबरी पर ला दिया. मुकाबले में पहला हॉफ 1-1 की बराबरी पर छूटा. पूरे मैच में जर्मनी हावी रही. लगातार पेनाल्टी कॉर्नर हासिल किया. हालांकि मौकों को वो गोल में नहीं बदल पाई. जर्मनी के लिए एकमात्र गोल 35वें मिनट में लीसा नोल्टे ने फील्ड गोल के रूप में किया. वहीं जापान के लिए मियू हसेगावा ने गोल किया. प्लेयर ऑफ द मैच जापान की गोलकीपर एकिओ तनका को दिया गया.

यूएसए ने इटली को 2-0 से हराया

एफआईएच महिला हॉकी ओलंपिक क्वालीफायर में यूएसए ने लगातार दूसरी जीत दर्ज की. पहले मुकाबले में भारत को हराने के बाद दूसरे मैच में इटली को 2-0 से हरा कर पूल बी में टॉप पर पहुंच गई. मुकाबले की शुरुआत से यूएसए की टीम हावी रही. मैच का पहला गोल 20 वें मिनट में आया. यूएसए की एश्ले सेस्सा ने इटली के डिफेंस को भेद कर शानदार फील्ड गोल किया. दूसरा गोल यूएसए की कप्तान एश्ले हॉफमैन ने किया. 48 वें मिनट में मिले पेनाल्टी कॉर्नर को उन्होंने गोल में तपदील किया. पूरे मैच में यूएसए को 8 और इटली को 3 पेनाल्टी कॉर्नर मिले

गिरिडीह में पशु लदे कंटेनर जब्त, दो तस्कर गिरफ्तार

संवाददाता। गिरिडीह

पशु तस्करी के खिलाफ गिरिडीह पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है. इसी क्रम में पुलिस ने शनिवार देर रात डुमरी थाना क्षेत्र से मवेशी लदे कंटेनर को को जब्त किया है. जब्त कंटेनर से करीब 45 मवेशी बरामद किये गये हैं. वहीं पुलिस ने मवेशी तस्करी के आरोप में दो लोगों को गिरफ्तार भी किया है. गौरतलब है कि गिरिडीह पुलिस ने बीते चार माह में 950 मवेशियों को तस्कर से मुक्त कराया है. एसपी दीपक कुमार शर्मा को गुप्त सूचना मिली थी कि कि डुमरी के रास्ते मवेशियों को धनबाद ले जाया जा रहा है. सूचना पर त्वरित कार्रवाई करते हुए सपी के निर्देश पर पुलिस टीम का गठन किया गया. गठित टीम ने डुमरी थाना क्षेत्र में पास वाहन चेकिंग अभियान चलाया. इस दौरान पुलिस ने एक ट्रक को रोका, तो ट्रक चालक भागने का प्रयास करने लगे. पुलिस ने ट्रक की तलाशी ली तो उसमें भारी संख्या में मवेशी लदे थे. जिन्हें वधशाला के लिए लेकर जाया जा रहा था.

गिरिडीह: 5 साइबर अपराधी गिरफ्तार

खास बातें

- 8 मोबाइल, 25 सिम कार्ड और 5 एटीएम आदि बरामद
- जिले में अब तक 166 साइबर अपराधी किये गये गिरफ्तार

संवाददाता। रांची/गिरिडीह

गिरिडीह पुलिस ने प्रतिबिंब पोर्टल की मदद से छह अपराधियों को गिरफ्तार किया है. इनके पास से आठ मोबाइल फोन, 25 सिम कार्ड, पांच एटीएम समेत कई अन्य सामान भी बरामद हुए हैं. एसपी दीपक कुमार शर्मा ने बताया कि अबतक कुल 166 साइबर अपराधियों की गिरफ्तारी हो चुकी है. जबकि 14 लाख 37 हजार 310 नगद बरामद किये जा चुके हैं. जानकारी के अनुसार, एसपी दीपक शर्मा को गुप्त सूचना मिली थी कि अहलियापुर थाना क्षेत्र में कुछ साइबर अपराधी फर्जी सिम का प्रयोग करके आम लोगों से ठगी कर रहे हैं.

बिजली विभाग का कर्मी या बैंक कर्मी बन करते थे ठगी

पकड़े गये साइबर अपराधियों ने पुलिस को बताया कि वो रैंडम नंबरों पर सीरियल कॉलिंग कर बिजली विभाग का फर्जी अधिकारी बनकर बकाया बिजली बिल भुगतान करने के लिए कहते हैं. अन्यथा बिजली का कनेक्शन काटने की बात कहकर डराते हैं. उसके बाद झांसे में लेकर रिमोर्ट एक्सेस ऐप लिंक भेजकर उसको इंस्टॉल करवाते हैं और साइबर ठगी की घटना को अंजाम देते हैं. साथ ही वो बैंक कर्मी बनकर भी लोगों को झांसे में लेते थे और ओटीपी और पासवर्ड प्राप्त कर ठगी करते थे.

इसके आधार पर पुलिस टीम ने कार्रवाई करते हुए पांच साइबर अपराधियों को धर दबोचा. गिरफ्तार अपराधियों में अब्दुल हलिम, मो. मिनहाज, पवन कुमार, सुजीत कुमार और प्रशांत मुरारी शामिल हैं.

एम्स में भर्ती नहीं हुए, तो तिहाड़ में रहेंगे संजीव सिंह

संवाददाता। धनबाद

- धनबाद पुलिस पूर्व विधायक को रिम्स से एम्स दिल्ली ले गयी

धनबाद के पूर्व डिप्टी मेयर नीरज सिंह की हत्या में चार्जशीटेड झरिया के पूर्व विधायक संजीव सिंह को धनबाद पुलिस रविवार को इलाज के लिए रिम्स रांची से लेकर एम्स दिल्ली के लिए रवाना हुई. दिल्ली एम्स में यदि पूर्व विधायक भर्ती नहीं हुए, तो उन्हें तिहाड़ जेल में रखा जाएगा. पिछली जुलाई में तबीयत बिगड़ने पर उन्हें रिम्स रांची भेजा गया था. रिम्स में उनकी हालत में सुधार न होने पर कोर्ट से एम्स ले जाने की अनुमति मांगी गई. अब रविवार को उन्हें रिम्स से एम्स ले जाया गया.

सुरक्षा का रखना है ख्याल : संजीव सिंह को एम्स ले जाने वाली टीम को 10 फरवरी तक स्वीकृति मिली है. इसके बाद भी यदि उन्हें एम्स में रखना पड़ा तो इसकी सूचना देनी होगी. इलाज की विवरणी फोन पर देने को कहा गया है. इलाज के कागजात ईमेल से एसएसपी धनबाद को भेजना है. इलाज के दौरान बंदी की सुरक्षा को लेकर दिल्ली के हौज खास थाना प्रभारी से समन्वय करने को कहा गया है.

इंस्पेक्टर समेत पुलिस के 17 जवानों की टीम गई साथ : संजीव सिंह को एम्स ले जाने के लिए धनबाद पुलिस की 17 सदस्यीय टीम रांची पहुंची थी. टीम में एक इंस्पेक्टर, दो जमादार और 14 आरक्षी शामिल हैं, जो संजीव सिंह की सुरक्षा की कमान संभालेंगे. इनके अलावा हौज खास थाना पुलिस से भी मदद ली जाएगी. टीम रविवार को ही रांची पहुंची और दे रात रांची से दिल्ली के लिए रवाना हो गई.

प्रसिद्ध नित्य काली मंदिर में चोरी, लोगों में आक्रोश

संवाददाता। पाकुड़

नित्य काली मंदिर में चोरी की घटना हुई है. यह घटना शनिवार की देर रात नगर थाना क्षेत्र के राजापाड़ा मोहल्ला में हुई. जहां नित्य काली मंदिर और जटाधारी मंदिर में चोरों ने मंदिर का ताला तोड़ कर प्रतिमा पर चढ़ाये गए जेवरात और दानपेटी चुरा ली. रविवार सुबह जैसे ही मंदिर में पुजारी सहित लोग पूजा करने पहुंचे तो ताला टूटा मिला और मां नित्य काली की प्रतिमा से जेवरात गायब थे. चोरों ने जटाधारी मंदिर से भी दानपेटी चोरी कर ली. पुजारी सहित लोगों ने इसकी सूचना नगर थाने को दी. सूचना मिलते ही पुलिस दलबल के साथ मंदिर पहुंची और जांच में जुट गयी. मंदिर में बीते वर्षों में चार बार चोरी होने, पुलिस द्वारा कोई सामान बरामद न कर पाने को लेकर लोगो में आक्रोश देखा गया. लोगों का कहना है कि पुलिस सुरक्षा के मामले में लापरवाह है.

आयोजन बी डिफरेंट मॉडलिंग ऑर्गेनाइजिंग का कार्यक्रम

कैलेंडर लॉन्च किया, जोड़ी नंबर 1 कॉन्टेस्ट आयोजित

संवाददाता। रांची

रांची के पुंदाग स्थित आईएसएम इंस्टीट्यूट में मकर संक्रांति के मौके पर बी डिफरेंट मॉडलिंग ऑर्गेनाइजिंग की तरफ से मॉडलिंग कंपटीशन का आयोजन किया गया, जिसमें कि 2024 का कैलेंडर लॉन्चिंग और जोड़ी नंबर वन कॉन्टेस्ट का आयोजन किया गया. इसमें सभी प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. इस मौके पर ऑर्गेनाइजर प्रियंका जायसवाल ने बताया कि कैलेंडर को दो सेट में बनाया गया है, जिसमें कि चार ब्रांड एंबेसडर रखा गया है. प्रज्ञा दीप मिसेज इंडिया जीत कर आयी है. वंदना इंडिया यूनिवर्स जीत कर आई

है. मेघा श्रीवास्तव ऑथर है. नेहा श्रीवास्तव एयरोनॉटिकल इंजीनियर है. ये सभी कैलेंडर के ब्रांड एंबेसडर हैं. वही जोड़ी नंबर वन में हस्बैंड वाइफ, मदर डॉटर, फ्रेंड्स ने पार्टिसिपेट किया. इससे पहले यह कार्यक्रम ऑनलाइन किया गया था. इस बार यह ऑफलाइन किया गया. संस्था द्वारा कैलेंडर हर साल लॉन्च किया जाता है. मौके पर आईएसएम पुंदाग के डायरेक्टर जमुना प्रसाद सिंह भी मौजूद रहे. उन्होंने बताया कि मॉडलिंग की दुनिया में अब यहां के बच्चे भी नाम रोशन कर रहे हैं. इसमें बढ़-चढ़ कर हिस्सा लेने से एक अलग करियर बना सकते हैं. बेहतर भविष्य को देखते हुए हर क्षेत्र में इसकी जरूरत पड़ती है और वहां पर इसे उपयोग किया जा सकता है. वहीं डॉली गुप्ता नाम की लड़की ने भी मॉडलिंग की, जो बोल नहीं सकती है, लेकिन बचपन से ही मॉडलिंग करने का शौक रखती थी. सभी प्रतिभागियों को सम्मानित किया गया और मोमेंटो के साथ-साथ सर्टिफिकेट दिया गया.

स्पंज आयरन कंपनियों को प्रदूषण कार्यालय ने भेजा नोटिस

पर्यावरणीय क्लीयरेंस के बिना नीलांचल कंपनी ने बढ़ाई शेड

संवाददाता। आदित्यपुर

लगा डेढ़ करोड़ जुर्माना

अब रेग्युलराइज कराने में भरने होंगे 15 करोड़

प्रदूषण नियंत्रण कार्यालय में योगदान देने के साथ ही क्षेत्रीय पदाधिकारी रामप्रवेश कुमार सिंह ने आदित्यपुर, घाटशिला और चांडिल क्षेत्र के उद्योगों को पर्यावरण

स्वच्छता बनाए रखने के लिए आगाह कर दिया है. उन्होंने कार्रवाई कांड्रा स्थित कंपनी नीलाचल आयरन के विरुद्ध की है. कंपनी ने पर्यावरणीय क्लियरेंस के बिना शेड का विस्तार कर लिया था. इसका खुलासा होने के बाद क्षेत्रीय पदाधिकारी ने एनजीटी की गाइड लाइन के अनुसार कार्रवाई करते हुए शेड बढ़ाने के एवज में डेढ़ करोड़ रुपए का जुर्माना लगाया है. उन्होंने बताया कि अब नीलाचल को इसे रेग्युलाइज कराने में कम से कम 15 करोड़ बतौर जुर्माना और भरने होंगे. उन्होंने कंपनियों के प्रदूषण स्तर का मूल्यांकन करके आदित्यपुर, घाटशिला और चांडिल के स्पंज आयरन कंपनियों को रेग्युलर पर्यावरण सुरक्षा उपकरण नहीं चलाने के लिए नोटिस जारी किया है. यदि इन कंपनियों ने पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए सुरक्षा उपकरणों का इस्तेमाल शुरू नहीं किया तो प्रदूषण नियंत्रण पर्षद इन कंपनियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई भी करेगा.

ब्रीफ खबरें

बड़कागांव की जनता के लिए तत्पर : योगेंद्र

केरेडारी। झारखंड सरकार के पूर्व कृषि मंत्री योगेंद्र साव ने केरेडारी क्षेत्र की जनता को नववर्ष की शुभकामनाएं दी. उन्होंने बड़कागांव विधनसभा क्षेत्र की जनता के नाम संदेश जारी कर कहा कि बड़कागांव और केरेडारी में कोल कंपनियां जनता की जमीन पर गिद्ध की दृष्टि बनाए हुए हैं. जनता के लिए विषम परिस्थिति बनी हुई है. ऐसे में वह और उनका परिवार 24 घंटे बड़कागांव विधनसभा क्षेत्र की जनता के लिए तत्पर है. उन्होंने कि कि बड़कागांव केरेडारी में खुल रही कोल कंपनियां और उनके एमडीओ कंपनियों की मनमानी के खिलाफ गोलबंद होकर आवाज उठाएं. कोल कंपनियां की मनमानी नहीं चलने दी जाएगी. उन्होंने कोल कंपनियों से जनता की जमीन का मुआवजा और पेंशन में वृद्धि करने की मांग की.

पूर्व विधायक के आवास पर दही-चूड़ा कार्यक्रम

बरकट्ठा। पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव के आवास पर रविवार को दही-चूड़ा भोज एवं संकल्प सभा का आयोजन आज किया. कार्यक्रम का उद्घाटन बतौर मुख्य अतिथि बरकट्ठा के पूर्व विधायक जानकी प्रसाद यादव ने फीता काट कर किया. इस अवसर पर बरकट्ठा, जयनगर, चलकुशा, चंदवारा, इचाक, टाटीझरिया और दारू प्रखंड से हजारों की संख्या में नेता, कार्यकर्ता एवं आम जन शामिल हुए. सभी लोगों को विधायक ने अपने हाथों से दही, चूड़ा, गुड़, तिलकुट और सब्जी परोस कर खिलाया. इस दौरान ग्रामीण इलाके में ठप पड़ी जलापूर्ति योजना के कार्य को पूर्ण कराने को लेकर सभी लोगों ने संकल्प लिया और आने वाले दिनों में चरणबद्ध आंदोलन करने की रूपरेखा तैयार की गई.

नाली निर्माण को लेकर विधायक को सौंपा ज्ञापन

जयनगर। प्रखंड की कटिया पंचायत के उप मुखिया नीलू कुमारी ने बरकट्ठा विधायक अमित कुमार यादव को जनहित में नाली निर्माण को लेकर ज्ञापन सौंपा. दिए ज्ञापन में बताया है कि कटिया पंचायत के वार्ड नंबर 10 के बरकट्ठा-तेतरौन मुख्य मार्ग के दाईं ओर नाली नहीं होने की वजह से कुछ लोगों के घर का गंदा पानी सड़क पर बहता है. इससे आमजनों को आवागमन में काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है. सड़क पर पानी बहने को लेकर हमेशा लोग आपस में उलझ रहे हैं. उन्होंने जनहित को देखते हुए राजेश विश्वकर्मा के घर से रेलवे हाता तक तत्काल विधायद मद से नाली निर्माण की स्वीकृति देने की मांग की.

पार्षद पिंकी जैन ने चूड़ा तिलकुट व कंबल बांटे

कोडरमा। मकर संक्रांति महापर्व पर झुमरी तिलैया पार्षद पिंकी जैन ने अपने वार्ड में जरूरतमंद एवं निःशक्त परिवारों के घर पर जाकर कंबल, चूड़ा, गुड़ और तिलकुट का वितरण किया. इस दौरान उन्होंने कहा कि मानवता की सेवा ही सच्ची सेवा है. समाज के बीच सभी के चेहरे पर खुशी हो, आपसी भाईचारा बना रहे, सभी को इस दिशा में प्रयत्न करना चाहिए. उन्होंने यह भी कहा कि एक जनप्रतिनिधि होने के कारण मेरी हमेशा कोशिश रहती है कि जहां तक संभव हो, जरूरतमंदों के प्रति अपने कर्तव्य का निर्वहन कर सकूं. इस मौके पर दर्जनों लोग मौजूद थे.

गरीब व जरूरतमंदों के बीच कंबल का वितरण

कोडरमा। मकर संक्रांति के उपलक्ष्य में जिला कांग्रेस कमेटी के जिलाध्यक्ष भागीरथ पासवान के नेतृत्व में जिला अंतर्गत छोटकी बागी दलित बस्ती एवं जयनगर प्रखंड में सैकड़ों गरीब एवं जरूरतमंदों के बीच कंबल का वितरण किया गया. इस दौरान मुख्य रूप से उपस्थित प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश सचिव नारायण बरनवाल, जिला वरीय उपाध्यक्ष राम लखन पासवान, जिला उपाध्यक्ष उपेंद्र सिंह, नगर अध्यक्ष राजू सिंह, महिला नेत्री आशा देवी, बबलू तिवारी, जयनगर प्रखंड अध्यक्ष मिसबाह उद्दीन, अनुसूचित जाति प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष दशरथ पासवान, पप्पू सिंह आदि ने गरीब व असहायों को कंबल बांटे.

राष्ट्रीय व राज्य स्तर पर आठवां व जिला स्तर पर पहला स्थान मिलने पर विद्यालय परिवार में हर्ष

सेक्रेड हार्ट स्कूल को मिला उभरते विद्यालय का पुरस्कार

संवाददाता। कोडरमा

सेक्रेड हार्ट स्कूल, झुमरी तिलैया को वर्ष के उभरते हुए विद्यालय का पुरस्कार प्राप्त हुआ है. इस विद्यालय को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर आठवां स्थान तथा जिला स्तर पर पहला स्थान मिला है, जो अब तक की सबसे बड़ी उपलब्धि है. इस बारे में विद्यालय के निदेशक प्रमोद कुमार और प्राचार्य प्रमोद शर्मा ने बताया कि दिल्ली में द लीला एवीयंश कन्वेंशन न्यू दिल्ली में आयोजित जी-20 शिक्षा शिखर सम्मेलन 2024 में विद्यालय को यह पुरस्कार मिला है.

दरअसल, भारत इंस्टीट्यूशन एलिट कॉफी टेबल बुक में इस विद्यालय का आर्टिकल प्रकाशित हुआ था. इसी किताब का लोकार्पण दिल्ली में हो रहा था, जहां पर प्राचार्य प्रमोद कुमार शर्मा को पगड़ी पहना कर सम्मानित किया गया और मोमेंटो व सर्टिफिकेट दिया गया. इस अवसर पर अतिथि के रूप में छत्तीसगढ़ के पूर्व राज्यपाल शेखर दत्त के अलावा इग्नू के प्रो-वीसी प्रो. एमएम पंत, भारत सरकार के स्कूल एंड मास एजुकेशन फॉर्मर सेक्रेट्री अनिल स्वरूप, एनआईओएस के पूर्व चेयरमैन प्रो. सीबी शर्मा, सीबीएसई के पूर्व अध्यक्ष विनीत जोशी, सीबीएसई के डायरेक्टर एकेडमिक्स जोसेफ इमानुएल, सिटी इंटरनेशनल स्कूल लखनऊ की संस्थापिका सुनीता गांधी मौजूद थीं.

बता दें कि विद्यालय पिछले कई वर्षों से सफलता का कीर्तिमान स्थापित कर रहा है. प्राचार्य प्रमोद कुमार शर्मा ने कहा कि यह विद्यालय के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि है और पूरे विद्यालय परिवार को गौरवान्वित करने वाला क्षण है. जिला भर में नंबर वन बनना अपने आप में बहुत बड़ी बात है. उन्होंने कहा कि इस स्थान को बनाए रखने का प्रयास जारी रहेगा.

विद्यालय की इस उपलब्धि पर पूर्व प्राचार्य नवीन कुमार, एकेडमिक को-ऑर्डिनेटर प्रवीण कुमार, दीपक सर्राफ, सुभय कुमार, आशुतोष गौतम, संजय तिवारी, जेपी सिंह, विक्रम कुमार, शंकर कुमार, फैयाज कैशर, अभिलाषा सिंह, पायल सिंह, विशाल आनंद, पवन ठाकुर, सतीश कुमार, विक्की कुमार, हंसपाल कुमार, राकेश पांडेय, कुंदन राणा, अनमोल रतन, प्रियंका सिंह, अलका सिंह, प्रियंका गुप्ता, लता सिन्हा, रजनीबाला, सीमा जैन, सपना शर्मा समेत अन्य शिक्षकों और कर्मियों ने हर्ष जताया है.

गौरवान्वित क्षण

- दिल्ली में जी-20 शिक्षा शिखर सम्मेलन में मिला पुरस्कार
- निदेशक व प्राचार्य ने विद्यालय की बड़ी उपलब्धि बतायी

आओ जानें सामान्य ज्ञान

- सांडर्स की हत्या किसने की थी – **भगत सिंह**
- 1952 में विशाल कोहरा किस शहर में हुआ था – **लंदन**
- दिल्ली स्थित लाल बहादुर शास्त्री की समाधि का नाम – **विजय घाट**
- संयुक्त राष्ट्र महासभा की पहली महिला अध्यक्ष – **विजय लक्ष्मी पंडित**
- भारत के किस राज्य का राजभाषा अंग्रेजी है – **नागालैंड**
- मणिपुर में कितने लोकसभा सीट हैं – **2**
- देश में कहां है वेंबनाड झील – **केरल**
- नंद वंश के संस्थापक कौन थे – **महापदम नंद**
- आईबीएम का फुल फॉर्म क्या है – **इंटरनेशनल बिजनेस मशीन**
- किस शहर को ईश्वर का निवास स्थान कहा जाता है – **प्रयाग**

---

15 दिवसीय सूर्यकुंड मेले का आगाज, श्रद्धालुओं ने किया मकर स्नान

सूर्यकुंड में उमड़ा जनसैलाब

संवाददाता। बरकट्ठा

प्रखंड क्षेत्र की बेलकप्पी पंचायत स्थित ऐतिहासिक धार्मिक पर्यटन स्थल सूर्यकुंड धाम में मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर लगने वाले 15 दिवसीय सूर्यकुंड मेले का रविवार को आगाज हो गया. मेला का विधिवत उद्घाटन मुख्य अतिथि मद्य निषेध मंत्री झारखंड सरकार बेबी देवी, कोडरमा सांसद सह केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी, स्थानीय विधायक अमित कुमार यादव ने संयुक्त रूप से फीता काट कर व नारियल फोड़ कर किया.

बता दें कि झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश सहित देश के अन्य हिस्सों से दुकानदार व खेल तमाशे वाले मकर संक्रांति के अवसर पर लगने वाले सूर्यकुंड मेला में व्यवसाय करने आते हैं. मेला परिसर में दर्जनों झूलों के साथ मीना बाजार व घरेलू उपकरण की दुकानें आकर्षक रूप से सज गई हैं. उद्घाटन समारोह के अवसर पर हजारीबाग जिप अध्यक्ष उमेश प्रसाद मेहता, जिप सदस्य प्रेरणा प्रिया, प्रमुख रेणु देवी, प्रखंड विकास पदाधिकारी रेशमा डुंगडुंग, अंचलाधिकारी कांत लाल मांझी, गोरहर थाना प्रभारी शशिभूषण कुमार, बरकट्ठा थाना प्रभारी गौतम कुमार, बीस सूत्री प्रखंड अध्यक्ष प्रदीप कुमार प्रसाद, उपप्रमुख सूरजी देवी, बेलकप्पी मुखिया ललिता देवी, शिलाडीह मुखिया निजाम अंसारी, सांसद प्रतिनिधि रघुवीर प्रसाद महतो, भाजपा मंडल अध्यक्ष टुकलाल नायक, झामुमो नेता कमलनयन सिंह, पंचायत समिति सदस्य विकास कुमार पांडेय, चंद्रकांत पांडेय, श्यामाकांत पांडेय, गौतम नारायण सिंह, धीरेंद्र पांडेय,आदर्श युवा संगठन के केंद्रीय अध्यक्ष गौतम कुमार सहित सैकड़ों लोग मौजूद थे.

ऐतिहासिक मेला

- मंत्री, सांसद व विधायक ने किया मेले का उद्घाटन
- मेला परिसर में दर्जनों झूलों के साथ सज गया बाजार
- बच्चों ने लिया मेले का आनंद बर्तन दुकानों पर रही भीड़

दही-चूड़ा भोज आपसी सौहार्द्र का प्रतीक : नीरा यादव

- कोडरमा विधायक के दही चूड़ा कार्यक्रम में हजारों लोग शामिल
- सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान महिलाओं संग झूमीं नीरा यादव

कोडरमा। ध्वजाधारी धाम में कोडरमा विधायक सह पूर्व शिक्षा मंत्री डॉ. नीरा यादव द्वारा आयोजित दही-चूड़ा कार्यक्रम सह मिलन समारोह धूम धाम से मनाया गया. कार्यक्रम की शुरूआत नीरा यादव ने आश्रम अवस्थित मंदिर में पूजा अर्चना हुई. उसके बाद विधायक ने अपने हाथों से उपस्थित लोगों को दही, चूड़ा, तिलकुट, गुड़ और लजीज सब्जी को परोसा.

उन्होंने कहा इस तरह के कार्यक्रम से आपसी सौहार्द्र कायम होता है. इसे राजनीतिक कार्यक्रम के तौर पर कतई नहीं देखना चाहिए. कार्यक्रम के दौरान स्वर संगम म्यूजिकल ग्रुप के द्वारा बहुत ही सुंदर भक्तिमय सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए गए. वहां मौजूद लोगों ने गीत-संगीत का भरपूर लुत्फ उठाया. धीरज पांडे, दीपक कुमार, रंधीर मालाकार, नवीन पांड्या, श्वेता सिंह, राजा चौरसिया, काली महिला मंडल के द्वारा सुंदर गीत प्रस्तुत किया गया. वहीं, सुधीर पांडेय ने मंच संचालन किया. कार्यक्रम के दौरान लोग काफी झूमते नजर आए. स्वयं नीरा यादव भी महिलाओं के साथ झूमीं. कार्यक्रम के दौरान विधि व्यवस्था के मद्देनजर कोडरमा थाना प्रभारी द्वारिका राम भी सक्रिय दिखे. अंत में विधायक ने सभी को नव वर्ष की शुभकामना के साथ नए कैलेंडर बांटे.

कार्यक्रम में पूर्व सांसद सह हुडको निदेशक रवींद्र कुमार राय, पूर्व जिला परिषद अध्यक्ष महेश राय, भाजपा जिला प्रभारी टुन्नु गोप, ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष अमरदीप यादव, जिला अध्यक्ष नितेश चंद्रवंशी, अनूप जोशी, राजकुमार यादव, देवेंद्र कुमार, वीरेंद्र सिंह, प्रकाश राम, रामचंद्र सिंह, रवि मोदी, डॉ वीरेंद्र कुमार, डॉ पी. कुमार, डॉ रंजीत कुमार, डॉ मनोज कुमार, डॉ नरेश पंडित, व्यवसायी सुरेश कुमार झांझरी, बिरेंद्र यादव, जिप सदस्य नीतू कुमारी, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष सूर्य प्रताप मेहता सहित काफी संख्या में महिलाएं उपस्थित थीं.

फाउंडेशन ने असहायों के बीच मनाई संक्रांति

कोडरमा। सामाजिक संस्था केएसएच यूथ फाउंडेशन की ओर से गरीब, असहायों ओर मरीजों के बीच मकर संक्रांति का त्योहार मनाया गया. इस क्रम में होली फैमिली स्थित जीवोद्या में रह रहे मानसिक रूप से विक्षिप्त मरीज एवं बच्चों के अलावा सदर अस्पताल, ध्वजाधारी पहाड़ के समीप फुलवरिया बिरहोर बस्ती एवं झुमरी तिलैया स्थित वृद्धाश्रम में रह रहे लोगों के बीच चूड़ा, दही, गुड़, तिलकुट, बिस्कुट एवं नए कपड़े का वितरण किया गया. मौके पर संस्था के निदेशक विशाल सिंह, रोहित बरनवाल,अध्यक्ष तौफीक हुसैन, सदस्य पीयूष कुमार पारस, यतींद्र शर्मा, रंजीत कुमार, अरुण कुमार, धर्मेंद्र कुमार, विकास कुमार, आदर्श कुमार, आकाश कुमार, रिक्की कुमार, गोपाल समेत अन्य सदस्य थे.

यूथ विंग ने गोशाला में मनायी मकर संक्रांति

हजारीबाग। शहर से करीब सात किलोमीटर दूर स्थित हजारीबाग गोशाला परिसर में वहां के कर्मचारियों के साथ हजारीबाग यूथ विंग के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने मकर संक्रांति का पर्व मनाया. इससे पूर्व सभी लोगों ने गो माता की सेवा कर गुड़-चोकर खिलाया. तत्पश्चात, गोशाला के 45 कर्मचारियों के बीच चूड़ा, गुड़, तिलकुट सहित अन्य सामान का वितरण किया गया. मौके पर संरक्षक चंद्रप्रकाश जैन ने कहा कि गोशाला में इनकी सेवा एक अतुलनीय है. जिस तरह गौ माता यह लोग सेवा करते है हमें भी इनका उतना ही ध्यान रखना चाहिए. मौके पर उपाध्यक्ष विकास केसरी, प्रमोद खंडेलवाल, कोषाध्यक्ष रितेश खंडेलवाल, विकास तिवारी, उदित तिवारी, सत्येंद्र सिंह, डॉ. वी वेंकटेश, वसंता लक्ष्मी सहित कई लोग मौजूद थे.

इंडिया के चूड़ा-दही कार्यक्रम में बोले नेता

धर्म के नाम पर वोट लेने की राजनीति कर रही है भाजपा

संवाददाता। जयनगर

प्रखंड मुख्यालय मैदान में इंडिया गठबंधन का कार्यकर्ता सम्मेलन सह चूड़ा-दही भोज का अयोजन किया गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता झामुमो प्रखंड अध्यक्ष अशोक सिंह और संचालन माले प्रखंड सचिव अशोक यादव एवं राजद नेता बलराम यादव ने संयुक्त रूप से किया. सम्मेलन को भाकपा, सीपीएम, माले झामुमो, राजद, कांग्रेस, आम आदमी पार्टी से वक्ताओं ने संबोधित किया.

सभी ने कहा कि जब से केंद्र में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में सरकार बनी है, लोकतंत्र और संविधान को खत्म करने की साजिश की जा रही है. साथ ही श्रम कानून को कमजोर कर तीन कृषि काला कानून जैसे अनेकों काला कानून मोदी सरकार ने बनाने का काम किया है. हालांकि, किसानों के आंदोलन के बाद तीन काला कानून को वापस लेना पड़ा. नेताओं ने आगे कहा कि संविधान और लोकतंत्र की धज्जियां उड़ाते हुए केंद्र की मोदी सरकार ने सांसदों को निलंबित कर लोकतंत्र पर हमला किया है. झूठ बोलकर सत्ता में आई मोदी सरकार ने महंगाई, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार के नाम पर कॉरपोरेट वर्ग के लिए काम करना शुरू कर दिया. कहा कि धर्म के नाम पर लोगों को बरगला कर वोट लेने की राजनीति की जा रही है. देश की जनता सब जान चुकी है ओर आने वाला लोकसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से बेदखल कर देगी. भाजपा हटाओ लोकतंत्र बचाओ मोदी हटाओ देश बचाओ के नारे के साथ सम्मेलन का समापन किया गया.

सम्मेलन को माले नेता मो. इब्राहिम, सीपीआई नेता सह जिला परिषद सदस्य महादेव राम, जिला सचिव प्रकाश रजक, सीपीआई प्रखंड सचिव अर्जुन यादव, माले राज्य कमेटी सदस्य विजय पासवान, जिला सचिव राजेंद्र मेहता, राजद जिला अध्यक्ष सह जिला परिषद अध्यक्ष रामधन यादव, झामुमो जिला सचिव श्याम देव यादव, 20 सूत्री अध्यक्ष इस्लाम अंसारी, गांडेय के पूर्व विधायक जयप्रकाश वर्मा, राजद प्रदेश उपाध्यक्ष राजकुमार यादव, प्रखंड अध्यक्ष तसवर खान आदि ने भी संबोधित किया.

साधा निशाना

- लोकतंत्र और संविधान को खत्म करने की हो रही साजिश
- गठबंधन नेताओं ने दिया मोदी हटाओ देश बचाओ का नारा

फासीवादी ताकतों को उखाड़ फेंके

संवाददाता। डोमचांच

भाकपा माले प्रखंड कमेटी की बैठक प्रखंड सचिव कामरेड विनोद पांडे की अध्यक्षता में हुई. इस दौरान मुख्य रूप से जिला सचिव कॉमरेड राजेंद्र मेहता व जिला कमेटी सदस्य कॉमरेड भागीरथ सिंह घटवार व प्रखंड कमेटी के तमाम सदस्य उपस्थित थे. कॉमरेड विनोद पांडे ने कहा कि पार्टी सदस्यता का रेनुवल जनवरी माह के अंदर पूरा कर लेना है और हर गांव में बूथ कमेटी को मजबूत करना है.

उन्होंने बताया कि 16 जनवरी को शहीद साथी कॉमरेड महेंद्र सिंह का 19वां शहादत डोमचांच में कॉमरेड विकास राणा के घर पर मनाया जाएगा. वहीं भागीरथ सिंह घटवार ने कहा कि भाकपा माले का रास्ता कॉमरेड महेंद्र सिंह का रास्ता है. उनकी आकांक्षा थी कि कोडरमा लोकसभा क्षेत्र में भाकपा माले के पताका की जीत हो. इसी सपना को पूरा करने को लेकर माले पूरे प्रदेश में कामरेड महेंद्र सिंह की याद में संकल्प सभा करेगा. भागीरथ सिंह ने यह भी कहा फासीवादी ताकतों को 2024 में करारी शिकस्त देने के लिए मरकच्चो मैदान में 22 जनवरी को हजारों हजार लोगों को इकट्ठा कर मुट्ठी तानकर संकल्प लें और तानाशाही मोदी सरकार को हम सभी परास्त करें. साथ ही कॉ. रतन वर्णवाल, कॉ. अशोक यादव और कॉ. महेश सिंह की शहादत को जाया न जानें दें.

माले रणनीति

- भाकपा माले ने बूथ कमेटी को मजबूत करने पर दिया जोर
- महेंद्र सिंह के शहादत दिवस पर 16 को जनसंकल्प सभा

मारवाड़ी युवा मंच ने मनाया पतंग उत्सव

हजारीबाग। मारवाड़ी युवा मंच ने रविवार को मकर संक्रांति के अवसर पर मुनका बगीचा के परिसर में पतंग उत्सव का आयोजन किया गया. इसमें 100 से भी अधिक युवक-युवती शामिल हुए. बेहतर प्रदर्शन करने वाले लोगों को मारवाड़ी युवा मंच के द्वारा सम्मानित किया गया. इनमें नन्हा पतंगबाज ईरा अग्रवाल, युवा पतंगबाज अर्पित अग्रवाल, कन्नी बाज नमन चौधरी, खिलाड़ी पतंग बाज तेजल खंडेलवाल के अलावा लकी ड्रॉ के जरिए आराध्या अग्रवाल,अदविव सुरेखा,आदित्य बगरिया,गंगा खंडेलवाल, यश जैन, सभ्य अग्रवाल, आयुष अग्रवाल को पुरस्कृत किया गया. मौके पर अध्यक्ष सीए विनीत अग्रवाल ने कहा कि बच्चों को शिक्षा के साथ अन्य चीजों में भी आगे बढ़ाना चाहिए.

इंद्रपुरी साईं मंदिर में भंडारा आज

संवाददाता। हजारीबाग

साईं मंदिर में मकर संक्रांति के शुभ अवसर पर सोमवार को साईं भंडारा का आयोजन किया जा रहा है. साईं परिवार हजारीबाग के तत्वावधान में अहले सुबह 5 बजे साईं मंदिर में काकड़ आरती और बाबा के भव्य अभिषेक के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ होगा. वहीं, शहर के इंद्रपुरी चौक स्थित साईं मंदिर परिसर में विशाल भंडारा का आयोजन किया जाएगा.

भंडारा में चूड़ा, तिलकुट, गुड़, दही के साथ दोपहर में हलुवा-खिचड़ी, चोखा और चटनी की व्यवस्था रहेगी. इसी दौरान आर्ष कन्या गुरुकुल की विदुषियों की विशेष उपस्थिति रहेगी. इन सभी के बीच साईं बाबा के प्रसाद का वितरण भी किया जाएगा. बता दें कि साईं परिवार, हजारीबाग समूह समाजिक सरोकार से जुड़ कर सेवा कार्यों में अग्रणी भूमिका निभाता है. यह समूह सामाजिक एकता के साथ सामाजिक समरसता को बरकरार रखना हेतु कार्य करता है. कार्यक्रम को सफल बनाने में मुख्य रूप से संयोजक सुनील अग्रवाल, अध्यक्ष मनोज कुमार सिन्हा, सचिव संजय कुमार, कोषाध्यक्ष सुनील गुप्ता, सुशील जायसवाल, राकेश सिन्हा, मनीष चौरसिया, प्रदीप मालाकार, डॉ. अमरेंद्र सिंह, बल्ली गुप्ता सहित साईं परिवार के सदस्य जुटे हुए हैं.

धार्मिक अनुष्ठान

- मकर संक्रांति के अवसर पर साईं परिवार की ओर से आयोजन
- हलुवा खिचड़ी के साथ बाबा को लगेगा चूड़ा-तिलकुट का भोग

अखिल भारत विवेकानंद युवा महामंडल ने मनाई विवेकानंद जयंती, स्कूली बच्चों ने निकाली रैली

आधुनिक भारत के शिल्पकार थे विवेकानंद : धर्मेंद्र

संवाददाता। कोडरमा

अखिल भारत विवेकानंद युवा महामंडल की झुमरी तिलैया शाखा ने रविवार को स्वामी विवेकानंद की जयंती मनाई. कार्यक्रम की शुरुआत महाराणा प्रताप चौक स्थित विवेकानंद विद्यालय से बच्चों की रैली के साथ हुई. झंडा चौक पहुंच कर रैली जनसभा में तब्दील हो गई. महामंडल के किशोर बच्चों की विवेक वाहिनी यूनिट सुंदर यूनिफॉर्म में स्कार्फ और कैप के साथ ड्रम बजाते हुए चल रही थी.

आगे-आगे सुसज्जित गाड़ी में स्वामी विवेकानंद के कट आउट के साथ सुंदर झांकी चल रही थी. पीछे-पीछे विभिन्न स्कूलों विवेकानंद विद्यालय, मोहन आधारशिला ज्ञानपीठ, बीआर इंटरनेशनल स्कूल एवं विवेकानंद आइडियल पब्लिक स्कूल के बच्चे चल रहे थे. सभी बच्चे अपने हाथों में स्वामी विवकानंद के संदेशों की तख्ती लिए रैली की शोभा बढ़ा रहे थे. झंडा चौक पर जनसभा की शुरुआत संघ मंत्र, स्वदेश मंत्र और मंगलदीप प्रज्ज्वलन के साथ हुई. आगंतुक अतिथियों ने स्वामी विवेकानंद के आदमकद चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की. सचिव अजय पांडे ने स्वागत भाषण करते हुए कहा कि 12 जनवरी जो स्वामीजी की जयंती है और वर्ष 1984 में भारत सरकार ने राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में घोषित किया था.

फुलवरिया से आए सुमन कुमार एवं आर्यन यादव, स्कूली छात्रा जिया पांडे एवं अनन्या सिंह ने स्वामी जी की जीवनी पर भाषण दिए. धर्मेंद्र सिंह ने अपने संबोधन में स्वामीजी को आधुनिक भारत का शिल्पकार बताया. वहीं कृषि वैज्ञानिक दीपांकर माइती एवं रामकृष्ण मिशन, रांची के ब्रह्मचारी राजू महाराज के अलावा अर्पणा गुप्ता एवं गजानन पाठक ने भी सभा को संबोधित किया. कार्यक्रम को सफल बनाने में सुदीप विश्वास, ब्रह्मदेव यादव, शशि कुमार, बलराम मिश्रा, सुनील कुमार, सुबोध पंडित, राहुल कुमार, प्रदीप गुरु, अशोक सिन्हा एवं मुकुंद का योगदान रहा.

श्रद्धासुमन अर्पित

- स्वामीजी के संदेशों की तख्ती के साथ चल रहे थे बच्चे
- झंडा चौक पहुंच कर जनसभा में तब्दील हो गई रैली

स्वामीजी से जीवन से लें प्रेरणा : भावेशानंद

मुख्य अतिथि के रूप में रामकृष्ण मिशन मोराबादी रांची से सचिव भावेशानंदजी महाराज आए हुए थे. उन्होंने अपने संबोधन में स्वामी विवेकानंद की लोकप्रिय सिंह शावक की कहानी सुनाते हुए बच्चों को निर्भीक और निडर होने के लिए प्रेरित किया. उन्होंने यह भी कहा कि बच्चे नियमित रूप से स्वामीजी से प्रेरणा लें और देश के जिम्मेदार नागरिक बने. मंच संचालन क्लोरोफिल के निदेशक अजय अग्रवाल एवं धन्यवाद ज्ञापन महामंडल के सदस्य मनोज कुमार सिंह ने किया.

चरही घाटी में एनएच-33 पर दिखा जंगली हाथियों का झुंड

संवाददाता। हजारीबाग

जंगली हाथी इन दिनों इलाके में सक्रिय है. जिले के चरही घाटी में दो दर्जन से अधिक जंगली हाथियों के झुंड को एनएच-33 पर देखा गया. अहले सुबह करीब 3 बजे हाथियों का झुंड पुरनापानी जंगल की एक छोर से दूसरी छोर की ओर जा रहा था. हाथियों के झुंड ने एनएच-33 पार करने में काफी समय लिया. इस दौरान एनएच पर करीब 40 मिनट तक वाहनों का आवागमन ठप रहा.

वहीं, सुबह लगभग 6:30 बजे झुंड से बचे 6 जंगली हाथियों ने एनएच-33 पार किया. इस दौरान करीब 30 मिनट तक वाहनों का आवागमन बाधित रहा. जंगली हाथियों के झुंड में तीन-चार बच्चे भी शामिल थे. रविवार को दिन के लगभग 11 बजे तक दो दर्जन जंगली हाथियों का झुंड चरही घाटी कसियाडीह के समीप जंगल में जमा रहा. इससे पहले हाथियों ने शनिवार रात चनारो पंचायत के डूमर बेड़ा गांव में किसानों की फसल को रौंद डाला.

दहशत व्याप्त

- सड़क पार करने के दौरान ठप रहा वाहनों का आवागमन
- हाथियों का झुंड कसियाडीह के समीप जंगल में जमा रहा

रिम्स ओपीडी

सुबह 9 से दोपहर 1 और शाम 3 से 5 बजे तक

विभाग — डॉक्टर का नाम

- मेडिसिनः डॉ विद्यापति
- सर्जरीः डॉ शीतल मलुआ
- कार्डियोलॉजीः डॉ प्रकाश कुमार
- ऑर्थोपेडिकः डॉ विनय प्रभात
- न्यूरो सर्जरीः डॉ सीबी सहाय
- टीबी एवं चेस्टः डॉ ब्रजेश मिश्रा
- ऑब्स गायनीः डॉ एसबी सिंह
- सीटीवीएसः डॉ अंशुल कुमार
- न्यूरोलीजीः डॉ सुरेंद्र कुमार
- ईएनटीः डॉ आरके चौधरी
- सायकेट्रीः डॉ अजय बाखला
- प्लास्टिक सर्जरीः डॉ विक्रांत रंजन
- पीएमआरः डॉ अमित चैतन्य
- रेडिशन ऑन्कोलॉजीः डॉ अनूप कुमार
- सर्जिकल ऑन्कोलॉजीः डॉ अजीत कुमार कुशवाहा
- यूरोलॉजीः डॉ अरशद जमाल व डॉ राणा प्रताप सिंह

सदर अस्पताल हजारीबाग

विभाग — डॉक्टर का नाम

- मेडिसिन : डॉ. एसके सिन्हा
- शिशु रोग विभाग : डॉ. विशाल सिन्हा
- इएनटी : डॉ. राखी कुमारी

ट्रामा सेंटर : सुबह 8 से अपराह्न 2 बजे तक

- सर्जन : डॉ. विवेक कुमार
- मेडिसिन : डॉ. रेफॉर्ड

अपराह्न 2 बजे से रात 10 बजे तक

- हड्डी रोग : डॉ. मयंक
- मेडिसिन : डॉ. आरके सिंह

रात 10 बजे से सुबह 8 बजे तक

- ऑर्थो : डॉ. बालकृष्ण
- मेडिसिन : डॉ. अहमद

हजारीबाग का मौसम

- न्यूनतम तापमान : 21 डिग्री सेल्सियस
- अधिकतम तापमान : 8 डिग्री सेल्सियस
- बादल की स्थिति : आसमान साफ रहेगा
- हवा की रफ्तार : 8 किमी प्रति घंटे

ब्रीफ खबरें

बंदूक की नोंक पर ट्रैक्टर को लूटा

केरेडारी। केरेडारी थाना क्षेत्र अंतर्गत गरीकलां गांव निवासी जगेश्वर महतो के ट्रैक्टर को चोरों ने लूट लिया. मिली जानकारी अनुसार पिंटू नामक चालक रविवार तड़के करीब तीन बजे ट्रैक्टर (जेएच 02 बीबी 4932) लेकर गरीकलां गांव से हेवइ गांव जा रहा था. इसी क्रम में पतरा कलां गांव से ठीक पहले पेट्रोल पंप के पास अपराधियों ने बंदूक की नोंक पर चालक को ट्रैक्टर से उतार दिया और उसका मोबाइल छीनकर हाथ-पैर बांध गड्ढे में लुढ़का दिया. इसके बाद ट्रक्टर लेकर फरार हो गए. सुबह होने पर लोगों ने ट्रैक्टर चालक को देखा, तो उसे गड्ढे से निकाला.

पंचवहिनी मैदान का होगा सुंदरीकरण : अंबा प्रसाद

बड़कागांव। मकर संक्रांति के अवसर पर कांडतरी पंचायत के सोनपुरा में तीन दिवसीय मेले का विधायक अंबा प्रसाद ने उद्घाटन किया. अपने संबोधन में विधायक ने कहा कि बड़कागांव विधानसभा के हर एक कोने का विकास के लिए सदैव तत्पर हूं. उन्होंने पंचवहिनी मंदिर के सामने स्थित मैदान का सुंदरीकरण के लिए विधायक मद से दो लाख की राशि का अनुशंसा पत्र पूजा समिति को सौंपा. मौके पर संरक्षक सह मुखिया पारस प्रसाद, पंसस रंजीत चौबे, संयोजक सह कांग्रेस प्रखंड अध्यक्ष विशेश्वर नाथ चौबे, युवा प्रखंड अध्यक्ष आनंद मेहता, लालदेव महतो, प्रकाश कुमार सहित कई लोग थे.

भाजमो के जिला अध्यक्ष ने पेयजल विभाग पर लगाया कार्य में अनियमितता बरतने का आरोप

नल-जल योजना में बेहतर काम करे विभाग : अभिषेक

संवाददाता। हजारीबाग

जिले में हो रहे नल-जल योजना का कार्य देखकर भारतीय जनतंत्र मोर्चा के जिला अध्यक्ष अभिषेक पांडे रविवार को संवेदक पर भड़क गए. उन्होंने पेयजल विभाग पर कई गंभीर आरोप लगाते हुए कहा कि शौचालय के जैसा नहीं, बल्कि विभाग को बेहतर काम करना होगा. उन्होंने कहा कि पिछले दो वर्षों से ग्रामीण इलाकों में पेयजल विभाग काम कर रही है, लेकिन संवेदक केवल खानापूर्ति कर रहे हैं.

वहीं, विभागीय अधिकारी मौन धारण कर रखे हैं. उन्होंने यह भी कहा कि नल-जल पर होने वाला खर्च, सरकार का नहीं, बल्कि आम जनता का पैसा है. इस पैसे का सही उपयोग हो. आगे कहा कि इचाक प्रखंड के कई गांवों में नल-जल योजना पर शिकायत आ रही थी. इसे लेकर काम का निरीक्षण किया, जिसमें कई गड़बड़ियां भी पाई गईं. कहीं टंकी फटा हुआ है, तो कहीं पानी टपकता हुआ मिला. उन्होंने कहा कि अगर ग्रामीण क्षेत्रों में नल-जल योजना का कार्य सही तरीके से नहीं किया गया, तो भारतीय जनतंत्र मोर्चा मजबूर होकर आंदोलन के लिए बाध्य होगी.

अभिषेक पांडे ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर बताया कि हजारीबाग पेयजल एवं स्वच्छता अंचल के कलस्टर में घोर अनियमितता बरती गई है. अभी तक कोई भी कलस्टर सही तरीके से काम नहीं कर रहा है. ज्यादा कलस्टर ढांचा खड़ा कर के छोड़ दिए गए हैं. इस संबंध में कार्यपालक अभियंता से पूछने पर उनका जवाब मिलता है कि धीरे-धीरे कार्य को पूरा किया जा रहा है. वहीं, पूर्व के कार्यपालक अभियंता से भी पत्राचार कर पूछा गया था कि अभी तक कितने कलस्टर चालू हैं और कितने बंद हैं, लेकिन अभी तक विभाग रिपोर्ट नहीं दे पाया है.

जनतंत्र मोर्चा के जिलाध्यक्ष अभिषेक पांडेय और फटा हुआ पानी का पाइप.

मिलीं गड़बड़ियां

- संवेदक कर रहे खानापूर्ति विभागीय अधिकारी हैं मौन
- सही तरीके से कार्य नहीं होने पर आंदोलन की दी चेतावनी

बार-बार मांगने पर भी नहीं दे रहे जांच रिपोर्ट

इस संबंध में अधीक्षण अभियंता पेयजल एवं स्वच्छता अंचल हजारीबाग से कलस्टर की जांच रिपोर्ट मांगी गई, लेकिन उनके द्वारा भी कोई जवाब नहीं दिया गया. फोन करने पर फोन भी नहीं उठाते हैं. इसकी शिकायत विभाग के सचिव एवं अभियंता प्रमुख को की गई है.

संवेदक पर व्यक्तिगत लाभ पहुंचाने का आरोप

भाजमो जिलाध्यक्ष ने यह भी कहा कि ग्रामीणों की शिकायत मिली है कि संवेदक कुछ खर्च लेकर व्यक्तिगत लाभ पहुंचाते हुए निजी जमीन पर नल-जल योजना का कार्य शुरू कर दिया जाता है.

लोकसभा कमेटी के अनुमोदन पर भारत सरकार की ओर से सम्मान

जयंत सिन्हा को सर्वश्रेष्ठ सांसद महारत्न पुरस्कार

संवाददाता। हजारीबाग

हजारीबाग सांसद सह वित्त संबंधी संसदीय स्थाई समिति के अध्यक्ष जयंत सिन्हा को सर्वश्रेष्ठ सांसद महारत्न पुरस्कार से सम्मानित किया गया है. यह सम्मान भारत सरकार द्वारा उत्कृष्ट कार्य करने वाले सांसद को दिया जाता है. लोकसभा में बनाई गई कमेटी के अनुमोदन पर जयंत सिन्हा को यह पुरस्कार दिया गया है. इस कमेटी में अर्जुन राम मेघवाल और पूर्व चुनाव आयुक्त टीसी कृष्णमूर्ति भी शामिल थे.

इस बात की जानकारी भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक यादव ने अटल भवन में रविवार को प्रेस वार्ता कर दी. उन्होंने बताया कि हजारीबाग सांसद जयंत सिन्हा की उपस्थिति सदन में शत प्रतिशत रही है. इतना ही नहीं पांच साल के कार्यकाल में उन्होंने 1000 से अधिक प्रश्न सदन में रखा है. शून्य काल में 54 प्रश्न रखे गए. वहीं नियम 371 के तत्वाधान में 29 मुद्दों का पर ध्यान आकर्षित करने का काम संसद ने किया है. इसके अलावा 13 प्राइवेट मेंबर बिल उन्होंने पेश किए. साथ ही भारत सरकार के कई मामलों को सदन में रखने का काम किया है.

अशोक यादव ने आगे बताया बताया कि फरवरी माह में दिल्ली में एक कार्यक्रम के दौरान सांसद जयंत सिन्हा को पुरस्कृत किया जाएगा. यह हजारीबाग समेत पूरे राज्य के लिए खुशी की बात है कि हजारीबाग के सांसद देश भर में सांसद महारत्न पुरस्कार से सम्मानित किए गए हैं. उन्होंने यह भी बताया कि भारत सरकार की ओर से विदेश व आर्थिक नीति पर हजारीबाग सांसद ने काम किया है. पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन के मामले में विदेश में भारत का प्रतिनिधित्व किया.

बड़ी उपलब्धि

- लोकसभा में शत-प्रतिशत रही जयंत सिन्हा की उपस्थिति
- फरवरी में दिल्ली में कार्यक्रम के दौरान होंगे पुरस्कृत

सांसद की ओर से एक लाख दीये का वितरण होगा

भाजपा जिलाध्यक्ष ने यह भी बताया कि आगामी 22 जनवरी को श्रीराम मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा समारोह लेकर हजारीबाग में भी तैयारी चल रही है. पंचायत से लेकर जिला स्तर तक सभी मंदिरों की साफ-सफाई भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा किया जाएगा. रविवार से इसकी शुरूआत से हो गई है, जो कि 22 जनवरी तक चलेगी. वहीं, हजारीबाग सांसद जयंत सिन्हा की ओर से विभिन्न क्षेत्रों में एक लाख दीये का वितरण किया जाएगा. इसके अलावा वितरण के लिए एक कॉम्बो पैक भी बनाया जाएगा, जिसमें घी, बत्ती, भगवा ध्वज और पूजन सामग्री रहेगी.

सांसद ने दी करोड़ों की सौगात

चौपारण। हजारीबाग सांसद जयंत सिन्हा ने जनहित में लोकसभा सहित चौपारण प्रखंड में अनेक विकास कार्यों को विभिन्न मदों से स्वीकृति दिलाई है. वहीं अपने सांसद निधि से भी कई कामों के लिए उपायुक्त को अनुशंसा पत्र लिखा है.

- सांसद निधि से अनेक विकास कार्यों के लिए दी स्वीकृति

अपने पत्र में सांसद ने प्रखंड के पांडेयबारा विश्वकर्मा मंदिर के पास सामुदायिक भवन के लिए 10 लाख, कमला माता मंदिर के पास सामुदायिक भवन निर्माण के लिए 10 लाख, ठुठी बुनियादी विद्यालय में पेवर्स ब्लॉक के लिए 6 लाख, लोहंडीखुर्द में पीसीसीपथ के लिए 5 लाख, इंगुनिया उच्च विद्यालय में छतदार चबूतरा के लिए 5 लाख, ताजपुर मे पीपल वृक्ष चबूतरा के जीर्णोधार के लिए 5 लाख, डीप बोरिंग के लिए 2 लाख, चौपारण में सत्येंद्र सिंह के घर के सामने नाली निर्माण के लिए 2 लाख सहित लोकसभा के अन्य प्रखंडों में करोड़ों रुपये की लागत से विकास कार्यों हेतु स्वीकृति प्रदान की है.

इस संबंध में जानकारी देते हुए सांसद प्रतिनिधि मुकुंद साव एवं मंडल अध्यक्ष मुकेश कुमार सिन्हा ने बताया कि सांसद जयंत सिन्हा दिन-रात लोकसभा क्षेत्र के कार्यकर्ताओं और जनता के लिए अथक परिश्रम करते हैं तथा जनहित में अनेक विकास कार्य धरातल पर उतारा है.

सांसद को पुरस्कार की घोषणा पर भाजपा में हर्ष

टाटीझरिया। सांसद जयंत सिन्हा का सांसद महारत्न पुरस्कार के लिए चयन होने पर प्रखंड भाजपा में हर्ष व्याप्त है. प्रखंड भाजपा कार्यालय रविवार को महामंत्री सह प्रमुख संतोष मंडल की अध्यक्षता में प्रेस कान्फ्रेंस किया गया. इस दौरान सांसद प्रतिनिधि मिथिलेश कुमार पाठक ने कहा कि सांसद जयंत सिन्हा की अध्यक्षता वाली वित्त संबंधी संसदीय स्थायी समिति को भी पांच वर्षों में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सर्वश्रेष्ठ समिति के रूप में चुना गया है. मौके पर मांडू विधानसभा क्षेत्र के सांसद प्रतिनिधि विपिन कुमार सिन्हा, प्रखंड सांसद प्रतिनिधि कैलाशपति सिंह, महेश अग्रवाल, पूर्व भाजपा विष्णुगढ़ अध्यक्ष डोमन प्रसाद गुप्ता, अनिल प्रसाद, होपन सिंह, रजनीकांत चौधरी, राजू यादव उपस्थित थे.

डेबो पंचायत अध्यक्ष ने दिया कांग्रेस से इस्तीफा

चौपारण। डेबो पंचायत अध्यक्ष शंभु यादव सहित पार्टी समर्थित सभी वार्ड सदस्य व पदाधिकारियों ने कांग्रेस पार्टी से इस्तीफा प्रखंड अध्यक्ष को सौंप दिया है. कांग्रेस प्रखंड महासचिव महेश यादव ने बताया कि हमलोग निःस्वार्थ भाव से पार्टी हित के लिए कार्य करते रहे हैं. लेकिन विधायक उमाशंकर अकेला ने डेबो पंचायत के कांग्रेस कार्यकर्ताओं का जनभावनाओं के साथ खिलवाड़ व अनदेखी की है. इस्तीफा देने वालों में पंचायत अध्यक्ष के अलावा पूर्व पंसस बेनी यादव, महेश कुमार यादव, अर्जुन यादव, रामदेव यादव, संतोष कुमार, बालकी यादव, राजकुमार पासवान, सत्येंद्र यादव, माधुरी देवी, लक्ष्मण यादव, मुन्नी देवी, सरयू पासवान सहित अन्य शामिल रहे.

दूसरे सेमेस्टर में विभावि के 3 हजार से अधिक छात्र फेल

संवाददाता। हजारीबाग

विनोबा भावे विश्वविद्यालय के दूसरे सेमेस्टर में हजारों छात्रों को प्रोन्नत किया गया है, जबकि तीन हजार से अधिक छात्र फेल हो गए हैं. सबसे अधिक गिरिडीह कॉलेज में 400 से अधिक छात्र फेल हो गए हैं. विश्वविद्यालय के सबसे प्रतिष्ठित संत कोलंबा महाविद्यालय में भी 150 से अधिक छात्र फेल हो गए हैं. छात्र नेता चंदन सिंह ने बताया कि छात्र मोर्चा द्वारा विश्वविद्यालय के पदाधिकारियों को नई शिक्षा पद्धति के सिलेबस को लेकर पत्राचार किया गया है.

उन्हें बताया गया है कि कुछ विषयों की पढ़ाई विश्वविद्यालय के किसी भी महाविद्यालय में नहीं कराई जा रही है. इस मामले में छात्र कल्याण संकाय का कोई ध्यान नहीं गया. नतीजा यह हुआ कि हजारों की संख्या में छात्र फेल हो गए. अब ये छात्र सेमेस्टर तीन में नामांकन नहीं लें पाएंगे और सरकार के द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति भी इन्हें नहीं मिलेंगी. इस मामले में चंदन सिंह ने कुलपति और कुलाधिपति को पत्र लिख कर मामले में उचित कदम उठाने का आग्रह किया है.

अधर में भविष्य

- किसी कॉलेज में नहीं हो रही कुछ विषयों की पढ़ाई : चंदन
- कुलपति और कुलाधिपति से उचित कदम उठाने का आग्रह

बरकट्ठा में परिवर्तन की लहर : ब्रजकिशोर

संवाददाता। बरकट्ठा

कांग्रेस आपके द्वार कार्यक्रम के तहत इचाक प्रखंड के दरिया पोखरिया जोगड़ी डोय में प्रमंडलीय नेता डॉ. आरसी मेहता के नेतृत्व में जनसंपर्क अभियान चलाया गया. पोखरिया की सभा में कांग्रेस शिक्षा प्रकोष्ठ के जिलाध्यक्ष प्रो. बीके मेहता ने कहा कि बरकट्ठा विधानसभा में परिवर्तन की लहर चल रही है. चाचा-भतीजा के 20 वर्षों के कार्यकाल में बरकट्ठा विधानसभा अन्य विधानसभा की तुलना में 10 वर्ष पीछे चल रहा है.

भ्रमण के दौरान डॉ. आरसी मेहता ने कहा कि बरकट्ठा विधानसभा समेत हजारीबाग जिले के सर्वांगीण विकास के लिए तत्पर हूं. उद्योग के अभाव में बेरोजगार नौजवान अन्य राज्यों में पलायन कर रहे है. उन्होंने यह भी कहा कि 2014 के बाद देश में महंगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार 8 गुना बढ़ चुका है. मंदिर-मस्जिद, हिंदुस्तान-पाकिस्तान के नाम पर देश को गुमराह किया जा रहा है. नौजवान, मजदूर, किसान बेबस हैं और नौकरशाह लोकतंत्र पर हावी हैं.

डॉ. मेहता ने आगे कहा कि इचाक मंदिरों का नगरी है. सिझुवा सिमरा ढाब स्थित आकर्षक झरना सैलानियों के लिए आकर्षण का केंद्र है. इसे पर्यटक स्थल के रूप में विश्व के मानस पर्यटन पर लाना मेरा लक्ष्य है. भ्रमण में मंडल अध्यक्ष चंद्रदेव मेहता अशोक यादव, एडवोकेट यादव, उगन गोप, पूर्व प्रमुख कौशल मेहता, रामचंद्र मेहता, नागेश्वर मेहता, जेठालाल राम, बंगाली महतो, देवनारायण मेहता, रामेश्वर महतो सहित दर्जनों लोग शामिल रहे.

चुनावी तैयारी

- कांग्रेस आपके द्वार के तहत चला जनसंपर्क अभियान
- जिले के सर्वांगीण विकास के लिए तत्पर : आरसी मेहता

रामनवमी महासमिति की ओर से सभी अखाड़ों में किया जाएगा झंडा, दीया, घी व हनुमान चालीसा का वितरण

22 को घरों और मंदिरों को सजाएं, उत्सव मनाएं : कुणाल यादव

संवाददाता। हजारीबाग

अयोध्या में 22 जनवरी को होने जा रहे रामलला के प्राण प्रतिष्ठा को लेकर बड़ा अखाड़ा प्रांगण में रविवार को बैठक का आयोजन किया गया. इसमें 22 जनवरी के उत्सव के स्वरूप पर चर्चा की गई. रामनवमी महासमिति के पूर्व अध्यक्ष मंजीत यादव ने लोगों से अपील करते हुए कहा कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा होना, हम सभी सनातनियों के लिए गौरव, सम्मान व हर्ष का विषय है. इस दिन को हम सभी को एक उत्सव के रूप में मनाना है.

वहीं रामनवमी महासमिति के पूर्व अध्यक्ष वीरेंद्र वर्मा बीरु ने कहा कि इस दिन आस पास के मंदिरों को साफ सफाई करनी है. रामनवमी महासमिति अध्यक्ष कुणाल यादव ने अपने संबोधन में कहा की 500 वर्षों के बाद रामलला अपने घर वापस आ रहे हैं. त्रेता युग में प्रभु श्रीराम 14 वर्षों के बाद जब अयोध्या वापस लौटे थे, तो घर घर दीप जला कर खुशियां मनाई गई थी. इस कलयुग में प्रभु श्रीराम 500 वर्षों के बाद घर लौट रहे हैं. इसलिए हमलोगों को पूरे उत्साह और उमंग से इस उत्सव को मनाना है. उन्होंने आगे कहा कि बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया है कि महासमिति की ओर से सभी अखाड़ों में झंडा, दीया, घी व हनुमान चालीसा का वितरण किया जाएगा. साथ ही इस उत्सव में जनभागीदारी व जनजागरण हेतु रथ रवाना किया जाएगा.

इस कार्यक्रम का शुभारंभ बड़ा अखाड़ा में झंडा देकर किया गया. उन्होंने आमजनों से अपील करते हुए कहा कि रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के दिन पास के मंदिरों मे हनुमान चालीसा का पाठ करें. घरों, सड़कों और चौक-चौराहों को सजाएं. बैठक में राकेश प्रसाद, धर्मेंद्र शुक्ला, सूरज कुमार, बबलू चंद्रवंशी, कृष्ण मुरारी, मंदीप यादव, कुंदन कुमार, गौरव गोस्वामी, वेद कुमार, पिंटू कुमार गिरी, संदीप कुमार, स्वयं प्रकाश, अमृतेश रंजन, कुणाल कुमार, करण सिंह, राहुल कुमार सहित अन्य लोग मौजूद थे.

सामाजिक बैठक

- बड़ा अखाड़ा प्रांगण में उत्सव के स्वरूप पर चर्चा
- रामलला की प्राण प्रतिष्ठा गर्व का विषय : मंजीत

पूर्व विधायक ने घर-घर बांटे पूजित अक्षत

चौपारण। विहिप व बजरंग दल चोरदाहा द्वारा अयोध्या से आए पूजित अक्षत वितरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. पूर्व विधायक मनोज कुमार यादव ने बसरिया में घर-घर जाकर पूजित अक्षत व निमंत्रण पत्रक बांटे. इस दौरान लोगों में उत्साह का माहौल था. शोभायात्रा में सैकड़ों महिला व पुरुषों ने हाथों में रामनामी पताका लेकर बसरिया बूध बाजार होते हुए पूरा गांव का भ्रमण किया. पूर्व विधायक ने कहा कि हमारी सनातन परंपरा की पुर्नस्थापना का अवसर है. 22 जनवरी को सभी लोग अपने घरों व पास के मंदिरों और देवस्थलों पर उत्सव मना कर श्रीराम ज्योति जलाएं.

प्रॉपर्टी बाजार

- लोकेशन- हजारीबाग की गदोखर पंचायत में
- स्थान : हजारीबाग का बलियंद
- जमीन की कीमत : तीन से चार लाख रुपए प्रति डिसमिल
- बस स्टैंड से दूरी : 7 किलोमीटर
- रेलवे स्टेशन से दूरी : 3 किलोमीटर
- आवागमन का साधन : ऑटो, रिक्शा, कार
- आसपास के स्कूल : मिडिल स्कूल कदमा, शोभा ज्ञान पब्लिक स्कूल
- पास का सब्जी बाजार : कदमा, रामनगर, छड़वा

हेल्थ अलर्ट

अस्पताल का नाम- वीणा नर्सिंग होम हरणगंज रोड हजारीबाग

- कुल बेड : 25
- आईसीयू : हां
- एंबुलेंस : हां
- साफ-सफाई : बेहतर
- पार्किंग सुविधा : हां
- चिकित्सक : डॉ एके तिवारी
- विशेषज्ञ : जनरल फिजिशियन
- सुविधाएं : हर दिन 24 घंटे इमरजेंसी सेवा, एक्स-रे, इसीजी, मेडिकल एवं अन्य सुविधाएं

घूमें-फिरें

- स्थल का नाम : बलियंद पहाड़ी
- शहर से कितनी दूर : हजारीबाग से 7 किमी और बड़कागांव से 17 किमी
- शहर में कहां है : हजारीबाग की गदोखर पंचायत में
- कैसे पहुंचेंगे : कार, ऑटो, बस या बाइक से
- पहुंचने का रूट क्या है : हजारीबाग से रामनगर और कदमा होते हुए
- क्या-क्या है खास : ऊंची पहाड़ी, वहां से डैम का मनोरम दृश्य, पिकनिक स्पॉट और सेल्फी प्वाइंट

खान-पान

रेस्टूरेंट का नाम : होटल कैनेरी हिल, हजारीबाग

- किस स्थान पर है : एनएच-2 एसबीआई मुख्य ब्रांच के आगे
- नाश्ते में क्या : चाइनीज आइटम, रोटी, आलू पराठा, मकई रोटी
- दिन का भोजन में क्या : चावल, दाल, आलू की सब्जी, पनीर, कोप्ता, चिकेन, मछली, मीट, तंदूरी रोटी
- रात के भोजन में क्या : तवा रोटी, तंदूरी रोटी, दाल फ्राई, दाल मखानी, मछली, पालक पनीर, चिकेन आइटम
- खास क्या है : दाल मखाना, पनीर मशाला, मिक्स वेज, दाल तड़का, मछली, मटन, चिकेन
- वेज या नॉनवेज : दोनों
- चाइनीज आइटम : हां
- पार्सल की व्यवस्था : हां
- होम डिलिवरी देते हैं : नहीं

संचालक सीके सिंह कहते हैं कि होटल में साफ-सफाई की पूरी व्यवस्था है. होटल में ठहरने वाले लोगों को पसंदीदा वातावरण में स्वादिष्ट नाश्ता एवं भोजन कराना उनकी पहली प्राथमिकता है. हर तरह के कार्यक्रम का आयोजन यहां किया जा सकता है.

शहर की गतिविधियां

- केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री व सदर विधायक ने लिया दही-चूड़ा का आनंद : भाजपा की इचाक प्रखंड इकाई द्वारा बुढ़िया माता मंदिर परिसर में रविवार को दही-चूड़ा भोज का आयोजन किया. इसमें शामिल होने कोडरमा सांसद सह केंद्रीय शिक्षा राज्य मंत्री अन्नपूर्णा देवी और हजारीबाग सदर विधायक मनीष जायसवाल भी पहुंचे. दोनों ने यहां प्राचीन बुढ़िया माता मंदिर में मत्था टेका और क्षेत्र की सुख, शांति और समृद्धि की कामना की. दर्शन और पूजन के उपरांत अन्नपूर्णा देवी और मनीष जायसवाल ने स्थानीय भाजपा नेताओं और कार्यकर्ताओं के साथ दही-चूड़ा का भी आनंद लिया. हजारीबाग जिला मुख्यालय से महज 17 किमी दूर इचाक का यह बुढ़िया माता मंदिर का इतिहास करीब 400 वर्ष पुराना है. यहां प्रतिमा नहीं बल्कि मिट्टी के पिंड पर और सिंदूर का लेप लगा कर पूजा की जाती है.

F9 होटल्स एंड इंडिया ट्रेवल
में आपका स्वागत और अभिनंदन!

आपके यात्रा को सुखद और सुविधाओं के आकांक्षा के लिए अयोध्या धाम श्रीराम नगरी, दिल्ली, पहाड़गंज नोएडा, गुड़गांव, देहरादून मसूरी, मुक्तेश्वर, हरिद्वार, ऋषिकेश, केदारनाथ, बद्रीनाथ, नैनीताल, अमृतसर, जम्मू, कतरा, वैष्णो देवी, जयपुर, उदयपुर, पुष्कर, अजमेर, आगरा, मथुरा, वृंदावन समेत पूरे भारत मे होटल और रूम मे ठहरने की उचित सुविधा और बस, ट्रेन और हवाई जहाज की टिकट की सुविधा निरंतर उपलब्ध है।

- FLIGHT TICKETS
- CRUISE BOOKING
- HOTEL BOOKING
- TRAIN TICKET
- TAXI SERVICE
- CURRENCY EXCHANGE
- HOLIDAY PACKAGES
- GROUP BOOKINGS
- E VISA SERVICE
- INTERNATIONAL TOUR PACKAGES

BOOKING
Call 8527271652-ved

ब्रीफ खबरें

मां-बेटे को बाइक ने मारी टक्कर, गंभीर

जमशेदपुर। जमशेदपुर के सोनारी थाना अंतर्गत मरीन ड्राइव काली मंदिर के पास सड़क पार कर नदी में नहाने जा रहे मां-बेटे को बाइक सवार ने टक्कर मार दी. इस घटना में नियती धीबर (70) और उसका बेटा कार्तिक धीबर गंभीर रुप से घायल हो गए. घटना के बाद स्थानीय लोगों ने बाइक सवार युवकों को धर दबोचा और घायलों को इलाज के लिए तत्काल एमजीएम अस्पताल लेकर पहुंचे जहां नियती को बेहतर इलाज के लिए टीएमएच रेफर कर दिया गया.

महिला ने कीटनाशक खाकर दी अपनी जान

गुमला। सदर थाना क्षेत्र के तिरां निवासी 27 वर्षीय अंजनी देवी ने रविवार की सुबह लगभग आठ बजे कीटनाशक खा ली. जब उसकी स्थिति खराब होने लगी तब परिजनों ने तत्काल सदर अस्पताल पहुंचाया. जहां चिकित्सक व कर्मियों ने प्राथमिक उपचार किया. उसकी गंभीर स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने रिम्स रेफर कर दिया. परिजनों के अनुसार रिम्स ले जाने दौरान रास्ते में उसकी मौत हो गई. परिजनों ने नागफेनी से मृतिका के शव को वापस सदर अस्पताल लाया.

वाहन के चपेट में आने से अधेड़ की हुई मौत

गुमला। गुमला सिमडेगा नेशनल हाईवे मार्ग स्थित गणेशपुर डीपा के समीप अज्ञात वाहन के चपेट में आने से डूमरडीह टुकुटोली निवासी 45 वर्षीय अजीत मिंज की घटनास्थल पर ही मौत हो गई. घटना रविवार शाम लगभग छह बजे की है. तत्काल परिजनों ने अजीत को सदर अस्पताल पहुंचाया. जहां डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया. सदर अस्पताल पहुंचे परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था. जानकारी के अनुसार अजीत मिंज के घर में शादी का माहौल है.

घायल युवक की इलाज के दौरान मौत

गुमला। गुमला रांची नेशनल हाईवे में खोरा भकुआ टोली के समीप एक अज्ञात कार के टक्कर से घायल लाल पंडरिया निवासी संदीप उरांव की शनिवार देर रात इलाज के दौरान मौत हो गई. जबकि उसकी 6 वर्षीय पुत्री राधिका उरांव का गुमला सदर अस्पताल में इलाज चल रहा है. सड़क दुर्घटना शनिवार की शाम हुई थी. गश्ती कर रही पुलिस ने घायल पिता पुत्री को इलाज के लिए सदर अस्पताल पहुंचाया था. जानकारी के अनुसार संदीप व पुत्री राधिका बाइक से भलदम चट्टी जा रहे थे.

पुलिस ने 30 क्विंटल जावा महुआ किया नष्ट

मेराल। प्रशिक्षु डीएसपी चिरंजीवी के नेतृत्व में मेराल थाना क्षेत्र के सुदूरवर्ती गांव दुलदुलवा में महुआ शराब के विरुद्ध सघन छापेमारी अभियान चलाया गया. छापेमारी के दौरान पुलिस टीम ने कई घरों एवं जंगली इलाकों में कई जगहों पर छापामारी कर करीब 30 क्विंटल जावा महुआ को विनष्ट किया. सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार तथा आसपास के क्षेत्र में लगातार अवैध महुआ शराब बनाने तथा बेचने की शिकायत मेराल थाना पुलिस को मिल रही थी.

पूर्व पार्षद और महिला थाना प्रभारी भिड़े

धनबाद। धनबाद के पूर्व पार्षद निर्मल मुखर्जी और धनबाद की महिला थाना प्रभारी पूजा कुमारी दोनों के बीच हीरापुर बीच बाजार में भिड़ंत हो गई. बाद में महिला थाना प्रभारी ने धनबाद थाने को खबर दी और निर्मल मुखर्जी को कई घंटे थाने में बिताना पड़ा. बताते हैं कि हीरापुर में निर्मल मुखर्जी हीरापुर में अपनी बाइक पर सवार थे, तभी महिला थाना प्रभारी अपने वाहन से वहां से गुजर रही है. इसी में थाना प्रभारी ने जो बिना ड्रेस में थी, ने पार्षद को कह दिया कि गाड़ी हटाइए, पार्षद ने तत्काल कह दिया कि अपना रास्ता देखो. इसी बात पर दोनों में बकझक होने लगी और सड़क पर भीड़ लग गई.

नामजद अभियुक्त को पुलिस ने किया गिरफ्तार

धुरकी। थाना क्षेत्र के अंबाखोरेया गांव निवासी भोला राम पिता मिठु राम को धुरकी पुलिस ने गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में जेल भेज दिया है. थाना प्रभारी संतोष कुमार रवि ने बताया कि गिरफ्तार व्यक्ति कांड संख्या 119/23 का नामजद अभियुक्त था. जिस पर 27 अक्टूबर 2023 को प्राथमिकी दर्ज की गई थी.

नकली पिस्टल दिखाकर लूटने वाले 3 आरोपी गिरफ्तार

संवाददाता । जमशेदपुर

जमशेदपुर के आजादनगर थाना अंतर्गत चेपापुल के पास स्थित लक्ष्य अपार्टमेंट निवासी काफिल खान के घर में नकाब पहन नकली पिस्टल का भय दिखा लूटने के तीन आरोपी को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है. गिरफ्तार आरोपियों में गुलाब बाग फेज 2 निवासी शहबाज उर्फ साबू, मेराज अंसारी और रानी अम्मा लॉज निवासी असराफुल शामिल है. आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने घटना में प्रयुक्त नकली हथियार, एक चापड़, नकाब और एक टेप बरामद किया है. वहीं पुलिस ने घटना स्थल से एक चोरी की बाइक भी बरामद की है, जिसे बीते दिनो सिदगोड़ा थाना क्षेत्र से चोरी की गई थी.

इस मामले में भी पुलिस ने एक बाइक चोर को गिरफ्तार किया है. घटना शनिवार सुबह आठ बजे की है. तीनों आरोपी एक बाइक से लक्ष्य अपार्टमेंट पहुंचे और घर का दरवाजा खटखटाया. दरवाजा खोलते ही तीनों कमरे के अंदर गए और पिस्टल का भय दिखाते हुए रुपये और गहने निकालने को कहा. इसी बीच काफिल की पत्नी नाजनीन ने एक आरोपी को पकड़ लिया.

दोनों के बीच लगभग आधा घंटा तक झड़प हुई. नाकाम होता देख सभी बाइक छोड़कर मौके से फरार हो गए. घटना में काफिल, उनकी पत्नी नाजनीन और बेटी घायल हो गए. घटना की सूचना काफिल ने पुलिस को दी. इसके बाद पुलिस ने आस-पास लगे सीसीटीवी की मदद से आरोपियों की पहचान की और तीनों आरोपियों को कपाली से गिरफ्तार कर लिया. पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि कुछ माह पूर्व उन्हें जानकारी मिली थी कि काफिल के बेटे द्वारा घर का गहना बेचा जाता है. इसी को लेकर तीनों ने काफिल के घर लूट की योजना बनाई थी.

बाइक बरामद

- आजादनगर में बदमाशों ने वारदात को अंजाम दिया था
- पुलिस ने घटनास्थल से चोरी की एक बाइक बरामद की

आओ जानें

झारखंड में साइबर अपराध के मामले

जिला	मामला	सरायकेला	154
धनबाद	406	सिमडेगा	44
गिरिडीह	224	देवघर	405
हजारीबाग	348	गोड्डा	115
जमशेदपुर	384	गुमला	92
पलामू	170	लोहरदगा	45
रांची	1432	चतरा	105
साहिबगंज	91	गढ़वा	80
दुमका	120	कोडरमा	72
चाईबासा	90	खूंटी	48
बोकारो	150	रामगढ़	177
लातेहार	161	पाकुड़	83
जामताड़ा	345	कुल	5350

प्रेमिका से छुटकारा पाने के लिए हत्या कर प्रेमी चेन्नई भाग गया था

शादी का दबाव बनाया तो कर दी प्रेमिका की हत्या

संवाददाता । मेदिनीगनर

मनातू थाना क्षेत्र के बंशी खुर्द गांव से गायब लड़की का पुलिस ने भेलौआटांड़ जंगल से कंकाल बरामद किया है. पुलिस को घटनास्थल से कंकाल के अलावा एक सफेद रंग का सूट, एक सफेद एवं मटमैला सलवार, लाल रंग की एक जोड़ी हवाई चप्पल, काले रंग का कपड़ा, घटनास्थल पर मौजूद बाल, काला रंग का हेयरबैंड एवं पीला रंग का ओढनी मिला है. दरअसल, प्रेमिका से छुटकारा पाने के लिए उसके प्रेमी ने ही उसकी हत्या कर दी थी और वह चेन्नई भाई गया था. इसके बाद वह मृतका के मोबाइल का उपयोग करने लगा था, जिससे परिजनों को लगा की वह भी चेन्नई में है. दो माह तक पता नहीं चलने के बाद बंशी खुर्द गांव निवासी स्व. विजय चौधरी की पत्नी गुलाबी कुंवर (50) ने 4 नवंबर 2023 को मनातू थाना को आवेदन दिया. आवेदन के आधार पर मनातू थाना पुलिस ने कांड संख्या-55/2023 दर्ज किया. आवेदन में तरहसी के परसाई मंझौली गांव निवासी सतबीर कुमार उर्फ सत्यबीर कुमार(19) पिता नागेन्द्र महतो उर्फ सुशील को आरोपी बनाया गया था. आवेदिका ने आरोपी पर अपनी पुत्री टुनी कुमारी(17) को शादी की नियत से बहला-फुसलाकर भगा ले जाने की बात कही थी.

चेन्नई में आरोपी प्रेमी कर रहा था मृतका के मोबाइल का उपयोग

आरोपी गिरफ्तार

- पुलिस ने भेलौआटांड जंगल से कंकाल बरामद किया था
- घटनास्थल से एक सफेद रंग का सूट बरामद हुआ था
- आरोपी ने गला दबाकर प्रेमिका की हत्या कर दी थी

मामला मनातू थाना क्षेत्र के वंशीखुर्द गांव से गायब लड़की का

प्राथमिकी के बाद परिजन जब भी आरोपी से बात करते तो वह कहता कि टुनी आपलोगों से बात नहीं करना चाहती. उसे पकड़ने के लिए पुलिस चेन्नई भी गई थी लेकिन उसका पता नहीं चल सका. तकनीकी अनुसंधान के आधार पर पुलिस ने 13 जनवरी को सतबीर को उसके घर से गिरफ्तार किया. पूछताछ में आरोपी ने पुलिस को बताया कि टुनी उस पर लगातार शादी का दबाव बना रही थी. इससे आजिज होकर उसने 26 सितंबर 2023 को टुनी को मिलने के लिए बुलाया. इसके बाद उसकी हत्या गला दबाकर हत्या के बाद शव को जंगल में फेंक दिया. आरोपी की निशानदेही पर पुलिस ने लड़की के कंकाल जंगल से बरामद किया. मौके से बरामद कपड़े के आधार पर उसकी पहचान की गई. मनातू थाना प्रभारी कमलेश कुमार ने बताया कि पुलिस आरोपी की निशानदेही पर बंशी खुर्द टोला भेलौआटांड के जंगल स्थित घटनास्थल से बिखरा हुआ कंकाल पाया है. उक्त अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायिक हिरासत में भेजने के साथ ही बरामद कंकाल को पोस्टमार्टम एवं अग्रेतर कार्रवाई के लिए मेदिनीनगर स्थित एमएमसीएच भेजा गया है. उन्होंने बताया कि मामले में आगे की छानबीन कर रही है. छापामारी दल में लेस्लीगंज एसडीपीओ आलोक कुमार टुटी, मनातू थाना प्रभारी कमलेश कुमार, पुअनि पंकज कुमार व जितेन्द्र मिश्र, एएसआई श्रवण दास समेत पुलिस जवान शामिल थे.

पुलिस ने 6 मोबाइल फोन व 3 पासबुक बरामद किया

पांच साइबर अपराधी गिरफ्तार

संवाददाता । गिरिडीह

जिले में साइबर अपराध के खिलाफ पुलिस का अभियान लगातार जारी है. पुलिस ने अलग-अलग स्थानों पर छापामारी कर पांच साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया है. यह जनकारी एसपी दीपक कुमार शर्मा ने रविवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में दी. एसपी को प्रतिबिंब पोर्टल के माध्यम से अहिल्यापुर थाना क्षेत्र के जमजोरी गांव में साइबर अपरधियों की सक्रियता की सूचना मिली थी.

सूचना के आधार पर साइबर डीएसपी संदीप सुमन समदर्शी के नेतृत्व में छापेमारी कर पांच साइबर अपराधियों को गिरफ्तार किया गया. जबकि दो लोगों को नामजद अभियुक्त बनाया गया है. गिरफ्तार आरोपियों में अहिल्यापुर थाना क्षेत्र के जामजोरी निवासी अब्दुल हालीम, मो मिनहाज, बेंगाबाद थाना क्षेत्र के बिसनपुर निवासी पवन कुमार मंडल, गांडेय थाना क्षेत्र के देवनडीह निवासी सुजीत कुमार मंडल व बिरनी थाना क्षेत्र के डबरी निवासी प्रशांत मुरारी शामिल हैं. अहिल्यापुर से पकड़े गए दोनों आरोपी फर्जी सिम बेचते थे. जबकि नामजद अभियुक्तों में बिरनी के अरारी का निशिकांत प्रसाद और ओरवाटांड़ का रंजीत कुमार यादव शामिल हैं. एसपी ने बताया कि पुलिस ने गिरफ्तार आरोपियों के पास से 6 मोबाइल फोन, अलग-अलग मोबाइल कंपनियों के 3 बैंक पासबुक, 4 आधार कार्ड व एक बाइक बरामद की है.

धारदार हथियार से दो लोगों पर किया हमला

मेदिनीनगर। सतबरवा थाना क्षेत्र के ताबर गांव में दो सगे भाइयों पर तेज धारदार हथियार से हमला किए जाने का मामला प्रकाष में आया है. दोनों के सिर में गंभीर चोट हैं. दोनों पीड़ितों ने सतबरवा थाना में मामला दर्ज करने के लिए आवेदन दिया है. आवेदन मिलने के बाद पुलिस मामले की छानबीन कर रही है. जानकारी के अनुसार शनिवार की सुबह काजिम मियां (30) अपनी निजी जमीन पर शौचालय का निर्माण करा रहे थे. इसी दौरान गांव के ही उनके दो सगे भाई अब्दुल हक उर्फ राबो तथा सैदुल हसन गाली-गलौज करते हुए निर्माणाधीन स्थल पर पहुंचे और दीवार को गिरा दिया. इस दौरान एक भाई ने तेज धारदार हथियार से काजिम पर वार कर दिया

महिला दूधमुंही बच्ची को लेकर नहाने गई थी

कांड्रा में केनाल में नहाने गई महिला की डूबने से मौत

संवाददाता । जमशेदपुर

सरायकेला-खरसावां जिले के कांड्रा थाना अंतर्गत सालमपाथर गांव में केनार में नहाने गई सोमवारी हेंब्रम (20) की डूबने से मौत हो गई. घटना रविवार सुबह आठ बजे की बताई जा रही है. परिजनों को जानकारी होने पर उसे केनाल से बाहर निकाला गया और इलाज के लिए एमजीएम अस्पताल लेकर पहुंचे जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया. परिजनों ने बताया कि सोमवारी अपनी दूधमुही बच्ची को लेकर केनाल में नहाने गई थी. बच्ची को केनाल के पास बिठाकर वह केनाल में नहाने के लिए उतरी. इसी बीच वह केनाल के गहरे पानी में चली गई. स्थानीय लोगों की मदद से उसे बाहर निकाला गया. परिजनों ने बताया कि नहाने के दौरान ही उसे अचानक मिर्गी का दौरा आ गया जिससे वह डूब गई.

काली मंदिर से चोर लाखों के जेवरात लेकर हुए फरार

संवाददता । पाकुड़

पाकुड़ के प्रसिद्ध काली मंदिर में बीती रात चोरी हो गई. मां काली की स्थापित प्रतिमा पर सोने का हार और चांदी का हार चोर उड़ा ले गये. काली मंदिर में चौथी बार चोरी की घटना सुनकर राजा पाड़ा मोहल्ले के सैकड़ों लोग मंदिर प्रांगण में जुट गए और पुलिस प्रशासन से शीघ्र चोरी की घटना का खुलासा करने की मांग करने लगे.

मंदिर में चोरी की घटना की खबर सुनकर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अजीत कुमार, विमल प्रशिक्षु डीएसपी आदित्य कुमार और नगर थाना की पुलिस मंदिर पहुंचकर छानबीन में जुट गई. मंदिर का गेट का ताला टूटा मिला, टूटा ताला कड़ी और एक मफलर मंदिर परिसर से पुलिस ने बरामद किया है, वहीं मंदिर की सुरक्षा में तैनात गार्ड रहने के बावजूद चोरी की घटना से स्थानीय लोग काफी आक्रोशित हैं. मंदिर के पुजारी भारत पंडित ने पुलिस के समक्ष चोरी की घटना के बारे में जानकारी दी. इधर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अजीत कुमार विमल ने बताया कि मंदिर की चोरी की घटना की छानबीन की जा रही है. चोरी में डेढ़ भर सोने का हार और 40, 50 भर चांदी की जेवर की चोरी हुई है.

पॉकेट से निकाल रहा था मोबाइल, पकड़ा गया

धनबाद। मोबाइल चोरों का गिरोह इन दिनों एक्टिव होता दिखा रहा है. आए दिन कहीं न कहीं मोबाइल चोर की धुनाई का मामला सामने आ रहा है. ऐसा ही मामला पुलिस लाइन में आया. जहां एक ग्राहक के पॉकेट से मोबाइल चोर के द्वारा मोबाइल चोरी की जा रही थी. वहीं चोर को पड़कर स्थानीय लोगों ने पिटाई कर दी और उसे पुलिस को सौंप दिया. भुक्त भोगी ग्राहक जस्सी मलिक का रहने वाला बताया जाता है. वह मछली खरीदने पुलिस लाइन पहुंचा था. जहां चोर बहुत ही आसानी से उसके पॉकेट से मोबाइल चोरी कर ही रहा था कि ग्राहक ने उसको पकड़ लिया. उसकी पिटाई की तथा बांध कर भी रखा. इसके बाद स्थानीय सदर थाना पुलिस को सूचना दिया गया. जिसके बाद मौके पर टाइगर टीम पहुंचकर उक्त चोर को अपने साथ थाना ले गई. घटना के संबंध में बताया यह भी जाता है कि उक्त चोर के खिलाफ किसी भी प्रकार का कोई लिखित शिकायत नहीं दिया गया है. ऐसा ही मामला कुछ दिन पहले कोर्ट कैंपस में घटित हुई थी.

उत्पाद विभाग ने मारा छापा 153 लीटर विदेशी शराब जब्त

संवाददाता । आदित्यपुर

शनिवार की रात राजनगर में सरायकेला उत्पाद विभाग ने छापेमारी कर 153 लीटर अवैध विदेशी शराब और दो बाइक को जब्त किया है. प्राप्त सूचना अनुसार अधीक्षक उत्पाद, सरायकेला के निर्देशानुसार देर रात्रि में ग्राम रांझोर, थानाः राजनगर, जिला सरायकेला में उत्पाद दल एव राजनगर थाना के सहयोग से छापेमारी किया गया है. छापेमारी के दौरान घटनास्थल से कुल 153 लीटर अवैध विदेशी शराब जिसमे किंग्स गोल्ड, गोवा किक के ब्रांड शामिल हैं के साथ दो मोटरसाइकिल बरामद हुआ है. छपेमारी के उपरांत अवैध शराब कारोबारी के विरूद्ध अभियोग संबंधी कार्रवाई सरायकेला उत्पाद द्वारा की गई है. बता दें कि जिले के कई प्रखंड में अवैध रूप से विदेशी शराब का धंधा किया जा रहा है जिसके विरुद्ध लगातार कार्रवाई की जा रही है.

सामूहिक दुष्कर्म के तीन आरोपी गिरफ्तार

बेंगाबाद। बेंगाबाद पुलिस ने नाबालिग के साथ सामूहिक दुष्कर्म के तीन आरोपियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया. तीनों नामजद आरोपी घटना के अंजाम देने के बाद फरार चल रहे थे. 13 जनवरी को बेंगाबाद पुलिस ने तीनों आरोपियों को गिरफ्तार करने में सफलता पाई. जिसके बाद 14 जनवरी को तीनों को न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया. गिरफ्तार आरोपियों में हीरालाल सोरेन, मिथुन सोरेन और साहिबराम सोरेन शामिल हैं. तीनों आरोपी बेंगाबाद थाना क्षेत्र के गोलगो गांव के रहने वाले हैं. मामला बेंगाबाद थाना कांड संख्या 264/23 से जुड़ा हुआ है. बताते चलें कि थाना क्षेत्र के रंगामाटी गांव में एक नाबालिग युवती अपनी सहेली के घर शादी समारोह में गई थी. रात के समय वह शौच के लिए बाहर निकली थी उसी दौरान उसके साथ आरोपियों ने कुकर्म किया था. मामले को लेकर बेंगाबाद थाना में 19 नवंबर 23 को पांच नामजद अभियुक्तों के खिलाफ भादवी की धारा 376 डीए/34 एवं पोक्सो एक्ट के तहत केस दर्ज हुआ था.

निरसा में अवैध लॉटरी की बिक्री जोरों पर

निरसा। झारखंड में लॉटरी बिक्री पर प्रतिबंध रहने के बावजूद निरसा अनुमंडल क्षेत्र में बेरोकटोक इसकी बिक्री जोरों पर है. पश्चिम बंगाल से सटे होने के कारण जाली लॉटरी और पश्चिम बंगाल में बिकने वाले नागालैंड लॉटरी की बिक्री निरसा अनुमंडल क्षेत्र में अबसे अधिक है. सूत्रों के अनुसार इस क्षेत्र में ज़ाली लॉटरी का मुख्य कारोबारी निरसा का आनंद नामक युवक है. जो पूरे निरसा विधानसभा में जाली लॉटरी की सप्लाई कर रहा है. आंनद ने अपने गैंग में दर्जनों लड़को को रखा है. जिसके ज़रिये सभी थाना और ओपी क्षेत्र में लॉटरी विक्रेताओं को सप्लाई कर रहा है. बताया जाता है कि निरसा थाना के समीप बाजार में ज़ाली लॉटरी की बिक्री सबसे अधिक होती है. यहीं से इसकी सप्लाई कालूबथान, मैथन, पंचेत, गलफरबाड़ी, कुमारधुबी और चिरकुंडा क्षेत्र में की जा रही है. जिसमे बंगाल में बिकने वाली लॉटरी के साथ कुछ जाली लॉटरी भी होते हैं. गौरतलब है कि निरसा के वर्तमान थाना प्रभारी दिलीप यादव ने निरसा के भलजोड़ियां स्थित प्रतिबंधित लॉटरी विक्रेता आनंद के नए आवास में छापेमारी कर कई बोरियों में भरी लॉटरी टिकट को ज़ब्त किया था.

हादसा | बाइक स्ट्रीट लाइट के खंभे से टकरा गई, सभी बिना हेलमेट के थे

टाटा-कांड्रा मार्ग पर सड़क दुर्घटना में दो की मौत

संवाददाता । जमशेदपुर

गम्हरिया थाना अंतर्गत टाटा-कांड्रा मार्ग स्थित केपीएस स्कूल के पास पर शनिवार देर रात हुए एक भीषण सड़क दुर्घटना में दो युवकों की मौत हो गई. जबकि एक युवक की गंभीर रूप से घायल हो गया. घायल का इलाज टीएमएच में चल रहा है, जहां उसकी स्थिति गंभीर बनी हुई है. मृतकों में राहुल करुआ (18) और सोनू मुंडा (19) शामिल हैं, जबकि घायल का नाम गणेश लोहार बताया जा रहा है.

सभी गम्हरिया बोलायडीह के रहने वाले हैं. घटना शनिवार देर रात की है. परिजनों ने बताया कि तीनों रात 9 बजे एक दोस्त की बाइक लेकर थाना मोड़ जाने की बात कहकर घर से निकले थे. देर रात 2 बजे पुलिस ने उन्हें घटना की जानकारी दी. इसके बाद परिजन एमजीएम पहुंचे. मृतक सोनू मुंडा के भाई राजीव मुंडा ने बताया कि अस्पताल पहुंचने पर भाई बात कर रहा था. लेकिन टीएमएच ले जाने के क्रम में उसने भी दम तोड़ दिया. जबकि राहुल करुआ की घटना स्थल पर ही मौत हो गई थी. रविवार को पुलिस ने दोनों शवों का पोस्टमार्टम कराया. इधर, इस घटना में बाइक बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो गई है. प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि बाइक की स्पीड काफी ज्यादा होने के कारण बाइक स्ट्रीट लाइट के खंभे से टकरा गई. किसी भी युवकों ने हेलमेट नहीं पहन रखा था, जिस कारण तीनों को गंभीर चोट आई. राहुल करुआ मूल रुप से सीनी का रहने वाला था. बोलायडीह में वह अपने मामा नीरज करुआ के घर पर रह कर गम्हरिया में एक प्राइवेट कंपनी में काम करता था. परिजन पोस्टमार्टम कराने के बाद शव को सीनी ले गए. वहीं उसका अंतिम संस्कार किया गया. वहीं, सोनू मुंडा भी एक प्राइवेट कंपनी में काम करता था. पोस्टमार्टम के बाद भुइयांडीह स्थित बर्निंग घाट में उसके शव का अंतिम संस्कार किया गया.

सड़क हादसा

- तेज रफ्तार बाइक स्ट्रीट लाइट खंभे से टकराई
- मृतकों का नाम राहुल करुआ और सोनू मुंडा है

नावाडीह के मजदूर की मुंबई में मौत, 7 माह पहले गया था कमाने

संवाददात । नावाडीह

मृत मजदूर बुधन महतो की फाइल फोटो

बोकारो जिले के नावाडीह प्रखंड के एक मजदूर की पलायन में मौत हो गई. खरपीटो पंचायत के अरगामो गांव निवासी बुधन महतो (45 वर्ष) की शनिवार को मुंबई में काम करने के दौरान बीस मंजिली इमारत से गिरकर मौत हो गई. बुधन महतो अपने बड़े भाई खूबलाल महतो के साथ सात माह पहले रोजगार के लिए मुंबई गया था.

दोनों भाई मुंबई के वडाला में राजमिस्त्री का काम करते थे. काम करने के दौरान बुधन महतो महतो 20 मंजिली इमात से फिसलकर जमीन पर गिर गया और मौके पर ही उसकी मौत हो गई. घटना की जानकारी मिलते हीं पत्नी किसनी देवी, पुत्र दीपक महतो, पुत्री सवित्री देवी रो-रोकर बुरा हाल है. बुधन का शव रविवार देर शाम तक गांव आने की संभावना है. शव विमान से रांची और वहां से सड़क मार्ग से गांव पहुंचेगा.

बुधन महतो चार भाइयों में तीसरे नंबर पर था. घटना जानकारी मिलने के बाद सूबे की उत्पाद व मद्य निषेध मंत्री बेबी देवी, प्रमुख पूनम देवी, समाजसेवी मुकेश चौधरी, झामुमों नेता मिथलेश चौधरी, राजेश चौधरी, विजय महतो, आजसू के सोनू चौधरी आदि ने परिजनों से मिलकर संवेदना जताई. मंत्री बेबी देवी ने परिवार को हर संभव मदद का भरोसा दिया. ज्ञात हो कि इससे पहले एक जनवरी को इसी प्रखंड के पोटसो ग्राम निवासी खेमन साव के 38 वर्षीय पुत्र सुरेश साव की बोरीवली मुंबई में हार्ट अटैक से मौत हो गई थी.

राशिफल

आचार्य प्रणव मिश्रा

मेष आय के लिए दिन अच्छा है. कोई बड़ा कार्य होगा. नौकरी में पदोन्नति होगी. बेरोजगारी दूर होकर प्रसन्नता बनी रहेगी. निवेश शुभ रहेगा. बाहरी सहयोग से कार्य होगा. नए कार्य की शुरुआत हो सकती है. यात्रा लाभदायक रहेगी.

वृषभ पिता से लाभ का योग है. पिता के स्वास्थ पर ध्यान दें. किसी संत से शुभ ज्ञान प्राप्त होगा. पुराने भूले-बिसरे साथियों से मुलाकात होगी. आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा. व्यवसाय ठीक चलेगा. चिंता और तनाव रहेगा.

मिथुन ससुराल से लाभ संभव है. नौकरी में अधिकार बढ़ सकते हैं. अप्रत्याशित लाभ होगा. बेरोजगारी दूर होगी. कार्य और समय को ले कर सक्रिय रहना होगा. परिवार की चिंता रहेगी. व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी.

कर्क बिना वजह विवाद हो सकता है. इससे बचना होगा.अप्रत्याशित खर्च सामने आयेंगे. स्वास्थ्य कमजोर रहेगा. कार्य में बाधा होगी. धन और कीर्ति की हानि हो सकती है. जोखिम व जमानत के कार्य टालें. कीमती वस्तुएं संभालकर रखें.

सिंह जीवनसाथी के साथ कोई यात्रा का योग बन सकता है. काम में मन लगेगा. वरिष्ठजनों का सहयोग प्राप्त होगा. कार्यक्षेत्र में उन्नति होगी. यात्रा, निवेश व नौकरी मनोनुकूल रहेगी. फालतू बातों पर ध्यान न दें. घर-बाहर प्रसन्नता रहेगी.

कन्या मान-सम्मान में वृद्धि होगी. बेरोजगारी दूर होगी. नेत्र व मस्तिष्क दर्द हो सकता है. व्यावसायिक कठिनाई दूर होगी. चिंता कम रहेगी. प्रसन्नता बनी रहेगी. कार्य में लगन बढ़ेगी. गणेश जी पर दूब हल्दी अर्पण करें.

तुला विवाद को तूल न दें. आवश्यक वस्तु गुम हो सकती है. अपनों से सहयोग नहीं मिलेगा. चिंता रहेगी. विस्तार कार्यों में देरी हो सकती है. हिम्मत रखो. नकारात्मकता बढ़ेगी. आपके कार्य और प्रभाव से व्यवसाय ठीक चलेगा.

वृश्चिक किसी से विवाद और उससे मानहानि का संभावना है. कोर्ट-कचहरी में सफलता हासिल होगी. परिवार में आनंदोत्सव हो सकता है. कुछ दिक्कतों के साथ लाभ में वृद्धि होगी. प्रसन्नता में वृद्धि होगी. निवेश शुभ रहेगा.

धनु उन्नति के प्रयास सफल रहेंगे. रोजगार में वृद्धि होगी. धन प्राप्ति सुगम होगी. भूमि और भवन संबंधी बाधा दूर होंगी. यात्रा, निवेश और नौकरी में मनोनुकूल लाभ होगा. विरोधी अनुकूल रहेंगे. उनकी तोपें थमी रहेंगी.

मकर मित्र व संबंधियों से लाभ होगा. कोर्ट-कचहरी के काम निबट करेंगे. निवेश शुभ रहेगा. यात्रा से लाभ होगा. नौकरी में प्रमोशन मिल सकता है. प्रसन्नता में वृद्धि होगी. जोखिम व जमानत के कार्य टालें. थकान रहेगी.

कुंभ रोजगार प्राप्ति के प्रयास सफल रहेंगे. आय में वृद्धि होगी. निवेश शुभ रहेगा. यात्रा अनुकूल रहेगी. बेचैनी रहेगी. अपनों से संबंध बिगड़ सकते हैं. वाणी पर नियंत्रण रखें. कोई नया कार्य होगा, जिसका लाभ होगा.

मीन आय के लिए किया गया प्रयास सफल होगा. पार्टी व पिकनिक का आनंद मिलेगा. नौकरी में काम का दबाव अधिक हो सकता है. आय में वृद्धि होगी. परहित के काम करने का मौका मिल सकता है. मंदिर में अन्न का दान करें.

सांसद डॉ. महुआ माजी ने बांटे कंबल

रांची। एचबी रोड स्थित लोहरा कोचा के पास रविवार को राज्यसभा सांसद डॉ. महुआ माजी और समाजसेवी सोमवित माजी ने मकर संक्रांति के अवसर पर जरूरतमंदों के बीच कंबल बांटा. वहीं बच्चों के बीच पतंग और दही चूड़ा का वितरण किया. इस पहल से छोटे बच्चे काफी खुश हुए. मौके पर सांसद महुआ माजी ने कहा कि रांची व राज्य की जनता के लिए हमेशा साथ खड़े होकर उनके साथ कदम से कदम मिलाकर सभी के उज्ज्वल भविष्य के लिए दृढ़ संकल्प रहूंगी. समाजसेवी सोमवित माजी ने कहा कि कैसी भी समस्या हो बतायें, समाधान होगा. मौके पर विक्की लोहरा, अमित माजी, रवि लोहरा, निक्की लोहरा,अशोक लोहरा,राजा लोहरा, रणबीर लोहरा, शमशाद आदि बड़ी संख्या में लोग शामिल थे.

एफएफआई का वार्षिकोत्सव 21 को

धनबाद। आईआईटी-आइएसएम के छात्रों के संगठन फास्ट फॉरवर्ड इंडिया (एफएफआई) के वार्षिकोत्सव ''उम्मीद'' का आयोजन 21 जनवरी को होगा. यह जानकारी एफएफआई के प्रतिनिधि नवदेश ने दी. उन्होंने बताया कि इस बार का थीम "प्रतिभाओं का दर्पण" है. जिसमें सात प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी. जिसमें जिले के दर्जनों विद्यालयों के बच्चे भाग लेंगे. कहा कि आयोजन का उद्देश्य बच्चों के मानसिक और नैतिक कौशल को बढ़ाना है. सात प्रतियोगिता में संगीत की प्रतियोगिता ध्वनि, नृत्य की नृत्यंगन, चित्रकला की चित्रहार, शतरंज की शय और मात, सामान्य ज्ञान की मास्टरमाइंड, वाद-विवाद की रेसॉल्वड, विज्ञान मॉडल प्रदर्शनी की आइंस्टीन प्लेग्राउंड आयोजित की जाएगी. स्पॉट रजिस्ट्रेशन का समय 21 जनवरी की सुबह 10 बजे तक होगा. विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाएगा, जबकि सभी प्रतिभागियों को पार्टिसिपेशन सर्टिफिकेट मिलेगा.

सराहनीय : झारखंड प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन के प्रांतीय अधिवेशन मंथन में विभिन्न शाखाएं सम्मानित

मारवाड़ी महिला सम्मेलन की प्रदेश अध्यक्ष बनीं मंजू बगड़िया

संवाददाता । जमशेदपुर

झारखंड प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन का दो दिवसीय ग्यारहवां प्रांतीय अधिवेशन मंथन रविवार को संपन्न हो गया. अधिवेशन के दूसरे दिन सत्र 2024-26 के लिए नवनिर्वाचित प्रदेश अध्यक्ष मंजू बगड़िया (करकेंद, धनबाद) को प्रांतीय अध्यक्ष मंजू खंडेलवाल ने ताज पहना कर पदभार सौंपा. आगामी 01 अप्रैल से मंजू बगड़िया कार्यभार संभालेंगी. इससे पहले बिष्टुपुर तुलसी भवन में प्रांतीय अध्यक्ष मंजू खंडेलवाल (काशीडीह, साकची) की अध्यक्षता में आयोजित इस मंथन अधिवेशन के दौरान खुले मंच से सम्मेलन की सदस्यों ने हमारी क्या कमी रह गई है उसे कैसे सुधारा जा सकता है इस पर भी चर्चा करते हुए कई सवाल किये. मंच पर उपस्थित पूर्व राष्ट्रीय तथा झारखंड प्रदेश अध्यक्षों ने सवाल का जवाब एवं सुझाव देते हुए सदस्यों का संदेह दूर किया.

खास बातें

- आगामी 1 अप्रैल से कार्यभार संभाल लेंगी मंजू बगडिया
- खुले मंच से किया गया संगठन की कमियों पर विचार मंथन

खुले मंच कार्यक्रम के बाद पुरस्कार वितरण कार्यक्रम शुरू हुआ. इसमें झारखंड प्रदेश के सभी 54 शाखाओं को अलग-अलग पुरस्कारों से सम्मानित किया गया. राष्ट्रीय अध्यक्ष नीरा बथवाल और प्रांतीय अध्यक्ष मंजू खंडेलवाल ने अपने हाथों से सभी को सम्मानित किया.

शहरी क्षेत्र में जमशेदपुर शाखा को मिला सर्वश्रेष्ठ सम्मान

सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार शहरी क्षेत्र में जमशेदपुर शाखा और ग्रामीण क्षेत्र में जामताड़ा शाखा को मिला. स्व मंजू मेहारिया स्मृति पुरस्कार शहरी क्षेत्र में देवघर शाखा और ग्रामीण क्षेत्र में कतरास शाखा को मिला. इसी प्रकार पांच शहर क्रमशः रांची, चाईबासा, चास, धनबाद, गिरिडीह शाखा को श्रेष्ठ शहरी तथा श्रेष्ठ ग्रामीण क्षेत्र में गोविंदपुर, गम्हरिया पाला जोड़ी को सम्मान मिला. नूतन शाखा में शहरी से दुमका और ग्रामीण से हल्दीपोखर को सम्मानित किया गया. इस दौरान सम्मानित होने वाली महिलाओं में काफी उत्साह देखा गया. कार्यक्रम की अध्यक्षता संभाल रही प्रदेश अध्यक्ष मंजू खंडेलवाल ने बताया कि झारखंड प्रदेश की सभी शाखा अध्यक्षों के द्वारा सभी कार्यों में उत्साह के साथ सहयोग मिला. दूसरे दिन मंच का सफल संचालन प्रांतीय सचिव प्रभा पाड़िया एवं रानी अग्रवाल ने संयुक्त रूप से किया. अंत में धन्यवाद ज्ञापन प्रभा पाड़िया ने दिया. मालूम हो कि अधिवेशन में झारखंड के सभी जिलों से लगभग 250 से अधिक महिलाएं शामिल हुई थी. अधिवेशन शानदार सुनियोजित व्यवस्था के साथ संपन्न हुआ.

तीन स्थानों पर पर्यावरण प्रेमियों का जुटान, मंत्रों से गूंजता रहा नदी तट

जमशेदपुर में मना स्वर्णरेखा महोत्सव, उतारी गई आरती

संवाददाता । जमशेदपुर

युगांतर भारती, स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट और जनसुविधा ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को नदी पूजन कर स्वर्णरेखा महोत्सव मनाया गया. मौके पर विशेष तौर पर पर्यावरणविद् और जमशेदपुर पूर्वी के विधायक सरयू राय मौजूद थे. सोनारी, दोमुहानी स्थित नदी तट पर जनसुविधा ट्रस्ट के सहयोग से मुकुल मिश्रा की देखरेख में, जबकि भुईयांडीह के पांडेय घाट पर मनोज सिंह उज्जैन और बारीडीह स्थित भोजपुर घाट पर विजय नारायण सिंह की देखरेख में नदी पूजन किया गया. पूजन कार्यक्रम में बड़ी संख्या में ट्रस्ट के सदस्यों और पर्यावरण प्रेमियों ने भाग लिया. सभी ने नदी तट पर पंडित के मंत्रोच्चारण के साथ पूजन किया और आरती के साथ पूजन का कार्यक्रम संपन्न किया. पूजन के पश्चात विधायक सरयू राय ने बताया कि यह स्वर्णरेखा महोत्सव की 19वीं वर्षगांठ है. विगत 18 वर्षों से युगांतर भारती और स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के संयुक्त तत्वावधान में नदी पूजन कर स्वर्णरेखा महोत्सव मनाया जा रहा है. उन्होंने कहा कि स्वर्णरेखा नदी की सफाई के लिए ट्रस्ट की ओर से निरंतर प्रयास किया जाता रहा है. इस दिशा में कई कार्य हुए हैं परंतु अभी भी लोगों को जागरूक किये जाने की आवश्यकता है. नदी को साफ सुथरा रखने के लिए, आम जनता में जागरूकता लाने के लिए हम लोग यह महोत्सव मनाते हैं. सोमवार को गांधी घाट में एक गोष्ठी रखी गई है. इसमें नगर, नदी और नागरिक विषय पर चर्चा होगी, ताकि शहर के लोग अपना-अपना दायित्व समझे और नदी को साफ रखने में पहल करें.

कार्यक्रम में यह थे उपस्थित : नदी पूजन कार्यक्रम में मुख्य रूप से स्वर्णरेखा क्षेत्र विकास ट्रस्ट के ट्रस्टी अशोक गोयल, सुबोध श्रीवास्तव, ललन द्विवेदी, अजय सिन्हा, सुर रंजन राय, बृज किशोर पंडित, काजल चौधरी, सर्वेश अधिकारी, श्याम रंजन मंडल, लक्ष्मीनाराण तिवारी, सियाराम ओझा, संजीव आचार्य, कुलविंदर सिंह पन्नु के साथ ही बड़ी संख्या में सामाजिक कार्यकर्ता एवं गणमान्य शामिल थे.

भाजपा ने किया सुंदरकांड पाठ

साकची स्थित जिला भाजपा कार्यालय में रविवार को सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया गया. इस दौरान देश एवं विदेशों में ख्याति प्राप्त पुरोहित पंडित अभिषेक पाठक एवं मानस सत्संग समिति के द्वारा सुंदरकांड का पाठ किया गया. मंडली के मनमोहक भजन प्रस्तुति से जिला कार्यालय राममय हो गया. भाजपा कार्यकर्ता भजनों पर झूमते नजर आए. सुंदरकांड पाठ को लेकर भाजपा की ओर से जिला कार्यालय में आकर्षक पुष्पसज्जा, ध्वज सज्जा एवं विद्युत सज्जा की गई थी. सुंदरकांड के समापन के पश्चात कार्यकर्ताओं एवं आमजनों के बीच प्रसाद के रूप में खिचड़ी भोग एवं चूड़ा-दही, तिलकुट का श्रद्धापूर्वक वितरण किया गया. जिसमें हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया.

दीया, बाती और राम ध्वज का वितरण : सुंदरकांड पाठ में सांसद विद्युत वरण महतो, पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ. दिनेशानंद गोस्वामी, पूर्व सांसद आभा महतो, पूर्व विधायक मेनका सरदार, प्रदेश मंत्री रीता मिश्रा, भाजपा जमशेदपुर महानगर अध्यक्ष गुंजन यादव, जिला परिषद अध्यक्ष बारी मुर्मू, जिप उपाध्यक्ष पंकज सिन्हा समेत पार्टी के तमाम वरीय नेताओं के संग सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता शामिल थे. प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आह्वान पर 22 जनवरी को 'राम ज्योति' के लिए लोगों के बीच निःशुल्क 11 मिट्टी के दीपक, 11 बाती और एक धर्मध्वजा भेंटकर लोगों से घरों एवं प्रतिष्ठानों में दीपोत्सव मनाने का आग्रह किया गया. करीब 15 हजार दीपक, बाती एवं धर्मध्वजा लोगों की भेंट की गई.

7 आइपीएस और 8 आइएफएस के पास अपनी जमीन व फ्लैट नहीं

- सीनियर आइपीएस व आइएफएस के पास करोड़ों की संपत्ति

रवि भारती। रांची

झारखंड कैडर के सीनियर आइपीएस और आइपीएस के पास करोड़ों रुपए की संपत्ति हैं. लेकिन इससे इतर कई ऐसे अफसर भी हैं, जिनके पास संपत्ति के नाम पर कुछ भी नहीं है. न फ्लैट है और न ही जमीन. न ही किसी रिश्तेदार ने कोई संपत्ति गिफ्ट की है. आइपीएस कैडर में 2006 बैच के अफसर नरेश कुमार सिंह के पास कोई संपत्ति नहीं है. इसी तरह 2013 बैच की आइपीएस निधि द्विवेदी के पास भी कोई संपत्ति नहीं हैं. इसके अलावा 2021 बैच के गौरव गोस्वामी, 2020 बैच के गर्ग ऋषभ, 2016 बैच के ऋषभ कुमार झा, 2014 बैच के अमन कुमार और 2012 बैच के अखिलेश बी बरियार के पास भी कोई धन संपत्ति नहीं है.

8 आइएफएस के पास भी जमीन-फ्लैट नहीं : झारखंड कैडर के आठ आइएफएस (भारतीय वन सेवा) के पास अपनी जमीन और फ्लैट नहीं हैं. 2013 बैच के अफसर दिलीप कुमार यादव के पास कोई धन संपत्ति नहीं है. इसी तरह 2015 बैच के अफसहर वेद प्रकाश कंबोज, 2018 बैच के अभिरूप सिन्हा, 2017 बैच के विकास पालीवाल, 2019 बैच के अहमद बेलाल अनवर, 2019 बैच के राहुल मीणा, 2021 बैच के नीतीश कुमार और 2021 बैच के सात्विक के पास भी अपनी जमीन और फ्लैट नहीं है.

28 को जगन्नाथपुर मंदिर के समीप होगा यादव अहिराना मिलन समारोह

संवाददाता। रांची

श्रीकृष्ण विकास परिषद, झारखंड व यादव समाज के प्रमुख सदस्यों की महत्वपूर्ण बैठक रविवार को धुर्वा में हुई, जिसमें रविवार 28 जनवरी को 10 बजे से धुर्वा जगन्नाथपुर मंदिर के समीप पहाड़ स्थान पर ऐतिहासिक यादव अहिराना मिलन समारोह सह वनभोज कार्यक्रम के आयोजन का निर्णय लिया गया. बैठक की अध्यक्षता करते हुए परिषद के मुख्य संरक्षक कैलाश यादव ने सदस्यों को बताया कि समारोह में राज्य भर के 24 जिलों से यादव समाज के प्रतिनिधि सपरिवार शामिल होंगे. यादव ने बताया कि मिलन समारोह के प्रारंभ से पूर्व तमाम लोग भगवान जगन्नाथ स्वामी मंदिर में पूजा -अर्चना करेंगे. इसके बाद मिलन समारोह का विधिवत उद्घाटन किया जाएगा. समारोह में समाज के होनहार बच्चों को पुरस्कृत कर सम्मानित किया जाएगा. समारोह में शामिल होनेवाले सदस्यों के लिए मेवा-मिष्ठान के साथ ही साथ विभिन्न तरह के लजीज भोजन की व्यवस्था परिषद की ओर से की जाएगी. बैठक में अध्यक्ष सुरेश राय, संरक्षक नंदन यादव, रामकुमार यादव, चंद्रिका यादव, सुधीर गोप, उमेश यादव, मैनेजर राय, राम इकबाल चौधरी, मनोज यादव, शंकर यादव, सहित कई गणमान्य मौजूद थे.

प्राण प्रतिष्ठा के दिन चांडिल में होगा भव्य अनुष्ठान

संवाददाता । चांडिल

अयोध्या धाम में 22 जनवरी 2024 को होने वाली रामलला के मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर चांडिल में भी भव्य कार्यक्रम होगा. श्रीश्री 108 खेलाई चंडी बजरंग दल अखाड़ा, चांडिल की ओर से आयोजित होने वाले कार्यक्रम को लेकर रविवार को विवेकानंद केंद्र परिसर में महत्वपूर्ण बैठक हुई. बैठक में श्रीश्री 108 खेलाई चंडी बजरंग दल अखाड़ा, सिंहभूम कॉलेज चांडिल मोड़ पर भव्य समारोह आयोजन करने का निर्णय लिया गया. अनुष्ठान के तहत सुबह नौ बजे से अपराह्न एक बजे तक हवन-पूजन होगा. इसके बाद दो बजे से संध्या छह बजे तक चांडिल बाजार में विशाल व भव्य शोभा यात्रा निकाली जाएगी. शोभा यात्रा के समापन के बाद शाम छह बजे विवेकानंद केंद्र परिसर में महाआरती की जाएगी.

रामायण पर आधारित होगी नृत्य नाटिका

महाआरती के बाद शाम 6.30 बजे से कोलकाता के कलाकार रामायण पर आधारित नृत्य नाटिका का मंचन करेंगे. इसके साथ ही संध्या छह बजे से देर रात तक महाभंडारा का आयोजन किया जाएगा. रामलला के प्राण प्रतिष्ठा के ऐतिहासिक व पवित्र दिन पर चांडिल अनुमंडल क्षेत्र के सभी मठ व मंदिरों में दीप प्रज्वलित करने का निर्णय लिया गया. इस अवसर पर वक्ताओं ने कहा कि 22 जनवरी की तिथि विश्व के इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों से अंकित होगा. लोगों ने कहा कि साढ़े पांच सौ साल पहले से समस्त विश्व के सनातन धर्मावलंबियों को इस महान पवित्र दिन का इंतजार था. बैठक में साधु बांध मठिया मठ के महंत इंद्रनंद सरस्वती, चांडिल के प्रभारी प्रमुख रामकृष्ण महतो, मुखिया मंगल सिंह सरदार, राकेश वर्मा, बनू सिंह, मनोज सिंह, मिथिलेश महतो, आशीष कुंडू, आकाश दास, अनिता पारित आदि राम भक्त उपस्थित थे.

अंतिम सांस तक समाज की सेवा करता रहूंगा : शैलेंद्र

जमशेदपुर। झारखंड राज्य गुरुद्वारा एवं सेंट्रल कमेटी के चेयरमैन सरदार शैलेंद्र सिंह को दिल्ली में अटल तिरंगा सम्मान से सम्मानित किए जाने पर कदमा गुरुद्वारा साहिब में सम्मानित किया गया. कदमा गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, सिख स्त्री सत्संग सभा एवं सिख नौजवान सभा के संयुक्त तत्वावधान में शैलेन्द्र सिंह को शॉल एवं फूलों का गुलदस्ता भेंटकर सम्मानित किया गया. इस मौके पर गुरुद्वारा कमेटी के प्रधान बलदेव सिंह एवं चेयरमैन गुरमीत सिंह एवं ट्रस्टी ताजवीर कलसी ने शैलेंद्र सिंह की सराहना की. सरदार शैलेंद्र सिंह ने कहा कि अंतिम सांस तक समाज और जरूरतमंदों की सेवा करता रहूंगा. यह सम्मान केवल मेरा ही सम्मान नहीं, बल्कि यह संपूर्ण झारखंड का सम्मान है, खास कर उन लोगों का, जिन्होंने समय-समय पर मेरा हर प्रकार से सहयोग किया.

कोडरमा में चंद्रवंशी समाज का चूड़ा दही सह पारिवारिक मिलन समारोह

मरकच्चो(कोडरमा)

अखिल भारतवर्षीय चंद्रवंशी क्षत्रीय महासभा की मरकच्चो प्रखण्ड कमेटी की ओर से मकर संक्रान्ति महापर्व के शुभ अवसर पर नवनिर्मित चंद्रवंशी भवन के प्रांगण में चूड़ा दही सह पारिवारिक मिलन समारोह का आयोजन जिला उपाध्यक्ष पशुपति नाथ की अध्यक्षता एवं प्रखण्ड अध्यक्ष राजेन्द्र राम चंद्रवंशी की संचालन में संपन्न हुआ. इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतवर्षीय चंद्रवंशी क्षत्रीय महासभा के प्रमंडल प्रभारी चंद्रवंशी दीपक कुमार नवीन, विशिष्ठ अतिथि जिला अध्यक्ष प्रवीण रवानी, महासचिव अभिषेक चंद्रवंशी, अति विशिष्ट अतिथि जिला कोषाध्यक्ष मनोहर कुमार ,जिला उपाध्यक्ष चंद्रवंशी महेश भारती, प्रभात राम मुख्य रूप से भाग लिया. कार्यक्रम में सर्व प्रथम अतिथियों को बुके देकर व स्वागत गान प्रस्तुत कर स्वागत किया गया. वही कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि नवीन ने कहा कि राजनीतिक दलों को चंद्रवंशी समाज की सहभागिता बढ़ानी होगीकार्यक्रम में जिला से पवन चंद्रवंशी, सोनू कुमार, राजेश राम, राम जी प्रसाद, अमर नाथ एवं समाज के वरिष्ठ कार्यकर्ता बीरेंद्र राम एवं ओम प्रकाश चंद्रवंशी आदि सैकड़ों की संख्या में चंद्रवंशी समाज के लोगों ने भाग लेकर चूड़ा दही का आनंद लिया.

आक्रोश शिक्षा विभाग के प्रस्ताव के खिलाफ झारखंड प्रजातांत्रिक मंच ने दी आंदोलन की चेतावनी

3712 उर्दू शिक्षकों के पद को खत्म करने के प्रस्ताव का विरोध

संवाददाता। रांची

झारखंड प्रजातांत्रिक मंच ने महागठबंधन सरकार द्वारा रिक्त 3712 उर्दू शिक्षक के पद समाप्त करने का विरोध किया है एवं आंदोलन की धमकी दी है.

मंच की ओर से रविवार को संवाददाता सम्मेलन कर विरोध जताया गया. मेन रोड के उर्दू लाईब्रेरी भवन में रविवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में मंच के संस्थापक सदस्य इमाम सफी ने कहा कि झारखंड सरकार के स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा जारी प्रोन्नति नियमावली 2024 के प्रारूप (ड्राफ्ट) 2 (1) में उल्लेखित है कि उर्दू शिक्षक के पद को मरणशील डाइंग कैडर कर दिया जाएगा. उसके

बाद रिक्त बचे 3712 पदों को सरेंडर कर दिया जाएगा. उन्होंने कहा कि राज्य सरकार का यह कार्य उर्दू विरोधी है, जिसे किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है. यह प्रारूप अविलंब वापस होना चाहिए. यासमीन लाल ने कहा कि सरका और शिक्षा विभाग का यह निर्णय उर्दू भाषी लोगों के साथ अन्याय है. मुख्तार अंसारी ने कहा कि वर्ष 2022 में भी बिना समुचित जांच एवं जानकार लोगों से सुझाव लिए 543 उर्दू स्कूलों का स्टेटस छीन कर सामान्य विद्यालय बना दिया गया. वहीं अब बिहार सरकार 1999 में सृजित हुए 4401 उर्दू शिक्षक के पद, जो सरकार के गलत निर्णय के कारण खाली रह गए. उनमें भी 3712 उर्दू शिक्षक पद को भी खत्म करना सरकार के लिए बड़ी भूल होगी.

उर्दू यूनिट खत्म हुई तो होगा आंदोलनः उर्दू संघ

रांची। झारखंड राज्य उर्दू शिक्षक संघ के केंद्रीय प्रवक्ता शहजाद

अनवर ने संघ की ओर से लिए गये निर्णय की जानकारी दी. कहा कि यदि उर्दू यूनिट खत्म करने की जरा भी कोशिश की गई तो राज्यव्यापी और व्यापक आंदोलन होगा. जिसका बुरा नतीजा आने वाले लोकसभा व विधानसभा चुनाव में भी सामने आयेगा. केंद्रीय महासचिव अमीन अहमद ने कहा कि राज्य सरकार एक साजिश के तहत झारखंड से सभी उर्दू यूनिट को खत्म करना चाहती है. इसकी जिम्मेदारी स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग ने उठा रखा है. इसलिए तरह-तरह के हथकंडे अपना कर उर्दू के सभी यूनिट को ही खत्म करने की साजिश हो रही है. उन्होंने कहा कि झारखंड में अजब हालत हैं, बार-बार उर्दू के खिलाफ साजिश रची जा रही है. सच को सुनने वाला और उसका हल निकालने वाला कोई नहीं है, सरकार खामोश है और अधिकारी बेलगाम होकर उर्दू के खिलाफ साजिश रच रहे हैं.

धनबाद से सिखों का जत्था पटना रवाना

संवाददाता।धनबाद

झरिया विधायक पूर्णिमा नीरज सिंह ने रविवार को स्वयं के खर्चे पर पटना साहिब के लिए धनबाद से तीर्थ यात्रियों के जत्थे को बस से रवाना किया .जत्थे में 40 तीर्थ यात्री पटना साहिब प्रकाश पर्व में शामिल होने जा रहे हैं। इस बाबत पूर्णिमा नीरज सिंह ने बताया कि पिछले दिनों सिख समुदाय के कुछ प्रतिनिधि ने मुलाकात कर तीर्थ यात्रियों को 17 जनवरी को गुरु गोबिंद सिंह के 357 वें प्रकाश पर्व के अवसर पर श्री हरमंदिर साहिब पटना जाने व आने के लिए निजी अथवा सरकारी मदद पहुंचाने का आग्रह किया था. उन्होंने कहा कि सरकारी व्यवस्था में समय लग सकता था.

समय के अभाव को देखते हुए हमने अपनी ओर से उन्हें सुविधा प्रदान की. दूसरी ओर सिख संगत ने

विधायक द्वारा किये गए इस कार्य की सराहना की और उनके आवास पहुंच कर आभार के साथ सरोपा भेंट किया. मौके पर संगत में सुखविंदर सिंह, हरेंद्र सिंह, गुरुचरण सिंह, सत्ती सिंह, संतोख कौर, गुरप्रीत कौर, हरभजन कौर, हरजीत कौर, बेबी कौर, सेली कौर, सुखी कौर मौजूद थे. बताते चलें कि गुरु गोबिंद सिंह सिखों के दसवें गुरू थे. उनका जन्म पौष मास की शुक्ल पक्ष की सप्तमी के दिन 1666 में बिहार के पटना शहर में हुआ था. इनके पिता श्री गुरु तेग बहादुर सिंह सिखों के 9वें गुरू थे. इनके शुरुवाती चार साल पटना में ही बीते. इसके बाद इनका परिवार आनंदपुर साहिब आ गया. इनके पिता ने धर्म परिवर्तन के खिलाफ खुद का बलिदान दे दिया. इसके बाद उनके बेटे गुरु गोबिंद सिंह को 10वां गुरु घोषित किया गया.

कड़कड़ाती ठंड में भी गर्म रहे झामुमो, कांग्रेस और भाजपा के तेवर

झामुमो ने खोला मोर्चा, कहा-राज्य का पैसा मांगने पर केंद्र ईडी का डर दिखाता है

सत्यशरण मिश्रा

रांची। दिसंबर महीने में झारखंड के सत्ताधारी दल झामुमो में खूब हलचल थी. बैठकों के साथ-साथ चुनावी रणनीतियां बनाने का दौर चलता रहा. झामुमो के कार्यकारी अध्यक्ष हेमंत सोरेन पूरे महीने विपक्ष के खिलाफ मोर्चा खोले हुए थे. आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार कार्यक्रम के तहत उन्होंने राज्यभर में दौरे कर लोगों से संवाद किया. भाजपा और केंद्र सरकार पर खूब बरसे. कहा केंद्र हमारा बकाया पैसा दे देता तो राज्य का विकास करते, लेकिन पैसे मांगने पर केंद्र हमें ईडी का डर दिखाता है. वहीं झामुमो महासचिव सुप्रियो भट्टाचार्य ने स्थानीय नीति विधेयक को लेकर राजभवन को कठघरे में खड़ा किया. कांग्रेस सांसद धीरज साहू के बचाव में उतरे. पढ़िए हेमंत सोरेन और सुप्रियो भट्टाचार्य ने साल के अंतमि महीने में क्या-क्या कहा.

हेमंत का मास्टर स्ट्रोक- 50 की उम्र में अजा-अजजा को पेंशन देने की घोषणा

- **29 दिसंबर :** राज्य के अनुसूचित जनजाति और अनुसूचित जाति के व्यक्तियों को अब यूनिवर्सल पेंशन स्कीम के तहत 50 वर्ष की उम्र से पेंशन दी जाएगी. राशन डीलरों का कमीशन बढ़ाने पर भी सरकार जल्द फैसला लेगी. अब हर वर्ष पंचायतों में आपकी योजना, आपकी सरकार, आपके द्वार के शिविर लगेंगे.
- **28 दिसंबर :** हमारी सरकार ने झारखंड के किसानों, मजदूरों, युवाओं, महिलाओं बेरोजगारों सहित सभी वर्ग को सरकार की विभिन्न भावी योजनाओं से जोड़ने का निरंतर प्रयास किया है. आगे भी करती रहेगी. झारखंड में 80 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है. मेरा मानना है कि राज्य का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब हम गांव को मजबूत करेंगे तभी शहर और राज्य मजबूत होगा.
- **27 दिसंबर :** भूमि को लेकर त्रुटियां पूरे राज्य में है. इसका समाधान आने वाले दिनों में किया जाएगा. सरकार ने वर्षों से संघर्ष कर रहे नेतरहाट के लोगों की भूमि को वापस किया है. नेतरहाट फील्ड फायरिंग रेंज की अधिसूचना रद्द की गई. राज्य में कई किसानों की भी भूमि वापस हुई है. भूमि की त्रुटियों को सुधारना आवश्यक है. विश्वास रखें आने वाले समय में इसका समाधान होगा.

- **26 दिसंबर :** जब झारखंड अलग राज्य बना, उस वक्त यहां का सरप्लस बजट हुआ करता था. सरकार का खजाना भरा था. संसाधनों की कोई कमी नहीं थी. फिर भी राज्य पिछड़ता चला गया. गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी यहां के लोगों का पीछा नहीं छोड़ रही थी . लेकिन, पिछले दो दशकों के दौरान इस पर किसी सरकार को इसकी चिंता नहीं थी. राज्य का विकास हाशिये पर चला गया. लेकिन, जब से हमारी सरकार बनी है, तमाम चुनौतियां और विपरीत परिस्थितियों के बीच भी विकास को रफ्तार देने का काम कर रहे हैं और विभिन्न योजनाओं के माध्यम से राज्य वासियों को सशक्त बना रहे हैं.
- **23 दिसंबर :** झारखंड के किसान, श्रमिक, महिला, नौजवान सशक्त होंगे तो राज्य मजबूत होगा. सरकार गांव और ग्रामीणों को सशक्त करने के उदेश्य से योजनाओं का निर्माण और लोगों को योजनाओं का लाभ देने का कार्य कर रही है. आज जनता का अधिकार उनके दरवाजे को खटखटा कर उन तक पहुंचाया जा रहा है. आने वाली पीढ़ी को बेहतर शिक्षा प्रदान करने के उदेश्य से 80 उत्कृष्ट विद्यालय का संचालन प्रारंभिक चरण में हो चुका है. आने वाले वर्षों में राज्य भर में पांच हजार उत्कृष्ट विद्यालय प्रारंभ करने की योजना है.
- **22 दिसंबर :** हमारी सरकार सभी को सामाजिक सुरक्षा के दायरे में लाने के लिए प्रतिबद्ध है. पिछले 20 वर्षों में मात्र 16 लाख लोगों को पेंशन योजना से जोड़ा गया था, जबकि हमारी सरकार महज 4 साल में 36 लाख से ज्यादा बुजुर्गों, विधवाओं और दिव्यांगों को यूनिवर्सल पेंशन स्कीम के माध्यम से पेंशन दे रही है. हमारे पूर्व की सरकारों में लगभग 11 लाख राशन कार्ड अमान्य कर दिए गए थे, जबकि हमारी सरकार ने 20 लाख से ज्यादा हरा राशन कार्ड जारी कर गरीबों को मुफ्त अनाज दे रही है .
- **19 दिसंबर :** केंद्र सरकार ने पात्र वंचित गरीबों के आवास को स्वीकृति नहीं दी, लेकिन हमारी सरकार राज्य के जरूरतमंद आठ लाख लोगों को आवास उपलब्ध कराएगी. हर गरीब का अपना आवास होगा. सरकार ने अबुआ आवास योजना के तहत 8 लाख गरीबों का अपना घर होने के सपने को पूरा करेगी. अगर जरूरत हुई तो योजना का दायरा और भी बढ़ाया जाएगा ताकि कोई भी जरूरतमंद बिना अपना आवास के न रहे. एक-एक पाई इकट्ठा कर जरूरतमंदों को आवास देंगे.
- **18 दिसंबर :** हमारी सरकार ने राज्य में एक बेहतर उद्योग पालिसी बनाई है. सरकार का प्रयास है कि राज्य के विभिन्न क्षेत्रों में अधिक से अधिक उद्योग स्थापित हों. नई उद्योग नीति के तहत लगातार कई अच्छी और विश्वसनीय उद्योग संस्थानों द्वारा झारखंड में निवेश करने की इच्छा जाहिर की है. नई उद्योग नीति के तहत निवेशक अब राज्य में उद्योग स्थापित करने के लिए प्रेरित हो रहे हैं. पिछले कुछ महीनों में कई जाने- माने उद्योग संस्थाओं द्वारा जमशेदपुर सहित अन्य जगहों पर अपने कंपनी का विस्तार किया है.
- **16 दिसंबर :** सावित्रीबाई फूले किशोरी समृद्धि योजना का लाभ परिवार की सभी बेटियों को देने के लिए कैबिनेट की स्वीकृति प्रदान कर दी गई है. अब सभी बेटियों को योजना का लाभ मिलना तय हुआ है. हमने सभी बाध्यता को समाप्त कर दिया. अब बेटियां पढ़ाई नहीं छोड़ेंगी, अब उन्हें उच्च शिक्षा के लिए भी सरकार मदद करेगी. गुरुजी स्टूडेंट क्रेडिट कार्ड योजना के जरिए छात्र-छात्राएं उच्च शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे. सरकार उन्हें 15 लाख रुपए तक का आर्थिक सहयोग देगी. राज्य सरकार अब बच्चों को उच्च शिक्षा में आर्थिक सहयोग के लिए बैंक के सहारे नहीं छोड़ेगी.
- **15 दिसंबर :** महिलाओं की बदौलत हमने लम्बी लड़ाइयां जीती हैं. मुझे इस बात का दु:ख होता है कि कई महिलाएं हाट-बाजार में हड़िया-दारू बेचने का कार्य करती हैं, इससे हमारा समाज पीछे जाएगा और कुछ लोगों ने इसे सुनियोजित व्यापार का माध्यम बना लिया है. मैं उन महिलाओं से कहना चाहूंगा कि राज्य सरकार आपके लिए फूलो झानो आशीर्वाद योजना लेकर आयी है. अब आप अपने माथे पर जो हड़िया-दारू नही बल्कि सरकार की योजना लेकर चलिए फिर देखिएगा आप और समाज कितने मान-सम्मान के साथ आगे बढ़ेगा.
- **13 दिसंबर :** नियुक्ति की योजना तैयार है. कुछ लोग नियुक्ति में व्यवधान डालने में लगे हैं. सरकार ने परीक्षा के लिए भरे जाने वाले आवेदन शुल्क भी खत्म कर दी है. इसकी चिंता युवाओं को नहीं करनी है. पहली बार जेपीएससी के दो-दो परीक्षा हम लोगों ने सफलतापूर्वक लिया और इसमें सफल लोग पदस्थापित भी हो गए हैं. आज 90 प्रतिशत से अधिक लोग इसमें सफल हो रहे हैं और पूर्व में इसके विपरीत अन्य राज्यों के लोग परीक्षा में शामिल हो सफलता प्राप्त करते थे.
- **12 दिसंबर :** ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किए बिना राज्य को सशक्त नहीं बना सकते हैं. यही वजह है कि सरकार गांव और ग्रामीणों के सशक्तिकरण के लिए काम कर रही है. हमारी सरकार विभिन्न माध्यमों से ग्रामीण उद्यमिता और आजीविका को बढ़ावा दे रही है. फूलो-झानो आशीर्वाद योजना के तहत महिलाओं को सम्मानजनक आजीविका से जोड़ने के लिए अब 10 हज़ार रुपए की बजाय 50 हज़ार रुपए देने का निर्णय सरकार ने लिया है .
- **11 दिसंबर :** हमारी सरकार ने आदिवासी-मूलवासी के हक-अधिकार के लिए विधानसभा से 1932 आधारित नियोजन नीति पारित कराया. लेकिन जानबूझकर इसमें कानूनी अड़चन लगा दिया गया, परंतु 1932 आधारित नियोजन नीति के लिए हमारा प्रयास जारी रहेगा.
- **9 दिसंबर :** झारखंड को वर्ष 2025 तक एक ताकतवर राज्य बनाएंगे. पिछले दो दशकों से झारखंड पर पिछड़ेपन का जो टैग लगा था, उसे खत्म करेंगे. हम इस राज्य के लोगों को आर्थिक, सामाजिक तथा शैक्षणिक रूप से इतना सशक्त बनाएंगे कि वे अपने दम पर अपना रास्ता तय कर सकें. जब यहां के लोग मजबूत होंगे तो निश्चित तौर पर राज्य भी मजबूत बनेगा. इसी सोच के साथ हम अपनी नीतियों और योजनाओं को न सिर्फ बना रहे हैं, बल्कि उसे धरातल पर पूरी शक्ति के साथ उतार रहे हैं.
- **8 दिसंबर :** गोड्डा जिला में करीब 800 किमी सड़क का निर्माण हो रहा है. मुझे सूचना मिली कि सड़क निर्माण में गुणवत्ता से समझौता किया जा रहा है. जिला प्रशासन इसपर नजर रखें. खराब कार्य करने वाले संवेदकों को ब्लैकलिस्टेड करें.
- **7 दिसंबर :** केंद्र झारखंड की बकाया राशि का भुगतान नहीं कर रहा है. पहले की डबल इंजन सरकार ने भी इसके लिए कुछ नहीं किया. केंद्र अगर झारखंड का बकाया राशि दे तो राज्य के सभी बेरोजगार युवाओं को 10 लाख तक की राशि व्यवसाय करने के लिए अनुदान में दे सकते हैं.
- **6 दिसंबर :** साजिश के तहत राज्य को लूटा गया है. केंद्र सरकार हमारा 1 लाख 36 हजार करोड़ रुपये दबाकर बैठे है. मांगने पर ईडी का डर दिखाया जाता है. यदि केंद्र से वह पैसा मिल गया होता तो राज्य में विकास की नई ईबादत लिखी जाती, लेकिन मगर हमारी सरकार डरने वालों में से नहीं है. हम केंद्र सरकार से मुकाबले को तैयार हैं और अपना हक लेकर रहेंगे.
- **5 दिसंबर :** हमने माइका पॉलिसी बनाई. इससे जुड़ी समस्या का निदान शुरू कर दिया गया, लेकिन कुछ षड्यंत्रकारी लोग इसपर पानी फेरना शुरू कर दिए हैं. उनलोगों ने यह हवा भी उड़ा दी कि कोडरमा के अभ्रख में यूरेनियम का तत्व पाया जाता है. जिसके बाद अभ्रख की जांच शुरू कर दी गई है. ये षड्यंत्रकारी लोग कोडरमा में अभ्रख का निदान नहीं करने देना चाहते हैं. ये लोग बने हुए काम को बिगाड़ना चाहते हैं और गलत तरीके से जेब भरना चाहते हैं. हम इसका भी रास्ता निकालेंगे.

सुप्रियो ने कहा- स्थानीयता मुद्दे पर फैलाया जा रहा है भ्रम

- **16 दिसंबर :** 2022 में विधानसभा ने सर्वसम्मति से पारित करा कर हमने दो महत्वपूर्ण विधेयक राजभवन को भेजा था, जिसमें स्थानीयता का मुद्दा और सरना धर्म कोड विधेयक था. विधेयक पर राजभवन से मिले सलाह से बहुत कुछ संदेश मिल रहा है. कई राज्यों में यह नीति वहां के स्थानीय निवासियों को थर्ड और फोर्थ ग्रेड में जिला स्तर पर नियुक्ति सुनिश्चित कर रहा है. राज्यपाल ने इसमें एक पेच फंसाया है कि पांच साल के लिए प्राथमिकता का प्रावधान करें. फिर उसकी समीक्षा करें. यह नया शिगूफा है. लोगों के बीच भ्रम फैलाने की कोशिश है.
- **9 दिसंबर :** राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों पर आईटी रेड को लेकर कई प्रकार की बातें हो रही हैं. इस मामले में जब तक आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आ जाती तबतक कुछ भी कहना जल्दबाजी है. मगर भाजपा वाले लगातार अनाप-सनाप बोल रहे हैं. आईटी विभाग का यह रुटीन वर्क है. इससे पहले किसी उद्योगपति के यहां छापेमारी नहीं हुई है क्या? पैसा कहां से आया? किसका पैसा है? आईटी द्वारा यह सब पता लगा लिया जाएगा. भाजपा वालों के पेट में क्यों दर्द हो रहा है.
- **1 दिसंबर :** केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह बीएसएफ के स्थापना दिवस कार्यक्रम में शामिल होने आये थे, लेकिन उनके दौरे के दौरान दो दिनों तक कैंप में पूरी तरह राजनीतिक कार्यकर्ताओं का जमावड़ा लगा हुआ था. बेहतर होता कि वह किसी सिविल लैंड में रहते.

दिसंबर में कभी आक्रामक तो कभी बचाव की मुद्रा में दिखी कांग्रेस

रांची। दिसंबर महीने में कांग्रेस पार्टी कभी आक्रामक तो कभी खुद को डिफेंस करती नजर आई. संसद की सुरक्षा में चूक को लेकर कांग्रेस ने केंद्र सरकार और भाजपा को घेरा, वहीं राज्यसभा सांसद धीरज साहू के ठिकानों पर आईटी रेड में मिले करोड़ों रुपये के मामले में कांग्रेस अपना बचाव करती दिखी. ईडी की कार्रवाई को लेकर भी कांग्रेस ने मोदी सरकार को घेरा, कहा केंद्र सरकार ईडी का डर दिखाकर विपक्षियों को परेशान कर रही है. पढ़िये दिसंबर महीने में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष राजेश ठाकुर और कांग्रेस विधायक दल के नेता आलमगीर आलम के दिये गये 12 बयान.

केंद्र की गलत नीतियों के कारण लोग परेशान, दिखाया जा रहा है ईडी का डर, कांग्रेस ही देश को बचाएगी : राजेश ठाकुर

- **31 दिसंबर :** केंद्र सरकार की गलत नीतियों के कारण लोग परेशान हैं. धर्म की चाशनी बनाकर लोगों को लड़ाया जा रहा है. देश खतरनाक दौर से गुजर रहा है. केंद्र सरकार विपक्षियों को ईडी का डर दिखाकर परेशान कर रही है. देश को कांग्रेस पार्टी ने बनाया है और इसे बचाने की जिम्मेदारी भी कांग्रेस की है.
- **25 दिसंबर :** भारत जोड़ो यात्रा से लोगों में कांग्रेस के प्रति आस्था बढ़ी है. यही वजह है कि आज बड़ी संख्या में महिलाएं पार्टी का दामन थाम रही हैं. कांग्रेस पार्टी है जिसने देश को पहली महिला प्रधानमंत्री दिया. कांग्रेस ने ही देश में पहली महिला राष्ट्रपति और लोकसभा अध्यक्ष बनाया.
- **22 दिसंबर :** 27 फरवरी 1933 को जर्मनी पार्लियामेंट में आग लगी थी. अगले ही दिन हिटलर की तानाशाही का आगाज हुआ. आज हिंदुस्तान में इसी इतिहास को दोहराने की शुरुआत हुई है. 13 दिसंबर को संसद में सुरक्षा के साथ खिलवाड़ हुआ और भाजपा सांसद की संलिप्तता पर सवाल पूछे जाने पर यहां भी तानाशाही की शुरुआत हुई और सवाल पूछने वाले 145 सांसदों को निलंबित कर दिया गया. विपक्ष की आवाज को सदन में दबाने का प्रयास किया जा रहा है, भाजपा हिटलरशाही से देश की संसद को चलाना चाहती है.
- **21 दिसंबर :** मोदी सरकार किसी भी स्तर पर जाकर लोकतंत्र की हत्या करना चाहती है. विपक्ष के सांसदों को लोकसभा की कार्यवाही से सस्पेंड करना यही दर्शाता है. केंद्र सरकार लोकतांत्रिक मानदंडों को कूडेदान में फेंक रही है, लेकिन कांग्रेस पूरी मजबूती के साथ लोकतंत्र को बचाने का काम करेगी.
- **18 दिसंबर :** आज देश खतरनाक दौर से गुजर रहा है. अल्पसंख्यकों को बुरी नजर से देखा जा रहा है. केंद्र सरकार अल्पसंख्यकों को पूछ नहीं रही है. देश में नफरत बढ़ाई जा रही है. ऐसे में हम लोगों को एक होने की जरूरत है.
- **14 दिसंबर :** संसद में हुई चूक की घटना से मोदी की गारंटी एक बार फिर फेल हो गई है. इस गंभीर मामले पर भी गृहमंत्री का बयान देने से इनकार करना इस बात को बताता है कि राष्ट्रवाद का ढोंग रचने वाली भाजपा राष्ट्र की सुरक्षा पर कितनी गंभीर है. गृहमंत्री लगातार देश को संभालने में असफल साबित हो रहे हैं वे अविलंब इस्तीफा दें. साथ ही भाजपा सांसद प्रताप सिम्हा को तत्काल गिरफ्तार किया जाए, क्योंकि उन्हीं की अनुशंसा पर युवकों को संसद दीर्घा के लिए पास निर्गत किया गया था.
- **9 दिसंबर :** धीरज साहू के यहां से बरामद नोटों को लेकर प्रधानमंत्री ने ट्विट किया है. पीएम को सोशल मीडिया पर यह भी बताना चाहिए की नीरव मोदी और ललित मोदी कितने हजार करोड़ लेकर देश से भागे हैं. पीएम एक छापे पर सोशल मीडिया पर बड़ी-बड़ी बातें कर रहे हैं. मीडिया की खबरों से प्रधानमंत्री अगर आधिकारिक बात करने लगें तो यह दुर्भाग्यपूर्ण

स्थिति है. एजेंसी को अपना काम करने देना चाहिए उसके बाद ही कोई प्रतिक्रिया देनी चाहिए.

धीरज बड़े बिजनेसमैन हैं,कांग्रेस बचाव नहीं कर रही : आलमगीर

- **22 दिसंबर :** धनबाद में बढ़ती आपराधिक घटनाओं पर सरकार की नजर है. सरकार इन घटनाओं की समीक्षा करेगी, उसके बाद ठोस कदम उठाये जाएंगे.
- **19 दिसंबर :** पिछली सरकार ने एक प्रखंड में चार-चार पंचायत स्वयंसेवकों को बहाल कर लिया था. उनकी नियुक्ति का कोई रिकॉर्ड प्रखंडों में नहीं है. सरकार उन्हें रेगुलराइज करने को लेकर चिंतन कर रही है.
- **18 दिसंबर :** झारखंड के 16 जिलों में होमगार्ड बहाली की प्रक्रिया पूरी कर ली गई है. बाकी बचे जिलों में बहाली की प्रक्रिया चल रही है, जल्द ही सभी जिलों में बहाली हो जाएगी.
- **11 दिसंबर :** राज्यसभा सांसद धीरज साहू बहुत बड़े बिजनसमैन हैं. उनका एक नहीं कई स्टेट में बिजनेस चल रहा है. आईटी अपना काम कर रही है. कांग्रेस किसी का बचाव नहीं कर रही है. धीरज साहू का नाम कांग्रेस से जुड़ा है इसलिए भाजपा उनका नाम कुछ ज्यादा ही उछाल रही है.

- **1 दिसंबर :** ग्रामीण इलाकों में कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए प्रथम चरण में 15 हजार किलोमीटर सड़कों की मरम्मत हो रही है. 20 सालों में किसी सरकार ने ऐसा नहीं किया. गठबंधन की सरकार की यह सोच है कि हर गांव और शहर एक दूसरे से जुड़ सकें, ताकी ग्रामीण इलाकों के किसानों को उपज का सही दाम मिल सके.

आईटी रेड पर भाजपा ने कांग्रेस- झामुमो को सड़क से लेकर सदन तक घेरा

रांची : झारखंड में दिसंबर महीने में कड़कड़ाती ठंड थी, लेकिन सियासी पारा चढ़ा हुआ था. ईडी, भ्रष्टाचार, अपराध और सरकारी कर्मियों के आंदोलन जैसे मुद्दों पर प्रदेश की विपक्षी पार्टी लगातार सरकार पर हमलावर रही. मुख्य रूप से मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन और राज्यसभा सांसद धीरज साहू दिसंबर में भाजपा के निशाने पर रहे. आईटी की रेड में धीरज साहू के ठिकानों से पकड़े गये करोड़ों रुपये के मुद्दे पर भाजपा ने सड़क से सदन तक कांग्रेस और झामुमो को घेरा. वहीं ईडी के समन को लेकर भाजपा ने हेमंत सोरेन पर हमले किये. दिसंबर महीने में विधानसभा का शीतकालीन सत्र भी हुआ. सदन में भी भाजपा ने सरकार को जोरदार तरीके से घेरा. बाबूलाल मरांडी ने कहा कि उन्हें स्पीकर ने सदन में बोलने नहीं दिया. इसपर भी नया विवाद छिड़ा और सदन के अंदर और बाहर खूब हंगामा हुआ. भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष और भाजपा विधायक दल के नेता अमर बाउरी ने दिसंबर में कई बयान दिए...

हेमंत ईवीएम से ही भारी बहुमत से जीते, अब उन्हें उसी से डर लग रहा है, जनता लूट कथा को पूरी तरह जान चुकी है : बाबूलाल

- **29 दिसंबर :** जो हेमंत सोरेन ईवीएम से भारी बहुमत चुनाव जीते अब उन्हें ईवीएम से डर लग रहा है. इन्हें अब बैलेट पेपर चाहिए ताकि अपने भाड़े के गुंडे-मवालियों से लूटपाट और बोगस वोटिंग करा सकें. ईवीएम से नहीं जनता के गुस्से से डरिये जो आपके चार सालों के लूट कथा को भली भांति जान चुकी है.
- **28 दिसंबर :** हेमंत सरकार काम करने में नहीं कमाने में व्यस्त है। राज्य सरकार के संरक्षण में अवैध खनन कारोबार किया जा रहा है, कानून व्यवस्था ध्वस्त है, छोटे-छोटे उद्यमियों को धमकी दी जा रही है। केंद्र सरकार झारखंड की जनता को हरसंभव सहयोग कर रही है, लेकिन वित्तीय कुप्रबंधन के कारण हेमंत बजट की राशि खत्म करने में भी असमर्थ हैं.

- **27 दिसंबर :** नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो की रिपोर्ट के मुताबिक झारखंड में 2022 में 45 लड़के और 125 लड़कियों की तस्करी हुई है. इसमें 33 लड़के और 96 लड़कियां नाबालिक हैं, जबकि 18 वर्ष या उससे ऊपर के 10 लड़के और 29 लड़कियों की तस्करी हुई है. सीएम को सड़कों में चलते समय क्या बेकसूर जनता का पड़ा खून नहीं दिखता है. उनकी आंखों के सामने बच्चियों के साथ होने वाली अभद्र हरकतों से उनकी आंखें नम नहीं होती हैं क्या.
- **24 दिसंबर :** होटवार जेल में ईडी के केश में बंद हेमंत सोरेन के कमाउ चेलों को नये जेल सुपरिटेनडेंट राबर्ट बेसरा की सख़्ती पच नहीं रही है. उनकी सख्ती से सरकारी मेहमानों को जेल में दिन में ही तारे दिखाई दे रहे हैं. खबर है कि चेलों के दबाव में राबर्ट बेसरा को दूसरे जगह भेजवा कर उनकी जगह किसी सिंह जी को लाने की षड्यंत्रकारी योजना बन रही है.
- **23 दिसंबर :** हेमंत सोरेन सरकार से युवाओं का धैर्य समाप्त हो चुका है. अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने पर लाठी-डंडों के बलबूते उनकी आवाज को दबाना आम बात हो गयी है, मगर अब झारखंड के कर्णधार युवा जाग चुके हैं. लगता हैं अपने खिलाफ उठते युवाओं की आवाज सुन महठगबंधन की सरकार थरथरा गयी है. हेमंत सोरेन जितना युवाओं की आवाज को दबाने की कोशिश करेंगे उससे कहीं अधिक गति से झारखंड की जनता 2024 में उनको मुंहतोड़ जवाब देगी.
- **22 दिसंबर :** मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ठीक ही कह रहे हैं कि भ्रष्टाचार और लूट जो लम्बी रेखा उन्होंने खिंची है उसे कोई पार नहीं कर सकता. हेमंत सोरेन आगे कई और ऐसा रिकॉर्ड बनाकर गिनीज बुक में नाम लिखाने वाले हैं, जो आजाद भारत के इतिहास में किसी मुख्यमंत्री ने न तो बनाया है और न ही डर के मारे आगे कभी कोई सपने में भी बनाने की सोचेगा.
- **21 दिसंबर :** राज्य की भाजपा सरकार ने अपने कार्यकाल में हाई स्कूल शिक्षकों के 17786 पदों का सृजन कर दिया गया था, लेकिन 4 साल पूरे होने के बावजूद हेमंत सरकार ने नियुक्ति प्रक्रिया में कोई भी सक्रिय कदम नहीं उठाया है. यह सरकार की रोजगार व छात्र विरोधी मानसिकता को दर्शाता है.
- **20 दिसंबर :** विधानसभा अध्यक्ष रबींद्रनाथ महतो ने आज आसन की गरिमा के विपरित व्यवहार करते हुए मुझे सदन में बोलने का अवसर नहीं दिया. राजनीतिक पूर्वाग्रह से प्रेरित विधानसभा अध्यक्ष सिर्फ मेरी नहीं, बल्कि झारखंड की जनता के आवाज को दबाने का प्रयास कर रहे हैं. उनका यह निम्नस्तरीय आचरण लोकतंत्र के लिए घातक है. मैं इसपर कड़ी आपत्ति दर्ज करता हूं.
- **19 दिसंबर :** तृणमूल कांग्रेस के सांसद ने आज संसदीय गरिमा के विपरित व्यवहार कर देश के उप राष्ट्रपति का उपहास किया। जब सांसद उप राष्ट्रपति का मजाक उड़ा रहे थे, तब शहजादे राहुल गांधी मना करने की बजाय मजे से मोबाइल में वीडियो बना रहे थे. ऐसी निम्न स्तरीय हरकत से राहुल गांधी ने एक बार फिर अपनी मानसिक अपरिपक्वता का परिचय दिया है.
- **18 दिसंबर :** झारखंड की गरीब जनता को महीनों से राशन के लाले पड़े हैं। राज्य में राशन वितरण के नाम पर प्रदेश सरकार महज खानापूर्ति कर रही है। हेमंत सोरेन और उनके अधिकारी केंद्र सरकार द्वारा गरीबों को भेजी जा रही अनाज भी डकार ले रहे हैं। जनता इनसे दाने-दाने का हिसाब लेगी।
- **17 दिसंबर :** भ्रष्टाचार की नदी हमेशा उपर से नीचे की ओर बहती है. देखियेगा झारखंड की सत्ता चोर-बेईमानों के हाथ से निकलकर किसी ईमानदार शासक के हाथ में आयेगी. उसके बाद यही अंगुलीमाल डाकू बने फिर रहे लोग बाल्मिकी राम भक्त बनकर रामायण की रचना करते नजर आयेंगे.
- **16 दिसंबर :** महिला विरोधी हेमंत सरकार को जवाब देना होगा कि प्रदेश का संचालन किनके हाथों में हैं. दुष्कर्मियों के हाथ में, या दुष्कर्म को बढ़ावा देने वालों के हाथ में. आधिकारिक आंकड़े के अनुसार वर्ष 2020 में दुष्कर्म की कुल 1794 घटनाएं, 2021 में 1617 घटनाएं और 2022 में 1612 घटनाएं हुई हैं. इन तीन वर्षों का औसत निकाला जाए तो तकरीबन पांच महिलाएं प्रतिदिन दुष्कर्म का शिकार हो रही हैं.
- **14 दिसंबर :** याद करिए वो दिन जब हेमंत सोरेन ने सुरंग में फंसे मजदूरों के नाम पर गंदी राजनीति कर के सुर्खियां बटोरने का कुत्सित प्रयास किया था। क्रेडिटखोरी की बुरी लत से मजबूर हेमंत सोरेन ने मजदूरों की सहायता के लिए मीडिया में बड़े-बड़े दावे किए थे, मजदूरों के गांव जाने तक की घोषणा कर दी थी। आज बेचारे मजदूर रोजगार की आस देख रहे हैं, लेकिन हेमंत सरकार के पास उनकी सुध लेने तक का समय नहीं है.
- **12 दिसंबर :** जो व्यक्ति गले तक आकंठ भ्रष्टाचार में डूबा हुआ है. जो दलाल, बिचौलियों, अपराधियों और भ्रष्ट अफसरों का संरक्षक हो उस व्यक्ति से मेरा मुलाकात करना कतई संभव नहीं है। कुछ लोग निराशा- हताशा में ऐसी बातें प्रसारित कर रहे हैं। ऐसी बातों का कोई औचित्य, आधार नहीं है.
- **11 दिसंबर :** बहुचर्चित भूमि घोटाला मामले में ईडी ने मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को छठा सम्मन भी जारी कर दिया है. हेमंत सोरेन के भ्रष्टाचार के कारण झारखंड इन दिनों पूरे देश में चर्चा का केंद्र बिंदु है. हमारे राज्य की साख भी दांव पर लगी है. उम्मीद है कि इस बार हेमंत सोरेन अपने संवैधानिक पद का और कानून का सम्मान करते हुए जांच एजेंसी के समक्ष उपस्थित होकर अपना पक्ष अवश्य रखेंगे.
- **10 दिसंबर :** भ्रष्ट नेताओं को समझना होगा कि फोन ना उठाने से, बहानेबाजी कर पल्ला झाड़ लेने से बात नहीं बनेगी। जब जनता का माल लूटा है तो विधिसम्मत कार्रवाई होगी ही. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी है एक भी भ्रष्टाचारी बख्शा नहीं जाएगा.
- **9 दिसंबर :** कांग्रेस सांसद धीरज साहू के यहां मिले नोटों की गड्डी को देख कर सिर्फ अनुमान लगाया जा सकता है कि अगर एक सांसद के पास इतने पैसे हैं, तो 60 सालों में कांग्रेस ने जनता का कितना पैसा चुराया और दबाया होगा. कांग्रेस पार्टी और करप्शन का ये अटूट रिश्ता अब जनता के सामने एक एक करके उजागर होगा, ये मोदी की गारंटी है.
- **8 दिसंबर :** कांग्रेस सांसद धीरज साहू के ठिकानों से अरबों रुपये नगद बरामद होना कोई सामान्य घटना नहीं है। इतनी बड़ी रकम किसी एक व्यक्ति की नहीं हो सकती. हमें अंदेशा है कि जब्त की गई अरबों रुपये की राशि में मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन का भी हिस्सा है.
- **7 दिसंबर :** हेमंत सोरेन जबसे मुख्यमंत्री बने हैं उन्होंने विपक्षी पार्टी के कार्यकर्ताओं के खिलाफ हिंसा को बढ़ावा दिया है। NCRB के आंकड़े इस तथ्य की पुष्टि भी करते हैं, क्योंकि पिछले साल राजनीतिक रंजिश की वजह से सबसे अधिक हत्याएं झारखंड में ही हुई हैं। हेमंत और उनके मंत्रियों ने भड़काऊ, उत्तेजित बयान देकर राजनीतिक कार्यकर्ताओं के खिलाफ माहौल तैयार किया है।
- **5 दिसंबर :** देश के प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नल जल योजना के माध्यम से पेयजल उपलब्ध कराने के लिए भारत सरकार अगस्त 2019 से हर घर जल योजना चला रही है, लेकिन राज्य सरकार की लापरवाही के चलते प्रदेश में सिर्फ 45 .97% ग्रामीण परिवारों तक ही नल जल योजना का लाभ पहुंचा है. राज्य में 61.77 लाख ग्रामीण परिवार हैं,जिसमें मात्र 28 .40 लाख परिवार तक ही नल जल योजना पहुंची है. शेष बचे 33 .37 लाख परिवार आज भी पानी के लिए जूझ रहे हैं.
- **4 दिसंबर :** झारखंड सरकार का अब बस एक ही काम बचा है अपराधियों और दलालों के मार्फत वसूली. घोटालों की ये हेमंत सरकार दिल्ली तक जाकर जांच को बाधित करने का प्रयास कर रही है. खबर है कि विजय हांसदा मामले में पंकज मिश्रा सीबीआई जांच रुकवाने के लिए सुप्रीम कोर्ट गए थे. सुप्रीम कोर्ट ने उनको तत्काल राहत देने से मना कर दिया है.

कहां गए हेमंत के वादे, सब चुनावी घोषणा पत्र में सिमट कर रह गए, अब झामुमो-कांग्रेस की विदाई तय है : अमर बाउरी

- 30 दिसंबर : हेमंत सोरेन ने अपने चुनावी घोषणा पत्र में पांच लाख नौकरी देने, सात हजार रुपये प्रति माह बेरोजगारी भत्ता देने, तीन लाख रुपये का आवास देने, अनुबंध कर्मियों को स्थायीकरण करने सहित 1932 के खतियान के आधार पर नियोजन नीति बनाकर बहाली करने, पेंशन की राशि तीन हजार करने एवं चूल्हा खर्च दो हजार प्रतिमाह जैसे कई वादे किये थे. यह वादे सिर्फ चुनावी मंच और घोषणापत्र में सिमट कर रह गए.
- 27 दिसंबर : झूठ की बुनियाद पर टिकी इस हेमंत सरकार से झारखंड की जनता को जल्द मुक्ति मिलने वाली है. झामुमो-कांग्रेस-राजद की विदाई तय है . झारखंड को 2024 में एक सशक्त, स्पष्ट नीति व नीयत वाली सरकार मिलेगी जो सिर्फ झारखंडियों को नियोजित करेगी. लूट और झूठ का अब अंत होगा.
- 21 दिसंबर : झारखंड में लोकतंत्र नहीं ठोकतंत्र है ! हजारों पंचायत स्वयंसेवक शांतिपूर्ण प्रदर्शन कर रहे थे, लेकिन ठगबंधन सरकार ने पुलिस को फिर से सामने कर अपनी दमनकारी नीतियों को प्रदर्शित किया. इस निर्मम लाठीचार्ज ने युवाओ के प्रति गठबंधन सरकार की नफरती सोच की पोल खोल दी है. पिछले 4 महीनों से अपने हक के लिए आंदोलन कर रहे हजारों झारखंडी पंचायत स्वयं सेवकों पर एक बार फिर से हेमंत सरकार ने लाठियां बरसाने का काम किया है. यह कायरतापूर्ण और दुखद है, जनता इसका जवाब 2024 में जरूर देगी.
- 21 दिसंबर : झामुमो-कांग्रेस-राजद सरकार में बाबूलाल मरांडी का खौफ है. डर इतना है कि बाबूलाल को विधानसभा में एक बार बोलने तक का मौका नहीं दिया गया. समय बलवान होता है, इंतजार करें.
- 19 दिसंबर : विधानसभा में युवाओं को नियोजित करने की मांग को लेकर कार्य स्थगन लाया गया था. जब इस मुद्दे पर चर्चा करने का दबाव सरकार पर बनाया गया तब हमारे विधायकों को मार्शल आउट कर दिया गया. ऐसे एजेंडावादी क्रियाकलाप का हिस्सा विपक्ष नहीं बन सकता. इसलिए भाजपा ने आज सदन के बहिष्कार का फैसला लिया.
- 19 दिसंबर : राज्य का हर वर्ग परेशान है. पंचायत सचिवालय स्वयंसेवक आंदोलनरत हैं. अपने हक व अधिकार के लिए झारखंड के दिव्यांग जन आंदोलन कर रहे हैं. जेटेट सफल सहायक अध्यापक सड़कों पर लगातार संघर्ष कर रहे है. सरकार चुप क्यों है. सरकार उनसे बात करना भी जरूरी नहीं समझती.
- 18 दिसंबर : जब शासन निकम्मी हो तो इसका दुष्प्रभाव पुलिस प्रशासन पर पड़ता है. लचर पुलिसिंग के कारण पांच साल में झारखंड में दुष्कर्म के 14,162 मामले दर्ज हुए. इसमें से 8000 केस की जांच समय पर पूरी करने में पुलिस फेल रही. अपराधियों को पुलिस का डर ही नहीं है. सोचिए इन 8000 महिलाओं की स्थिति आज क्या होगी. कितनी शर्म की बात है कि पुलिस रिपोर्ट तक दाखिल नहीं कर पाती और बलात्कारी खुलेआम घूमते हैं.
- 16 दिसंबर : सरकार आपके द्वार के नाम पर सिर्फ पिकनिक हो रहा है. स्कूली बच्चों को न पोशाक मिल रही है, न छात्रवृति और न स्कूल किट. तन से स्वेटर और थाली से अंडा-फल गायब है. बच्चों को न साइकिल का पैसा मिल रहा है ना सावित्रीबाई फुले योजना का लाभ, लेकिन सरकार आपके द्वार कार्यक्रमों में शिविर लगाकर मीट-भात खाया जा रहा है.
- 15 दिसंबर : इस युवा विरोधी झारखंड सरकार के कुकृत्यों से बेहाल राज्य के युवा एक बार फिर आंदोलनरत हैं. छात्र जेएसएसी की कार्यशैली से काफी नाराज हैं. एजेंसी समय पर परीक्षा नहीं ले पा रही है. रिस्पॉन्स शीट जारी नहीं किया जा रहा है. परीक्षा लेने और ऑन्सर की जारी करने में काफी विसंगतियां हो रही है. पढ़ाई-लिखाई छोड़ युवाओं के पास अब और क्या विकल्प बचा है.
- 12 दिसंबर : झारखंड से दूसरे राज्य में हर साल 33 हजार लड़कियों की मानव तस्करी हो रही है.

इनमें आदिवासी समाज की 98% युवतियां हैं. भ्रष्टाचारी झामुमो-कांग्रेस-राजद सरकार को अपने कुकृत्यों [illegible] गंभीर समस्या [illegible] फिलहाल [illegible] मौका मिल [illegible]

- 10 दिसंबर : बेड़ा गर्क हो गया है हमारे झारखंड का. एक साल में 652 बच्चे, 743 बच्चियां लापता हो गये. एक साल में 43 लड़के और 125 लड़कियों की तस्करी हुई. जानकारी के मुताबिक झारखंड में पहले सीआईडी की ओर से लापता बच्चों की खोज को लेकर ऑपरेशन मुस्कान चलाया गया था. फिलहाल चार-पांच वर्षों से यह अभियान भी बंद है. आखिर कौन सुनेगा.

न्याय यात्रा से उठते कुछ सवाल

राहुल गांधी की दूसरी भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू हो चुकी है. ठीक चुनावों की गहमागहमी के बीच इस यात्रा को ले कर देश भर में अलग-अलग तरह की बातें की जा रही हैं, लेकिन माना जाता है कि राजनीति में जनता के बीच रहने वाले को हमेशा ही लाभ मिलता है, वह लाभ कई स्तरों का होता है. भारत जोड़ो यात्रा ने एक ओर जहां राहुल गांधी की छवि में बदलाव किया, वहीं भारत में लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता और असमानता के बढ़ते असर को जेरेबहस ला दिया. दूसरी यात्रा न्याय के लिए है यानी एक ऐसे दौर में जब सियासत चरम पर है, इस यात्रा को ले कर बहस तेज है. राहुल गांधी की न्याय यात्रा मणिपुर से निकालने का एक खास मकसद है. पिछले साल के मई महीने से मणिपुर अशांत है. विपक्ष के कई नेता मणिपुर जाकर हालात देख चुके हैं. खुद राहुल गांधी भी वहां एक बार जाकर पीड़ितों से मिलकर आए हैं. उन्होंने संसद में बताया भी था कि किस तरह मणिपुर में अत्याचार हो रहा है. वहां महिलाओं, बच्चों और हिंसा से पीड़ित लोगों के कितने बुरे हाल हैं.मणिपुर पर अपनी पीड़ा व्यक्त करने के लिए राहुल गांधी ने संसद में भारत माता की हत्या वाला बयान भी दिया था. जिस पर उन्हें लोकसभा अध्यक्ष ने टोका था और आगे से ऐसा न करने की नसीहत दी थी. हालांकि राहुल गांधी जिस संदर्भ में यह उदाहरण दे रहे थे, वह गलत नहीं था. नेहरूजी ने भी यही बताया है कि भारत माता का मतलब भारत के लोग, यहां की नदियां, जंगल, खेत और पहाड़ हैं. इनमें से किसी का भी शोषण हो, किसी का भी हक मारा जाए, तो वह सीधे भारत की आत्मा पर, भारत मां पर प्रहार होता है. भारत मां की मूर्ति बनाकर उसकी पूजा करने से देश मजबूत नहीं होगा, बल्कि यहां के लोगों को सशक्त करने से देश मजबूत होगा. हालांकि मौजूदा केंद्र सरकार के विचार इस बारे में शायद अलग हैं. इसलिए प्रधानमंत्री मोदी ने बड़ी मुश्किल से संसद में मणिपुर पर दो-तीन पंक्तियों का बयान दिया था, लेकिन उसके अलावा न वे मणिपुर खुद गए न कोई ऐसा कदम उठाया, जिससे यह संदेश जाए कि सरकार को मणिपुर के लोगों की भी उतनी ही फिक्र है, जितनी राम मंदिर की है या वाइब्रेंट गुजरात के आयोजन की. मणिपुर में कानून व्यवस्था या सुरक्षा के नाम पर अगर कांग्रेस के कार्यक्रम को मंजूरी नहीं मिल रही थी, तो इसका साफ मतलब है कि मणिपुर में भाजपा सरकार हालात सामान्य करने में नाकाम रही है. विपक्ष इसी तर्क के आधार पर बार-बार मुख्यमंत्री की बर्खास्तगी की मांग करता रहा है. लेकिन भाजपा न विपक्ष की मांग सुन रही है, न मणिपुर के लोगों की गुहार. भाजपा सरकार जब खुद विपक्ष के एक कार्यक्रम को सुरक्षा कारणों से अनुमति नहीं दे पा रही थी, तो यह समझा जा सकता है कि राज्य में अब हालात उसके काबू में नहीं हैं. राहुल गांधी मणिपुर से इस यात्रा को उस धरती से आरंभ किया है, जहां इस वक्त देश सबसे अधिक नाइंसाफी देख रहा है.

> राहुल गांधी की न्याय यात्रा मणिपुर से निकालने का एक खास मकसद है. पिछले साल के मई महीने से मणिपुर अशांत है. विपक्ष के कई नेता मणिपुर जाकर हालात देख चुके हैं. खुद राहुल गांधी भी वहां एक बार जाकर पीड़ितों से मिलकर आए हैं.

सुभाषित

न चोरहार्यं न राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धति एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम् ।।

विद्या धन सभी धनों में प्रधान धन है. इसे न ही कोई चोर चुरा सकता है, न ही राजा छीन सकता है, न ही इसको संभालना मुश्किल है और न ही इसका भाइयो में बंटवारा होता है. यह खर्च करने से बढ़ने वाला धन हमारी विद्या है, जो सभी धनों से श्रेष्ठ है.

अब मुसलमानों को भी साधने में जुटी भाजपा

देश लोकसभा चुनाव की ओर बढ़ रहा है और भाजपा चुनावी मोड में आ चुकी है. एक तरफ अयोध्या में राम मंदिर में रामलला को विराजमान करने की तैयारियां चल रहीं, तो वहीं दूसरी तरफ भाजपा अब मुस्लिमों को कनेक्ट करने की रणनीति पर भी काम कर रही है. भाजपा ने नया नारा भी दे दिया– न दूरी है, न खाई है... मोदी हमारा भाई है.

• देश-काल

बृजेंद्र दूबे

भाजपा राम मंदिर में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के जरिए हिंदुत्व की पॉलिटिक्स को धार देने में जुटी है. दो करोड़ से अधिक लोगों को अगले दो-तीन महीनों में रामलला के दर्शन कराने की तैयारी है, तो वहीं साथ ही साथ मुस्लिम समाज के बीच भी जमीन तैयार करने की रणनीति पर काम कर रही है. भाजपा की यह रणनीति 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' नारे के इर्द-गिर्द ही नजर आ रही है, लेकिन सवाल यह भी है कि क्या बात बस इतनी-सी ही है या पार्टी और पीएम मोदी भविष्य के लिए नया समीकरण गढ़ने की कोशिश में हैं? दरअसल, पीएम नरेंद्र मोदी ने पसमांदा पर फोकस कर जिस मुस्लिम पॉलिटिक्स की पिच तैयार करने की शुरुआत पहले ही की थी, भाजपा अब उस सियासी पिच को मजबूत करने में जुट गई है. पसमांदा मुस्लिम समाज का पिछड़ा वर्ग है और भाजपा की रणनीति इस वर्ग को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाने की है, जिससे पार्टी के साथ इनका इमोशनल कनेक्ट भी डेवलप होगा और इसका सीधा लाभ वोट के रूप में भी पार्टी को मिल सकता है. भाजपा पसमांदा को लेकर कितनी गंभीर है, इसे इस बात से भी समझा जा सकता है कि पार्टी ने 2022 में ही पसमांदा मुस्लिम मोर्चा के रूप में एक अलग विंग का ही गठन कर दिया था. अब भाजपा मुद्रा योजना, प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम जैसी योजनाओं को लेकर भी मुस्लिम वोटरों के बीच जाने की रणनीति पर काम रही है. भाजपा मुस्लिमों के बीच जाकर यह बताएगी कि उसने किस तरह से उनको रोजगार के अवसर दिए हैं. ऐसा माना जा रहा है कि अगर भाजपा मुस्लिमों को लेकर अपनी रणनीति में सफल रही और इस समुदाय का छोटा सा वर्ग भी पार्टी को वोट करता है, तो कई सीटों पर जीत सुनिश्चित हो सकती है. भाजपा का फोकस सूफी संवाद के जरिए यूपी के रामपुर, आजमगढ़, मेरठ, सहारनपुर जैसे जिलों पर है, जहां मुस्लिम आबादी प्रभावी है. यूपी के मुस्लिमों को साधने पर भाजपा का फोकस है ही, पार्टी का ध्यान बंगाल, केरल, झारखंड, बिहार और तेलंगाना जैसे राज्यों की मुस्लिम आबादी पर भी है. भाजपा की कोशिश मुस्लिम वोटरों के बीच पहुंचने और उनके लिए मोदी सरकार की ओर से चलाई जा रही योजनाओं, पुरानी योजनाओं में लागू किए गए नए सुधारों को लेकर जानकारी देने की है. भाजपा के नेता और कार्यकर्ता शुक्रिया मोदी भाईजान अभियान के जरिए मुस्लिमों के बीच इस बात को लेकर भी पार्टी का पक्ष रखेंगे कि आखिर मुस्लिम वोटर्स को क्यों कमल निशान पर वोट करना चाहिए? भाजपा इस अभियान के जरिए मुस्लिम परिवारों को उज्ज्वला योजना के तहत मुफ्त गैस कनेक्शन से लेकर प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत मिले आवास, आयुष्मान भारत योजना के तहत मुस्लिम लाभार्थियों, हज का कोटा बढ़ाए जाने, मुस्लिम छात्र-छात्राओं को छात्रवृत्ति के आंकड़े भी गिनाएगी. भाजपा की रणनीति इन सभी योजनाओं के लाभार्थियों को पार्टी से जोड़ने की है. यूपी की ही बात करें तो अलग-अलग योजनाओं के लाभार्थियों की तादाद प्रदेश में ढाई करोड़ बताई जा रही है. पार्टी अगर इन ढाई करोड़ में से एक चौथाई को भी वोट में तब्दील कर पाई, तो कई सीटों पर तस्वीर बदल सकती है.

भाजपा एक अभियान और चला रही है जिसे मस्जिद-मंदिर संवाद नाम दिया गया है. इस अभियान के जरिए भाजपा की रणनीति यह जानने की है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए आयोजित समारोह में मुस्लिम समाज की किस तरह से भागीदारी सुनिश्चित की जा सकती है. भाजपा की रणनीति इस कार्यक्रम से मदरसों को भी जोड़ने की है. पार्टी मस्जिद-मंदिर संवाद के जरिए इस बात की संभावनाएं टटोल रही है कि मुस्लिम भी अपने आवास पर दीप जलाएं और इसी तरह के आयोजन मदरसों में भी हो सकते हैं क्या?

भाजपा कई राज्यों में जाति-वर्ग के समीकरण ध्वस्त कर महिलाओं का एक अलग वोटबैंक तैयार करने में सफल रही है. पार्टी की रणनीति अब मुस्लिम महिलाओं के बीच भी अपनी सियासी जमीन तैयार करने की है. तीन तलाक विरोधी कानून को भाजपा मुस्लिम महिलाओं के बीच बड़ी उपलब्धि के रूप में लेकर जा रही है. तीन तलाक विरोधी कानून से कितना लाभ हुआ है, कितना फर्क आया है, भाजपा ये आंकड़े लेकर मुस्लिम महिलाओं के बीच जाएगी और शिक्षा के साथ ही रोजगार के अवसर की भी बात करेगी. भाजपा ने मुस्लिमों के बीच सियासी आधार तैयार करने के लिए पिछले दिनों मोदी मित्र अभियान शुरू किया था. इस अभियान के तहत भाजपा ने करीब 25 हजार मोदी मित्र बनाए हैं. ये मोदी मित्र दोस्तों के घर शादियों और विविध आयोजनों के साथ ही चाय-नाश्ते पर चर्चा के जरिए पड़ोसियों और रिश्तेदारों के बीच भी भाजपा को लेकर मुस्लिम समाज में सकारात्मक संदेश दे रहे हैं, पार्टी का प्रचार कर रहे हैं. केरल के कोच्चि तट के करीब स्थित केंद्र शासित प्रदेश लक्षद्वीप में करीब 98 फीसदी आबादी मुस्लिम है. पीएम मोदी ने मुस्लिम बहुल लक्षद्वीप का दौरा किया. पीएम मोदी ने इस द्वीपीय प्रदेश को कई करोड़ रुपए की लागत से विकास योजनाओं की सौगात दी. पीएम मोदी ने लक्षद्वीप में पर्यटन को बढ़ावा देने के साथ ही मुस्लिमों की बेहतरी के लिए कई योजनाओं का शिलान्यास भी किया. भाजपा मुस्लिम तुष्टीकरण की राजनीति का आरोप लगाते हुए कांग्रेस और दूसरे विपक्षी दलों के खिलाफ हमलावर रही है. अब पार्टी की रणनीति मुस्लिमों के बीच पहुंच कर उनको तुष्टीकरण की राजनीति के नुकसान बताने की है.

• बोधि-वृक्ष

जिजीविषा और विजिगीषा

मानव ही क्यों, प्राणीमात्र में मुख्यतः 'जिजीविषा' और 'विजिगीषा' दो वृतियां कार्यशील होती हैं. अर्थात् जीने की और जीतने की इच्छा. दीर्घकाल तक जीने की और ऐश्वर्यपूर्वक दूसरों पर अधिपत्य जमाने की स्वभाविक इच्छा मनुष्य मात्र में पाई जाती है. वस्तुतः 'जीने' की इच्छा ही 'जीतने' की इच्छा को ज्वलंत बनाए रखती है. एक छोटे से 'जीवन' के लिए, क्या प्राणी क्या मनुष्य, सभी आकाश पाताल एक कर देते हैं. भौतिकवादी प्रायः इस 'जीने' और 'जीतने' के आदिम स्वभाव को, प्रकृति या स्वभाविकता के नाम पर संरक्षण और प्रोत्साहन देने में लगे रहते हैं. वे नहीं जानते या चाहते कि इस आदिम स्वभाव को सुसंस्कृत किया जा सकता है या किया जाय. इसीलिए प्रायः वे सुसंस्कृतियों का विरोध करते हैं और आदिम इच्छाओं को प्राकृतिक स्वभाव के तौर पर आलेखित/रेखांकित कर उसे बचाने का भरपूर प्रयास करते हैं. इसीलिए वे संस्कृति और संयम प्रोत्साहक धर्म का भी विरोध करते है. वे चाहते हैं मानव सदैव के लिए उसी जिजीविषा और विजिगीषा में लिप्त रहे, इसी में संघर्ष करता रहे, आक्रोशित और आन्दोलित बना रहे. जीने के अधिकार के लिए, दूसरों का जीना हराम करता रहे और अन्ततः उसी आदिम इच्छाओं के अधीन अभिशप्त रहकर हमेशा अराजक बना रहे. 'पाखण्डी धर्मान्ध' व 'लोभार्थी धर्मद्वेषियों' ने विनाश का यही मार्ग अपनाया हुआ है. दुर्भाग्य से 'व्यक्तित्व विकास' और 'व्यक्तिगत सफलता' के प्रशिक्षक भी इन्ही वृतियों को पोषित करते नजर आते हैं. इसीलिए प्रायः ऐसे उपाय नैतिकता के प्रति निष्ठा से गौण रह जाते हैं. वस्तुतः इन आदिम स्वभावों या आदतों का संस्करण करना ही संस्कृति या सभ्यता है. धर्म-अध्यात्म यह काम बखुबी करता है. वह 'जीने' के स्वार्थी संघर्ष को, 'जीने देने' के पुरूषार्थ में बदलने की वकालत करता है. 'जीओ और जीने दो' का यही राज है. बेशक! आप जीने की कामना कर सकते है, किन्तु प्रयास तो 'जीने देने' का ही किया जाना चाहिए. उस दशा में दूसरो का भी यह कर्तव्य बन जाएगा कि वे आपको भी जीने दे. अन्यथा तो गदर मचना निश्चित है. क्योंकि प्रत्येक अपने जीने की सामग्री जुटाने के खातिर, दूसरो का नामोनिशान समाप्त करने में ही लग जाएंगा. आदिम जंगली तरीको में यही तो होता है और यही विनाश का कारण भी है. जैसे जैसे सभ्यता में विकास आता है 'जीने देने' का सिद्धांत 'जीने की इच्छा' से अधिक प्रबल और प्रभाव से अधिक उत्कृष्ट होते चला जाता है. दूसरी 'जीतने की इच्छा' भी अधिपत्य जमाने की महत्वाकांक्षा त्याग कर, दिल जीतने की इच्छा के गुण में बदल जाती है.

जरूरत है एक सकारात्मक वैचारिक उर्जा की

• विमर्श

अविजीत पाठक

मैं अक्सर महसूस करता हूं कि हमारे इर्द-गिर्द फैली नकारात्मकता हमारी सकारात्मकता एवं रचनात्मक जीवन-ऊर्जा को बुरी तरह प्रभावित कर रही है. कई बार कुटिलता और निराशावाद हमारी चेतना को घेरने लगता है. हम व्यग्र हो उठते हैं, हम गुस्सैल हो जाते हैं और हम तार्किक रूप से दलील और संवाद करने की समझ खो बैठते हैं. वास्तव में, विषैली बनी संस्कृति, जो कि टूट चुके अथवा विकृत संवादों एवं संलग्न भौतिक-प्रतीकात्मक हिंसा की वजह से बुरी तरह ध्रुवीकृत हो चुके सामाजिक-राजनीतिक माहौल को दर्शाती है, शक्तिशाली रूप से व्याप्त है. गुस्सैल परम-राष्ट्रवाद और धार्मिक कट्टरवाद का जश्न मनाना, राजनीतिक दंभ जाहिर करना और सोशल मीडिया से फैलाए जाने वाले गाली-गलौज़ भरे नकारात्मक स्पंदनों का निरंतर प्रवाह हमें अंधेरी दुनिया में धकेल रहा है- वह संसार जिसमें स्नेह, प्रेम, सुनने-समझने की कला नदारद है. हमारे आसपास हर कोई-टेलीविज़न के न्यूज़ एंकरों से लेकर पड़ोसियों तक या वे लोग जो सोशल मीडिया पर प्रत्येक छोटी-बड़ी घटना पर बिना आगा-पीछा जाने त्वरित टिप्पणियां करते हैं या फिर विद्यालय-कॉलेज के प्रधानाचार्य-उपकुलपति तक-लगता है सब गुस्से से भरे, अड़ियल, 'दुश्मनों' से लड़ने, उन्हें हराने या निपटने जैसी विषैली सोच से ग्रस्त हैं. हमारे दोस्त बेगाने बन गए हैं, यहां तक कि परिवार के सदस्यों के बीच नैसर्गिक बोलचाल लगातार मुश्किल बनती जा रही है. प्रेम तो मानो एक बुरा शब्द हो और नफरत एवं गुस्सा नया सामान्य चलन, और परम-मर्दानगी दिखाने एवं आत्ममुग्धता के बीच विनम्रता तो जैसे कमजोरी की निशानी हो. सवाल यह है कि क्या इस मानसिक व्याधि, सांस्कृतिक ह्रास और अत्यंत गुस्से अथवा व्यग्रता से खुद को बचाए रखना संभव है. यही वो घड़ियां हैं जब मुझे लगने लगता है कि चुप रहना और व्याप्त माहौल पर प्रतिक्रिया न देना ही श्रेयस्कर है. तथापि, पलायनवाद कोई उत्तर नहीं है. जो प्रश्न मुझे और कई अन्यों को सालता है कि क्या इस हिंसा एवं कुटिलता भरे युग में बने रहकर भी आशा, अक्लमंदी एवं जीवन-पुष्ट कृत्यों से अपनी सकारात्मकता को बचाए रखना संभव है. हालांकि, जैसा कि कई लोग दलील देंगे, सकारात्मक बने रहना लगातार मुश्किल होता जा रहा है, सामूहिक अक्लमंदी के लिए हमें यत्न करने की जरूरत है. और यह तभी संभव है जब हमें 'स्वः' और दुनिया के बीच संबंध से जुड़ी गतिशीलता का अहसास हो. काफी ढांचागत कमियों के बावजूद हमारी रचनात्मकता का महत्व है. व्यवस्था हमारे प्रयत्नों, हमारी नेक-नीयत योजनाओं और अर्थपूर्ण कृत्यों के बिना नहीं बदल सकती. इसलिए, भले ही यह दुनिया राजनीतिक रूप से संयोजित और ध्रुवीकृत कर दी जा चुकी है, जिसमें हमारी सोच में किसी को देखने-समझने का नज़रिया केवल दो वर्गों में रखकर करना सिखा दिया गया है (हिंदू या मुसलमान, देशभक्त या देशद्रोही, आस्तिक या धर्मनिरपेक्ष नास्तिक), क्या यह संभव है कि हम इस एकांगी दृष्टिकोण के बिना बौद्धिक स्पष्टता, ऐतिहासिक खोज एवं सूक्ष्म समझदारी से चीज़ें देख पाएं. इस संदर्भ में, हम गांधी और टैगोर को याद करें. गांधी का बतौर हिंदू किया गया धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रयोग उन्हें अन्य धार्मिक संप्रदायों से राजनीतिक-आध्यात्मिक सामंजस्य बनाने से नहीं रोकता था. यह वह रचनात्मक बोध था जिसने उन्हें भेदभाव एवं घृणा की मानसिकता से परे देखना सिखाया और अहिंसा के जरिए वैकल्पिक राजनीति के बीज बोए. अपनी इस राजनीतिक एवं जीवन-शैली के जरिए गांधी धर्मनिरपेक्षता बनाम अध्यात्म के दोगलेपन से ऊपर उठ गए. सौहार्द्र बनाने की उनकी आध्यात्मिक खोज ने उन्हें सच्चा बहु-धार्मिक एवं बहु-सांस्कृतिक भारत बनाने को प्रेरित किया, यहां तक कि उस समय भी जब विभाजन का झटका जवाबी साम्प्रदायिक नफरत और हिंसा को सामान्य प्रतिक्रिया ठहरा रहा था. इसी प्रकार टैगोर ने भारत की परिकल्पना बतौर संस्कृति का महासागर से की थी और वे परम-राष्ट्रवाद में अंतर्निहित हिंसा की संभावना से सदैव असहज रहे. उनका साहित्यिक अथवा सांस्कृतिक कार्य इस प्रेम एवं वसुधैव-कुटुम्बकम् की चाहना से उपजा. क्या इस विषैले समय में गांधी और टैगोर की पुनः खोज, उनकी रचनात्मकता से सीखना, फूट डालने वाली राजनीति में अंतर्निहित स्वार्थ से पार पाना और हमारे जख्मी हुए स्वः को फिर से ठीक करना संभव है.

> गांधी का बतौर हिंदू किया गया धार्मिक एवं आध्यात्मिक प्रयोग उन्हें अन्य धार्मिक संप्रदायों से राजनीतिक–आध्यात्मिक सामंजस्य बनाने से नहीं रोकता था. यह वह रचनात्मक बोध था जिसने उन्हें भेदभाव एवं घृणा की मानसिकता से परे देखना सिखाया और अहिंसा के जरिए वैकल्पिक राजनीति के बीज बोए.

चीन के मुकाबले को रणनीतिक तैयारी

• सामयिकी

लक्ष्मी शंकर यादव

थल सेनाध्यक्ष की टिप्पणी कि चीन सीमा के पास हालात स्थिर हैं पर संवेदनशील हैं, गहरे निहितार्थ लिए हुए है. यह हकीकत है कि चीन की सीमा पर उसके साथ पिछले वर्ष जो तनाव शुरू हुआ था वह अभी तक समाप्त नहीं हुआ है. अब चीन सीमा के नजदीक भारतीय सेना पूरे वर्ष मुंहतोड़ जवाब देने के लिए तैयार रहेगी. रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण सेला टनल के तैयार हो जाने से भारतीय सेना के जवानों की पहुंच हर मौसम में चीन सीमा तक बनी रहेगी. यह टनल चीन सीमा तक पहुंचने के लिए प्राकृतिक रास्ते सेला दर्रे से 4200 मीटर तक खुदाई करके बनाई गई है. सेला दर्रा जहां कुछ माह बर्फ से ढके रहने के कारण बंद रहता है वहीं सेला टनल पूरे वर्ष आवागमन के लिए खुली रहेगी. इस टनल की मदद से भारतीय सेना पूरे वर्ष आसानी से वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर सैनिकों एवं हथियारों की तैनाती कर सकेगी. इसके अलावा यह टनल चीन के सीमावर्ती इलाके से अरुणाचल प्रदेश और देश के बाकी हिस्से को पूरे वर्ष जोड़े रखेगी. दरअसल, इस सुरंग का शिलान्यास 1 अप्रैल, 2019 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया था. अब इसका काम पूरा होने वाला है और अब प्रधानमंत्री कभी भी इसे देश को समर्पित कर सकते हैं. चीन ने पैंगांग झील के उत्तरी हिस्से में अपनी सेनाएं तैनात कर रखी हैं. ऐसे में भारतीय सेना अपने नियंत्रण वाले ऊंचाइयों के स्थानों को छोड़ने के पक्ष में बिल्कुल नहीं है. चीन सीमा पर भयंकर सर्दी पड़ने के कारण मौसम खराब रहता है इसके बावजूद सेना ने वहां पर जमे रहने की अपनी पूरी तैयारी कर रखी है. ऐसे में चीन सीमा पर बराबर लम्बे समय तक डटे रहने और सर्दी से बचने के उपायों की तैयारी पूरी कर ली गई है. उल्लेखनीय है कि दोनों देशों की सेनाओं के कमांडरों के बीच कई दौर की वार्ता बेनतीजा रही है. ऐसे में एलएसी पर तैनाती बनाए रखना आवश्यक है, क्योंकि चीन ने अरुणाचल प्रदेश से लद्दाख तक, हिमाचल प्रदेश व उत्तराखण्ड से सटी अंतरराष्ट्रीय सीमा तक अपनी सैन्य तैयारी बढ़ा रखी है. इस बार जब पंद्रह जनवरी को देश सेना दिवस मनाएगा, तो सेना नये आत्मविश्वास से भरी होगी. सेना के आधुनिकीकरण के तमाम उपायों को मूर्त रूप दिया गया है. चालू वर्ष में भारतीय सेना हल्की बुलेटप्रूफ जैकेट से लैस हो जाएगी. रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन (डीआरडीओ) ने दुनिया की पहली बीआईएस लेबल 5 एवं बीआईएस लेबल 6 की सबसे हल्की एवं मजबूत मेड इन इंडिया अभेद्य दो तरह की बुलेटप्रूफ जैकेट बनाने में सफलता हासिल कर ली है.

> चीन सीमा पर भयंकर सर्दी पड़ने के कारण मौसम खराब रहता है इसके बावजूद सेना ने वहां पर जमे रहने की अपनी पूरी तैयारी कर रखी है. ऐसे में चीन सीमा पर बराबर लम्बे समय तक डटे रहने और सर्दी से बचने के उपायों की तैयारी पूरी कर ली गई है. उल्लेखनीय है कि दोनों देशों की सेनाओं के कमांडरों के बीच कई दौर की वार्ता बेनतीजा रही है.

फिलहाल भारतीय सेना के जवान बीआईएस लेबल 5 की 10 किलोग्राम वजन वाली विदेशी जैकेटों का प्रयोग करते हैं. नई जैकेटें वजन में हल्की होने के साथ ही साइज में अधिक चौड़ी हैं व स्नाइपर गन की 6 से 8 गोलियां झेल सकती हैं. चीन व पाकिस्तान की सीमा पर बेहतर निगरानी के लिए थल सेना के सभी कमांड केन्द्र व अन्य सेनाओं से तालमेल बनाए रखने हेतु जल्द ही नया सेटेलाइट बनाया जाएगा. इसका निर्माण इसरो द्वारा किया जाना है. इसके लिए रक्षा मंत्रालय ने गत वर्ष न्यू स्पेस इंडिया से 2963 करोड़ रुपये का समझौता किया था. यह सैन्य उपग्रह तकरीबन पांच टन वजन का होगा. यह एक एडवांस्ड कम्यूनिकेशन सेटेलाइट होगा जो सेना के हर मिशन की सटीक जानकारी देगा और खुफिया संचार में भी मदद करेगा. यह एक प्रकार का जियोस्टेशनरी उपग्रह होगा, जिससे रियल टाइम इमेजरी हो सकेगी तथा इलेक्ट्रॉनिक इंटेलिजेंस के जरिए सर्विलांस करना आसान होगा. वहीं किसी भी स्थिति में निपटने के लिए भारतीय सेना ने जम्मू-कश्मीर की उत्तरी व पश्चिम सीमा पर स्वदेश निर्मित हाईटेक ड्रोन की तैनाती कर रखी है. चीन सीमा पर सैन्य ऑपरेशन के दौरान गोला-बारूद की आपूर्ति, मशीनगनों और राइफलों के मेंटिनेंस पर भी सेना सजग है. इन मसलों को लेकर अक्तूबर, 2023 में मध्य भारत एरिया के सैन्य मुख्यालय में 6 राज्यों के सैन्य कमांडर एवं वरिष्ठ सैन्य अधिकारी एकत्र हुए थे. मुख्य मुद्दा गोला-बारूद के स्टॉक को तत्काल सीमा तक पहुंचाने का था. भारतीय सेना ने अपनी हवाई रक्षा क्षमता को बढ़ावा देने की दिशा में भी अपने कदम बढ़ा लिए हैं. इसके लिए सेना ने जमीन से हवा में मार करने में सक्षम मिसाइल रेजिमेंट को गठित किया है. इसे पूर्वी कमांड के क्षेत्र में स्थापित किया गया है. यह रेजिमेंट लड़ाकू विमानों, यूएवी, हेलिकॉप्टर, सुपरसोनिक मिसाइल जैसे हवाई लक्ष्यों का एक साथ सामना करने एवं हवाई सुरक्षा प्रदान करने में सक्षम है.

मीडिया में अन्यत्र

नियंत्रण रेखा पर चीनी सेना का जमावड़ा

भारत और चीन के बीच सीमा विवाद को लेकर सेना प्रमुख ने कहा है कि अभी जो हालात हैं वो भारत के कड़े रुख को दर्शाता है. जब तक सीमा पर हालात नहीं बदलते, तब तक सैनिकों की तैनाती रहेगी. इससे पहले विदेश मंत्री एस जयशंकर ने भी यही बात कही थी. आर्मी चीफ जनरल मनोज पांडे ने गुरुवार को भारत-चीन सीमा के ताजा हालात पर जो कहा, वह दोनों देशों के बीच चल रहे गतिरोध पर भारत के कड़े रुख को दर्शाता है. सेना प्रमुख ने साफ-साफ कहा कि सीमा पर भारी संख्या में सैनिकों की तैनाती तब तक रहेगी जब तक वहां हालात नहीं बदलते. उन्होंने यह भी कहा कि भारत का पहला उद्देश्य सीमा पर 2020 मध्य से पहले की स्थिति बहाल करना है. जब यह हो जाएगा, तभी अन्य बातों पर विचार किया जाएगा. रिश्तों पर आंच : दो दिन पहले विदेश मंत्री एस जयशंकर ने हमारे सहयोगी अखबार टाइम्स ऑफ इंडिया को दिए इंटरव्यू में भी भारत-चीन संबंधों में आए गतिरोध पर ऐसी ही बात कही थी. उन्होंने साफ किया था कि जब तक स्टेटस को आंटे (यानी यथास्थिति से पहले की स्थिति) बहाल नहीं की जाती तब तक संबंधों में बेहतरी की कोई उम्मीद नहीं की जा सकती.

भारत का रुख : इस मामले में शुरू से भारत अपने इस रुख पर कायम है. अगर दोनों देशों के रिश्तों को देखा जाए तो सीमा को लेकर मतभेद तो हमेशा रहे. मगर इसके बावजूद विश्वास का माहौल बन गया था, जिसके आधार पर न केवल सीमा पर लंबे समय से शांति बनी हुई थी बल्कि द्विपक्षीय सहयोग और व्यापार भी फल-फूल रहा था. अप्रैल-मई 2020 में चीन की एकतरफा कार्रवाई से वह स्थिति बदली और दोनों देशों के बीच टकराव का नया दौर शुरू हुआ. ऐसे में जब तक सीमा पर उस कार्रवाई से पहले वाली स्थिति बहाल नहीं की जाती, तब तक यह कहने का क्या अर्थ है कि बीती बातों को भूलकर नए सिरे से सहयोग शुरू किया जाए? यही मूल बिंदु है जहां बात आगे नहीं बढ़ रही. सैन्य और कूटनीतिक वार्ताओं के दौर पर दौर हुए, कुछ बातों पर सहमति भी बनी लेकिन 2020 मध्य से पहले की स्थिति बहाल करना तो दूर, चीन बचे हुए दो प्रमुख स्थानों देपसांग और देमचोक पर सैन्य उपस्थिति कम करने को भी राजी नहीं हो रहा. यही वजह है कि भारत ने भी खुद को इस बात के लिए तैयार कर लिया है कि सीमा पर बना यह गतिरोध लंबे समय तक चल सकता है. **(द हिंदू)**

शब्द चर्चा

डॉ. विनय कुमार पाण्डेय

मत्स्य/मतस्य

मेरे घर आज रणवीर सिंह आये थे. उन्होंने पहले मेरा चरण स्पर्श करते हुए कहा-मैं एक नया काम करने जा रहा हूं, आपका आशीर्वाद लेने आया हूं. मैंने कहा-मेरा आशीर्वाद आपके साथ है. कहिए, आप कौन सा काम करने जा रहे हैं? उन्होंने कहा-मेरी जमीन पर एक तालाब है. मैंने उसमें मतस्य पालन की योजना बनायी है. यह जानते हुए भी कि वह क्या कहना चाहते हैं, मैंने अनजान बन कर सवाल दागा-ये मतस्य क्या होता है? उन्होंने कहा-अरे बाबा, आप भी क्या मजाक कर रहे हैं? अरे मतस्य मतलब मछली. मैंने कहा- रणवीर बाबू, उसे मतस्य नहीं मत्स्य कहते हैं. मैंने गौर किया है कि रणवीर सिंह की तरह बहुत सारे लोग मत्स्य को मतस्य ही कहते पाये जाते हैं. यह मतस्य निरर्थक शब्द है. जहां तक मत्स्य का सवाल है तो यह संस्कृत का तत्सम संज्ञा पुल्लिंग शब्द है. हिंदी शब्दसागर के अनुसार मत्स्य अनेकार्थक शब्द है. मतलब यह कि इसके बहुत सारे अर्थ हैं. इसका प्रचलित अर्थ है मछली और प्राचीन काल में विराट देश का नाम. कुछ लोगों का मत है कि वर्तमान में दीनाजपुर और रंगपुर ही प्राचीन काल का मत्स्य देश है, लेकिन कुछ लोग इसे प्राचीन पांचाल के अंतर्गत मानते हैं. छंद शास्त्र के अनुसार छप्पय छंद के 23वें भेद का नाम भी मत्स्य ही है. आपने पढ़ा-सुना होगा कि भगवान विष्णु ने पहली बार सतयुग में मत्स्य के रूप में ही अवतार लिया था. इसमें भगवान मछली के रूप में प्रकट हुए थे और उन्होंने दैत्य हयग्रीव का वध कर वेदों की रक्षा की थी. हयग्रीव ने वेदों को समुद्र की गहराई में छिपा दिया था. इस तरह से मत्स्य अवतार में प्रकट होकर भगवान विष्णु ने हयग्रीव का वध किया और वेदों की रक्षा की. मत्स्य अठारह महापुराणों में से एक है, जिसमें भमत्स्यावतार की कथा है. पुराणों के अनुसार मत्स्य सुनहरे रंग की एक शिला है, जिसके पूजन से मुक्ति मिलती है.

डेंगू-प्रसारी मादा मच्छर से मुलाकात

• तीर-तुक्का

रामवृक्ष सिंह

एक दिन डेंगू फैलाने वाली मादा मच्छर दिन-दहाड़े हमारे आस-पास मंडराने और मध्यम सुर में गुनगुनाने लगी. उसकी नीयत हमें कुछ अच्छी नहीं लगी. हमने रोककर पूछा- 'क्या बात है बेन? आज बड़े चक्कर काट रही हो. आखिर इरादा क्या है?' मादा मच्छर बिहारी की प्रगल्भा नायिका की तरह बड़ी घाघ निकली. चहक कर बोली-'इधर खूब खाया-पिया है आपने. जिम-विम जाकर खूब मसल्स भी बना लिए हैं. त्योहारों के मौसम में हीमोग्लोबीन काउंट भी मस्त हो गया है आपका. इसलिए सोचती हूं कि थोड़ा-सा खून पी लिया जाए. सच्ची, मजा आ जाएगा.' हमें काटो तो खून नहीं. मोटी आय वालों से सरकार भी मोटी दर पर आय-कर वसूलती है. राजनीतिक पार्टियों वाले मोटे सेठों से मोटा चंदा वसूल ले जाते हैं. अब ये मादा डेंगू मच्छर भी मोटे-ताजे लोगों को पहचानने लगी है. साफ पानी में रहती है. दिन-दहाड़े बींधती है और खाते-पीते आदमी को अपना शिकार बनाती है. यह तो हद हो गई. हमने मादा मच्छर को बतरस में डुबाकर बरगलाने की कोशिश की- 'अरे बेन! इस गरीब के पास तुम्हें क्या मिलेगा! हिन्दी की सेवा करता है. रूखी-सूखी खाता है और अपनी मस्ती में रहता है. इस फूले हुए शरीर पर मत जाओ. ये तो सब हमारी माँ का चमत्कार है, जिसने पांच साल का होने तक हमें अपना दूध पिलाया और उसके बाद बकरी और भैंस का दूध पिला-पिला कर हमें इतना मोटा-ताजा बना दिया. सच कहें तो हमारे खून में वो शिफा नहीं, जिसकी तुम्हें तलाश है.' मादा मच्छर ने बड़ी शरारत से हमें देखा. उसको सहसा हमारी बात पर यकीन नहीं आया. फिर भी, वह थोड़ी देर के लिए थमी और भिनभिनाते हुए बोली- 'मैंने देश के बड़े-बड़े लोगों का खून पीकर देख लिया है. सबकी रगों का खून काला हो चुका है. और जिनका काला नहीं हुआ, उनका सफेद हो गया है.' हमें लगा कि मादा मच्छर हमें मुहावरे सुनाकर लुभाना-रिझाना चाहती है. लेकिन इन मुहावरों के चक्कर में ही तो हमें हिन्दी से प्रेम हो गया और प्रेम-प्रेम में बहुत दूर चले आए तो पेट पालने के लिए झक मारकर हिन्दी अधिकारी बनना पड़ा. लिहाजा हमने उसे सच्ची बात समझाने की कोशिश की- 'अरे बेन, बात को समझा करो. उनका खून चाहे काला हो या सफेद. उसमें प्लेटलेट्स खूब सारे हैं. वे लोग खूब गिजा खाते हैं. चैन से एसी में रहते हैं. इस बेचारे हिन्दी अधिकारी के पास तुम्हें क्या मिलेगा? सूखी तनख्वाह पर जीने वाले जीव हैं. दाल-रोटी मिल जाए तो बहुत. इस खुराक से ऐसा बढ़िया खून कहां बनता है कि तुम्हें पसंद आ जाए! पता नहीं, कैसे तुम्हारा मन हमारे खून पर आ गया! हमारे खून में प्लेटलेट्स गिनोगी तो खुद ही समझ जाओगी कि इधर कुछ नहीं है.'

सुकून

तिल के नए-पुराने स्वाद

भूने तिल और पिघले गुड़ की सोंधी-सोंधी खुशबू हवा में घुली है. मौसम राहत की उम्मीद दे रहा और ऐसे में मन उत्सवी हो रहा. इस उत्सव में विविधता के रंग हैं. कहीं टुसू पर्व और मेला का उमंग है तो कहीं बहु-बेटियों तक नेग पहुंचाने का उत्साह. कहीं खिचड़ी अपने राजसी अंदाज में पक रही तो कहीं नारियल-गुड़ के पीठा का स्वाद जिह्वा पर मचल रहा. वर्षों पुरानी परंपरा से इतर मकर-संक्रान्ति पर्व एक दिन खिसक कर आज मनाया जा रहा. आइए, इस विविध रंगी त्यौहार का आनंद लें.

रानी प्रसाद

तिल और गुड़ की बर्फी

ये चाहिए

तिल एक कप, गुड़ एक कप, घी एक बड़ा चम्मच.

ऐसे बनाएं

सर्वप्रथम तिल को धीमी आंच पर भून लें. जब उसमें से खुशबू आने लगे तो उसे उतार लें, और अच्छी तरह ठंडा कर लें. अब उसे मिक्सर के जार में रुक रुक कर पीसें. ऐसा इसलिए कि अगर उसे लगातार पीसा जाएगा तो तिल का तेल निकल जाएगा, हमें ऐसा नहीं चाहिए. हमें सूखा हुआ तिल चाहिए. अब इसी तिल में गुड़ के छोटे-छोटे टुकड़े कर उसे भी पीस लें. दोनों एक साथ मिक्स हो जाएगा. तत्पश्चात एक नॉन स्टिक पैन में एक बड़ा चम्मच शुद्ध घी डालें और तिल और गुड़ के मिश्रण को धीमी आंच पर भून लें. थोड़ी देर में गुड़ पिघल कर तिल में मिक्स हो जाएगा और एक डो के फॉर्म में यह मिक्सर तैयार हो जाएगा. उसके बाद इसे एक गहरी प्लेट में घी लगाकर जमा दें और 5 मिनट के बाद ही इसे काटकर शॉप दे दें नहीं तो यह जम जाएगा तो इसे काटने में मुश्किल होगी. उसके बाद इस पर पिस्ते की कतरन डाल दें. तिल और गुड़ की बर्फी तैयार है.

तिल गुड़ बादाम

ये चाहिए

तिल एक कप, गुड़ एक कप, रोस्टेड बादाम आधा कप, घी एक बड़ा चम्मच.

ऐसे बनाएं

सर्वप्रथम तिल को धीमी आंच पर भून लें और अच्छी तरह ठंडा कर लें. उसके पश्चात इस मिक्सचर के जार में रुक-रुक कर पीस लें. अब एक पैन में घी गर्म करें और उसमें गुड़ डाल दें. गुड़ को तब तक पकाएं जब तक वह जमने के लिए तैयार ना हो जाए. इसे जांचने का तरीका है, एक कटोरी में पानी ले और उसमें एक बूंद गुड़ के पाक को डालें अगर वह एक जगह जम जाता है तो गुड का पाग तैयार है. अब इसमें मूंगफली और तिल को डाल दें. तत्पश्चात एक थाली में घी लगाकर इसे फैला दें और तुरंत इसके टुकड़े काट दें.

बाजरे और मक्के की आटे की तिल पापड़ी

ये चाहिए

बाजरे का आटा एक कप, मक्के का आटा एक कप, तिल आधा कप, शुद्ध घी पांच बड़े चम्मच, गुड़ एक कप, तलने के लिए रिफाइंड.

ऐसे बनाएं

बाजरे और मक्के के आटे को तिल के साथ मिक्स कर दें. अब इसमें पांच चम्मच घी डालकर अच्छे से मोयन लगाएं. एक पैन में गुड़ रखें और उसमें एक कप पानी डालकर गुड़ को पिघला लें. जब गुड़ अच्छे से गल जाए तो इसे छन्नी से छान लें. अब इस गरम-गरम चासनी को आटे में मिक्स कर दें. एक चकली पर तेल लगाएं और उस पर एक बड़ा सा लोई लेकर बेल लें. इसे मन चाहे टुकड़ों में चाकू से काट लें. ध्यान रहे आटे की लोई हल्की गर्म ही रहनी चाहिए, नहीं तो इसे बेलना थोड़ा मुश्किल होगा. अब इस टुकड़े को एक कढ़ाई में तेल गर्म करके मीडियम आंच पर फ्राई कर लें. यह बहुत क्रिस्प और स्वादिष्ट होते हैं. सर्दियों के दिन में इसे बिस्कुट के तौर पर भी खाया जा सकता है.

तिल की चटनी

ये चाहिए

भुना हुआ तिल एक कप, लहसुन की 8-10 कलियां, हरी मिर्च चार-पांच, नींबू का रस दो चम्मच, नमक स्वादानुसार.

ऐसे बनाएं सभी सामग्री को मिक्सर के जार में पीस लें. स्वादिष्ट तिल की चटनी तैयार है.

तिल के पराठे

ये चाहिए

गेहूं का आटा दो कप, भुना हुआ तिल एक कप, प्याज एक छोटे साइज का, धनिया के पत्ते महीन कतरे हुए, हरी मिर्च महीन कटरी हुई, अदरक 1 इंच का टुकड़ा महीन कतरा हुआ, नमक स्वाद अनुसार.

ऐसे बनाएं

सर्वप्रथम आटे को दो चम्मच घी डालकर मुलायम गूथ लें. इसे ढक कर रख दें. रोस्टेड तिल को हल्का दरदरा पीस लें और इसमें प्याज हरी मिर्च अदरक नमक सभी चीजों को डालकर मसाला तैयार कर लें. अब इस मिक्सचर को आटे की लोई में भरकर पतले पतले पराठे सेक लें. इसे घी के या मक्खन के साथ सेका जा सकता है. यह खाने में बहुत स्वादिष्ट और स्वास्थ्यवर्धक होते हैं.

पंजाबी समाज

गिद्दा और भांगड़ा संग रेवड़ी-मूंगफली

सोंधी खुशबू, उत्सवी मन

डॉ सुरिन्दर कौर नीलम

तिल और रोड़ी के मेल से बना तिलोड़ी, जिसका रूप बदल कर लोहड़ी हो गया. मकर संक्रांति के एक दिन पूर्व लोहड़ी पर्व पर परंपरा के अनुसार गन्ने के रस में खीर, खिचड़ी और सरसों का साग बनता है जिसे अगले दिन माघ मास में खाया जाता है. रात में अग्नि जलाकर चारों ओर फेरे लेकर उसमें तिल, गुड़, मूंगफली, रेवड़ी आदि डाले जाते हैं और खाते भी हैं. फेरे लेते हुए सुख समृद्धि की कामना करते हुए कहा जाता है.

"ईसर आए दल्लिदर जाए"

गिद्दा और भांगड़ा के बगैर लोहड़ी का क्या मजा. जिनके घर नयी शादी का जोड़ा हो या नया शिशु जन्म लिया हो वहां बड़े पैमाने पर ये त्योहार होता है.

मारवाड़ी समाज

14 तरह के पकवान और सोने की सीढ़ी

अनु पोद्दार

मारवाड़ियों के जिस परिवार में बेटे की शादी या सगाई का वर्ष होता है, वहां मकर संक्रान्ति पर ससुराल से 14 तरह के पकवान आते हैं. इनमें घेवर, फेणी, गोंद के लड्डू, बुंदिया के लड्डू, सूजी के लड्डू, कचौड़ी, नमकीन, गुलाब जामुन, मठरी, तिलकूट, गजक आदि शामिल होते हैं. इसके अलावा वस्त्रादि होते हैं. सास के लिए विशेष तौर पर कपड़े आदि आते हैं. तीन पीढ़ी देख चुकी घर की बुजुर्ग महिलाओं को सोने की छोटी सीढ़ी चढ़ाई जाती है. इस दिन खिचड़ी खाना वर्जित होता है. दान का विशेष महत्व है. कंबल, शॉल, बाल्टी या अन्य कोई सामान 14 की संख्या में दान दिया जाता है. राजस्थान के कुछ हिस्सों में पतंगबाजी की भी परंपरा है.

बंगाली समाज

सोरू चकली, पार्टीशाप्टा, पीठा

रिंकू बैनर्जी

इस दिन कई तरह के पीठे बनाए जाते हैं जिसमें मूंग दाल, मटर-मसाले, नारियल गुड़ आदि के भरावन वाले पीठा शामिल हैं. सोरू चकली, पार्टीशाप्टा आदि बनाए जाते हैं. बचपन देवघर में गुजरा जहां हम बंगाली परिवार सुबह नहा-धो कर कच्चा दूध, नया चूड़ा, तिलकूट, खजूर गुड़ आदि बाबा वैद्यनाथ को अर्पित करते थे. इस दिन दान धर्म का भी विशेष महत्व है. पतंग भी उड़ाए जाते हैं.

केरली समाज

भगवान अय्यपा की विशेष पूजा

सुकुमारन

मकर संक्रांति केरल में 'मकरविलक्कू' त्यौहार के तौर पर मनाया जाता है. इस दिन भगवान अय्यपा की विशेष पूजा अर्चना की जाती है. मान्यता है कि भगवान अय्यप्पा भगवान शिवजी और भगवान विष्णु के पुत्र हैं, जो ब्रह्मचारी हैं. मकरविलक्कू के दिन थिरुवाभरणं भव्य पर्व के रूप में आभूषणों की शोभायात्रा निकाली जाती है. इस यात्रा में पंडलम महल से शाही आभूषणों को मुख्य मंदिर लाया जाता है जिसे बड़ी ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मुख्य मंदिर तक लाया जाता है. हजारों श्रद्धालु इस शोभायात्रा में शामिल होते हैं. मकरविल्लकू के दिन मुख्य पूजा में 'सांध्य दीपाराधना' होती है. सबरीमला मंदिर के ठीक विपरीत दिशा में पोन्नमबालमेडु नामक पहाड़ी पर महाआरती होती है. मान्यता है कि महाआरती की दिव्य ज्योति के दर्शन मात्र से जीवन धन्य हो जाता है और सुख-समृद्धि का आगमन होने लगता है. जमशेदपुर में हम टिस्को स्थित अयप्पा मंदिर में उसी आस्था के साथ ये पूजा-अर्चन करते हैं.

भोग में चावल और गुड़ का विशेष पायस बनता है जो महीने भर तक खाया जा सकता है. आधा किलो में बारह किलो गुड़ और खूब सारे मेवे डाल कर बनाए गए इस पायस का प्रसाद वितरित होता है. शाम को भजन कीर्तन होता है.

गुजराती समाज

उंधियू और गुप्त दान

पूजा चौहान

गुजराती समाज में यह तिल संक्रांति इस नाम से भी प्रचलित है. इसमें स्नान और दान का विशेष महत्व है. इस दिन मंदिरों में खिचड़ी, तिल के लड्डू, सब्जी फ्रूट आदि अर्पित करते हैं तथा गरीबों को दान देते हैं. तिल के लड्डू में पैसा डालकर दिया जाता है. इसके पीछे का कारण होता है गुप्त दान. गुप्त दान का बहुत महत्व है. गुजरात में स्नान दान का महत्व तो है ही. साथ में काइट फेस्टिवल भी बड़े धूमधाम से मनाया जाता है. गुजराती परिवार में इस दिन उंधियू (एक विशेष प्रकार की सब्जी जो अलग-अलग सब्जी को मिलाकर बनाई जाती है) जरूर बनाते खाते हैं. साथ में जलेबी भी खाने का प्रचलन है. झारखंड में वर्षों से बसे हम गुजराती परिवार जहां दिन में उंधियू का आनंद लेते हैं, वहीं रात में यहां की परंपरा के अनुसार खिचड़ी भी खाते हैं.

मैथिल समाज

गुम हो रही भतराइस और तुषारी पूजा की परंपरा

निर्मला कर्ण

मिथिलांचल में इसी दिन नव विवाहिताएं "भतराइस" मनाती हैं. यह पर विवाह के प्रथम वर्ष से लेकर पांच वर्ष तक मनाया जाता है. एक दिन पहले वधु स्नान पूजा करके सात्विक भोजन करती हैं. भगवती गीत गाकर गौरी-नैवेद्य (प्रसाद) बनाया जाता है. पूजा के लिए हल्दी का गौड़ गढ़ा जाता है. यह प्रसाद मायके में रहने से मां, भाभी या बड़ी बहन बनाती हैं और ससुराल में सासू मां, जेठानी या विवाहिता ननद. इस दिन वधू ससुराल का अनाज ही खाती हैं. इसलिए ससुराल से आने वाला संदेश जिसमें वधू के लिए पूजा के वस्त्र, उसके संयत के दिन खाने के लिए सामग्री, उसके परिवार की सभी महिलाओं के लिए वस्त्र, पूजन सामग्री एवं संदेश के रूप में अनेक तरह के पकवान फल एवं मिठाइयां होती हैं. पूजा के दिन वधू निराहार रहती है. संध्या समय भतराइस पर्व होता है. गौरी महादेव की पूजा की जाती है. 25 प्रकार के अनाज की डेरी लगाई जाती है. पकवान का थाल सजा रहता है जिसमें भोजन के रूप में 25 तरह की सब्जियां होती हैं. इस थाल को करोतरि कहा जाता है.

पूजा के बाद अनाज की ढेरियों और करोतरि को चांदी के सिक्के से देवर अथवा भाई द्वारा काटा जाता है. पूजा में मिट्टी के बर्तन बांस के बर्तन जो 25-25 की संख्या में होते हैं को भी उत्सर्ग किया जाता है. वधु अगले दिन से प्रातः एवं संध्या पूजन करती है. शाम के पूजन को संध्या-पूजन और प्रातः के पूजन को तुषारी-पूजन कहते हैं. तुषारी-पूजन सवा माह तक होता है और संध्या-पूजन पूरे एक वर्ष होता है. अगले वर्ष पुनः भतराइस पर्व करके तब संध्या-पूजन समाप्त होता है. इस पर्व का निस्तार या समापन तीसरे अथवा पांचवी वर्ष में होता है.

व्यस्त होती जिंदगी और लड़कियों के भी नौकरी में आने के कारण धीरे-धीरे यह पर्व समापन की ओर बढ़ रहा है. सवा माह तुषारी-पूजन और एक वर्ष के "संध्या-पूजन" के कारण अधिकतर विवाहिताएं इस पर्व को करने में अपने को असमर्थ पाती हैं.

बुरी नजर से बचेंगे होगी बरकत

- मकर संक्रांति के दिन अपने घर के मुख्य दरवाजे की अच्छी तरह सफाई करें और फिर द्वार के दोनों ओर हल्दी का जल छिड़कें और सूर्य देवता को नमन करें. ऐसा करने से आपके घर में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवेश होता है. साथ ही घर और घर वाले बुरी नजर से बचे रहते हैं.
- मकर संक्रांति के दिन गंगा नदी में स्नान का विशेष महत्व है. घर पर ही स्नान कर रहे हैं तो नहाने के पानी में गंगाजल और काला तिल मिलाकर स्नान करें. गंगास्नान के बराबर ही पुण्य की प्राप्ति होगी.
- इस दिन घर के मंदिर में देवताओं को नवीन वस्त्र पहनाएं. इससे सुख-समृद्धि में इजाफा होगा.
- मकर संक्रांति के दिन नवग्रहों के नाम से नमक, रुई अथवा गर्म वस्त्र, तेल, चावल, तिल, गुड़, आलू, कुछ पैसे दान दें.
- स्नान और दान करने के बाद किसी शांत स्थल पर बैठकर आदित्य हृदय स्तोत्र का पाठ करें. इससे आपकी कुंडली में सूर्य के शुभ प्रभाव प्राप्त होते हैं.
- तिल-गुड़ के पकवान व उड़द दाल – चावल की खिचड़ी बनाकर देवी देवताओं को भोग लगाएं और स्वयं भी ग्रहण करें. खिचड़ी का दान भी करें. इससे शनि के अशुभ प्रभाव से राहत मिलती है.

- आचार्य अजय मिश्रा

टुसू : इतिहास और आस्था

तोहरेक यादे टुसू भासाब गो

डॉ हाराधन कोईरी

शास्त्रों में वर्णित कथा के अनुसार सूर्य के दक्षिणायन को देवताओं की रात्रि अर्थात् नकारात्मकता का प्रतीक तथा सूर्य के उत्तरायण को देवताओं का दिन अर्थात सकारात्मकता का प्रतीक माना गया है. सूर्य के उत्तरायण के बाद स्नान, दान, जप, तप आदि का विशेष महत्तव है. झारखंड का प्रसिद्ध लोकपर्व टुसू में भी स्नान, दान आदि का विशेष महत्तव है. टुसू पर्व के अवसर पर लगने वाला मेला प्राय: नदी-नाला के तट पर लगता है और एक महीने तक चलता है. भावात्मक दृष्टि से देखा जाए तो टुसू मेला माघ मेला का ही प्रतिरूप है.

इतिहास

टुसू नामक कन्या काशीपुर राजा की पुत्री थीं. उनकी स्मृति में प्रतिवर्ष टुसू पर्व मनाया जाता है. दूसरा यह कि बारेंदा के राजा अर्जुन सिंह से काशीपुर की राजकुमारी टुसू से इनका विवाह हुआ था. टुसू पतिव्रता नारी थीं. वे अपने सतीत्व के प्रभाव से जब स्वर्ण रेखा नदी को पार करती थीं तब उनका महावर (आलता) भी नहीं भिंगती थीं. जब वह स्वर्गीया हो गयीं तब उनकी याद में बारेंदा के राजघराने के संरक्षण में प्रतिवर्ष प्रथम माघ को टुसू की याद में टुसू मेला लगता है. यह मेला सोनाहातू प्रखंड के बारेंदा गांव के पांडुडीह टोला में सत्रहवीं शताब्दी से लगता आ रहा है.

आस्था

बंगला भाषा में रचित कल्की पुराण में स्वर्ण रेखा नदी का महात्म्य गाया है. जिसमें कहा गया है कि यदि कोई मकर संक्रांति के दिन स्वर्ण रेखा नदी के सतीघाट में स्नान-दान करता है वह मोक्ष का भागी बन जाता है. इसी आस्था और विश्वास के साथ लोग टुसू मेला में जाते हैं जहां बंगाल, बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश के लोग स्नान दान के लिए आते हैं. टुसू परब तीन दिवसीय है.

1. प्रथम दिन – बांउड़ी परब के रूप में जाना जाता है. उस दिन सुबह चाउर धोया जाता और शाम को गुंड़ी कुटा जाता है. फिर रात में गुड़पीठा छांका जाता है.

2. दूसरे दिन – मकर संक्रांति उस दिन नदी / सरोवर में स्नान किया जाता है. उसके बाद पूजा-पाठ करके तिल, गुड़ और पीठा रोटी खाया जाता है. शाम को ढोल नगड़ा के साथ गांव में टुसू घुमाया जाता है.

3. तीसरे दिन – टुसू परब इस दिन टुसू को लेकर गांव वालों के साथ दल बल के साथ ढोल नगड़ा और टुसू गीत गाते हुए सतीघाट मेला जाते हैं. वहां जाकर स्वर्णरेखा नदी में टुसू विर्सजन किया जाता है. टुसू की महिमा का वर्णन करते हुए कुछ पंक्तियां देखिए-

टुसूमनी मां गो
तोहरेक सती भूमि सतीघाट गो
दले बले जाब गो.
तोहरेक यादे टुसू भासाब गो
टुसूमनी मां गो.

विगत कुछ वर्षों से सतीघाट मेला के दिन ही हाराडीह-बूढ़ाडीह मेला भी लगता है. टुसू मेला (पुस बिहान) के बाद पंचपरगना क्षेत्र में गुड़पीठा लेकर गोतियारी (मेहमानी) जाने की परम्परा है.

संयोजन : चेतना झा, डिजाइनिंग - खुशबू कुमारी

बिहार में पिछले दो महीने में नीतीश की सरकार ने करीब दो लाख शिक्षकों को नियुक्ति पत्र दिये

प्राथमिक विद्यालय में अब हुए 35 छात्र पर एक शिक्षक

संवाददाता । पटना

बिहार में नीतीश सरकार जोर-शोर से शिक्षकों की नियुक्ति में लगे हैं. इसके लिए परीक्षाएं ली जा रही हैं और शिक्षकों की भर्ती की जा रही है. पिछले दो महीने में सरकार ने करीब दो लाख शिक्षकों को नियुक्ति पत्र दिया है.

इतनी संख्या में शिक्षकों की नियुक्ति के बाद अब सरकारी स्कूलों के दिन बहुरने की आस जगी है. बिहार की शिक्षा व्यवस्था की लचर स्थिति किसी से छिपी नहीं है. हालांकि, पिछले कुछ महीनों से सरकार का ध्यान शिक्षा व्यवस्था की ओर गया है. सरकार ने जहां बड़े पैमाने पर शिक्षकों की नियुक्ति की है. वहीं, स्कूलों में बुनियादी ढांचा बेहतर करने को लेकर भी कदम बढ़ाए हैं. सरकारी आंकड़ों पर गौर करें तो बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित शिक्षक नियुक्ति परीक्षा के पहले चरण में उत्तीर्ण एक लाख से अधिक अभ्यर्थियों के बीच पिछले साल दो नवंबर को शिक्षक नियुक्ति बांटने का इतिहास रचा गया. इसी दिन बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शिक्षा विभाग के अधिकारियों को जल्द ही दूसरे चरण की परीक्षा आयोजित करने का निर्देश दिया. इसके बाद 13 जनवरी को 94 हजार से अधिक शिक्षकों को नियुक्ति पत्र दिया गया. बिहार लोक सेवा आयोग की तरफ से दूसरे चरण के 94 हजार से अधिक शिक्षकों की नियुक्ति के बाद राज्य में विद्यार्थी शिक्षक अनुपात में जबरदस्त सुधार हुआ है.

बताया जाता है कि प्राथमिक विद्यालय में अब यह अनुपात 35 छात्रों पर 1 शिक्षक हो गया है. यह राष्ट्रीय विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात के बराबर माना जा रहा है. पहले चरण की विद्यालय अध्यापक की नियुक्ति के बाद यह अनुपात 38 छात्रों पर 1 शिक्षक था. दो लाख शिक्षकों की नियुक्ति से पहले यह अनुपात 45 छात्र पर एक शिक्षक का था, जबकि 2005 में एनडीए की सरकार बनने के बाद यह अनुपात 65 छात्रों पर 1 शिक्षक का था. इसी तरह माध्यमिक स्कूलों में भी विद्यार्थी और शिक्षकों के अनुपात में सुधार हुआ है. आंकड़ों पर गौर करें तो दूसरे चरण की नियुक्ति के बाद 36 विद्यार्थियों पर एक शिक्षक हो गया है. पहले यह अनुपात 88 विद्यार्थियों पर एक शिक्षक का था. शिक्षक नियुक्ति परीक्षा में उत्तर प्रदेश, झारखंड सहित अन्य प्रदेशों के छात्रों ने भाग लिया.

शिक्षक नियुक्त

- राज्य में विद्यार्थी-शिक्षक अनुपात में सुधार हुआ है
- बीपीएससी ले रही है प्रदेश में शिक्षक नियुक्ति परीक्षा

आओ जानें

सामान्य ज्ञान

- किस बीमारी के इलाज के लिए संकल्प प्रोजेक्ट बनाया गया था – एचआईवी
- बहमनी सल्तनत के संस्थापक कौन थे – बहमन शाह
- भारत के किस पड़ोसी देश ने टिकटॉक पर बैन लगाया है – नेपाल
- नंद वंश के संस्थापक कौन थे – महापदमनंद
- कोरोना वायरस से भारत में पहली मौत कहां हुई थी – कर्नाटक
- भारत में सोंगमो झील कहां पर है – सिक्किम
- भारत में गन्ने का सबसे बड़ा उत्पादक राज्य है – उत्तर प्रदेश
- झंडा सत्याग्रह के लिए कौन शहर प्रसिद्ध है – नागपुर
- भारत में कोरोना को महामारी घोषित करने वाला पहला राज्य – हरियाणा
- सोना किस पदार्थ में घुल जाता है – एक्वा रेजिया

ब्रीफ खबरें

पुलिस ने मोहन हत्याकांड का कर दिया खुलासा

आरा। पुलिस ने मोहन सिंह हत्याकांड का खुलासा कर दिया. शहर के मुफस्सिल थाना क्षेत्र के बारा-बसंतपुर गांव में महज पांच सौ रुपए के लिए मोहन की हत्या हुई थी. हत्या के मुख्य आरोपित को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया. वह बारा-बसंतपुर गांव निवासी स्व वकील महतो का पुत्र अजय महतो है. पुलिस की पूछताछ में उसने अकेले ही मोहन की हत्या करने की बात स्वीकार की है. बताया कि गला दबाने के बाद उसने नाखून से ही उसकी आंखें फोड़ दी थी.

एसटीएफ ने सालभर में 547 अपराधी पकड़े

पटना। बिहार में पुलिस अपराधियों पर नकेल कसने के लिए हर संभव कोशिश कर रही है. इसी कड़ी में पिछले एक साल में एसटीएफ ने बड़ी सफलता हासिल की है. एसटीएफ की टीम ने 38 जिलों में 547 मोस्ट वांटे अपराधियों को गिरफ्तार किया है. जानकारी अनुसार गिरफ्तार अपराधियों में 146 विभिन्न जिलों के टॉप 10 और 20 अपराधी शामिल हैं. साथ ही पुलिस ने एक लाख के इनामी फरार अपराधी बैजनाथ मांझी को भी गिरफ्तार किया है. बैजनाथ मांझी 14 अगस्त को गया के शेरघाटी थाने की हाजत से फरार हो गया था.

राहुल गांधी की न्याय यात्रा पर भाजपा प्रदेश अध्यक्ष का बड़ा हमला, बोले सम्राट

नीतीश का सफाया करने में लगे हैं राहुल

संवाददाता । पटना

देश में एक तरफ राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के कार्यक्रम में जुटी है तो दूसरी ओर कांग्रेस न्याय यात्रा को लेकर अपनी राजनीतिक जमीन को मजबूत करने में लगी है. इस क्रम में कांग्रेस नेता राहुल गांधी की भारत जोड़ो न्याय यात्रा शुरू हो रही है. इस पर भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष सम्राट चौधरी ने बड़ा हमला बोला है. उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी बिहार में समाजवादियों का खात्मा चाहती है. राहुल गांधी ने बिल फाड़कर पहले लालू यादव का राजनीतिक कैरियर बर्बाद किया. अब नीतीश कुमार का सफाया करने में लगे हैं. ममता बनर्जी का बहाना बनाकर उन्होंने नीतीश जी को इंडिया गठबंधन का संयोजक नहीं बनने दिया. अयोध्या में नवनिर्मित भव्य राम मंदिर में रामलाल की प्राण प्रतिष्ठा से पहले बीजेपी देशभर में मंदिरों की साफ सफाई का अभियान चला रही है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इसकी शुरुआत की.

पटना में बीजेपी अध्यक्ष सम्राट चौधरी समेत सभी बड़े नेताओं ने मंदिरों में जाकर साफ सफाई की. सम्राट चौधरी ने दीघा विधायक संजीव चौरसिया के साथ खाजपुरा शिव मंदिर आशियाना मोड़ सेवा कार्य में सम्मिलित हुए. बता दें कि 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर मंदिरों में दीपोत्सव का आयोजन होगा. सफाई अभियान के दौरान मीडिया कर्मियों से बात करते हुए सम्राट चौधरी ने कांग्रेस पार्टी और राहुल गांधी पर जमकर निशाना साधा. उन्होंने कहा कि कांग्रेस के 50 साल के शासन में देश का विकास तो नहीं हुआ उल्टे बिहार के समाजवादी नेताओं को बर्बाद करने की साजिश खूब हुई. सम्राट चौधरी ने आरोप लगाया कि जिस ऑर्डिनेंस से लालू प्रसाद यादव का बड़ा फायदा होने वाला था उसे राहुल गांधी ने फाड़ दिया. प्रधानमंत्री भारतीय मनमोहन सिंह भी कुछ नहीं कर पाए और लालू यादव का राजनीतिक कैरियर हमेशा के लिए बर्बाद कर दिया. अब राहुल गांधी के निशाने पर नीतीश कुमार हैं.

बिहार के मुख्यमंत्री और समाजवादी नेता नीतीश कुमार को इंडिया गठबंधन में संयोजक बनाया जाना था. इसके लिए दूसरे दलों से प्रस्ताव भी किया गया लेकिन राहुल गांधी ने ममता बनर्जी का बहाना बनाकर नीतीश कुमार के संयोजक बनने के सभी संभावनाओं पर विराम लगा दिया.

उन्होंने कहा कि राहुल गांधी के नाना दादा और पिता ने 50 सालों तक देश प्रशासन किया लेकिन विकास का कोई काम नहीं हुआ. इसलिए उन्हें माफी यात्रा निकालनी चाहिए. बता दें कि भाजपा द्वारा 14 जनवरी से 21 जनवरी तक सभी मंदिरों में स्वच्छता अभियान चलाया जा रहा है. इसे लेकर हर जगह भाजपा नेता मंदिरों की सफाई में लगे हैं. इसके जरिये वे राम भक्तों में आस्था का नया जोश भरने में लगे हैं. वहीं स्वच्छता अभियान के तहत भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री ऋतुराज सिन्हा ने मंदिर में सफाई की. पाटलिपुत्र कुर्जी के अन्नपूर्णा सदन के बगल में महामृत्युंजय परमेश्वर महादेव मंदिर में झाड़ू लेकर सफाई की. उनके साथ-साथ काफी संख्या में कार्यकर्ता थे. इस अवसर पर ऋतुराज ने कहा कि यह हम सबके लिए गर्व की बात है कि देश एक ऐसे व्यक्ति के नेतृत्व में आगे बढ़ रहा है जो जन कल्याण के साथ साथ हिंदू समाज के पुनर्जागरण का काम कर रहे हैं. नरेन्द्र मोदी की पहल से हमारे देश के संस्कार एवं संस्कृति की गौरवमयी पहचान विश्व पटल पर पुनर्स्थापित हुई है. दूसरी ओर राज्यसभा सदस्य विवेक ठाकुर ने कार्यकर्ताओं के साथ कंकड़बाग में स्थित पंच शिव साईं मंदिर में सफाई एवं स्वच्छता अभियान चलाया और कार्यकर्ताओं को सफाई के लिए उत्साहित किया.

बोले चौधरी

- लालू का राजनीतिक करियर राहुल ने बर्बाद किया
- कांग्रेस यहां समाजवादियों का खात्मा चाहती है

गर्भवती महिला की मौत पर परिजनों का हंगामा

जहानाबाद। एक नर्सिंग होम में उस समय अफरा-तफरी का माहौल कायम हो गया जब इलाज के दौरान गर्भवती महिला की मौत हो गई. मौत से आक्रोशित परिजनों ने डॉक्टर पर लापरवाही का आरोप लगाया. इसके बाद उनलोगों ने पटना गया मुख्य सड़क मार्ग पर शव रख कर जाम कर दिया.

परिजनों का हंगामा देख क्लिनिक के डॉक्टर समेत सभी कर्मी मौके से फरार हो गए. घटना नगर थाना क्षेत्र के ऊंटा मोड़ के पास की है. जानकारी के मुताबिक, रंजन कुमार अरवल जिले के किंजर थाना अंतर्गत सलेमपुर गांव के रहने वाले हैं. उन्होंने अपनी गर्भवती पत्नी शिल्पी देवी को प्रसव के लिए शहर के उंटा मोड़ के पास संचालित एक नर्सिंग होम में भर्ती कराया था. आरोप है कि यहां डॉक्टर और नर्सिंग होम के स्टाफ की अनदेखी के कारण मरीज की स्थिति खराब हो गई. नाजुक स्थिति को देखते हुए डॉक्टर ने एंबुलेंस बुलाकर मरीज को आनन-फानन में पीएमसीएच रेफर कर दिया, लेकिन रास्ते में ही महिला की मौत हो गई. इसके बाद गुस्साए परिजनों ने शव को सड़क पर रख कर एनएच-83 को जाम कर दिया.

30 किलो गांजा के साथ 1 तस्कर हुआ गिरफ्तार

बेतिया। इंडो-नेपाल बॉर्डर स्थित थुकहां गांव से पुलिस ने एसएसबी के सहयोग से 30 किलो गांजा के साथ एक तस्कर को गिरफ्तार किया. वहीं, पुलिस ने तस्कर के पास से गांजा के अलावा एक लग्जरी गाड़ी और दो मोबाइल फोन भी जब्त किया. पुलिस अधीक्षक डी.

अमरकेश ने बताया कि भंगहा थाने की पुलिस ने गुप्त सूचना पर पचरौता एसएसबी के सहयोग से यह कार्रवाई की है. इस संयुक्त कार्रवाई में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है. वहीं, जब्त गांजा की कीमत 12 लाख रुपये आंकी गई है. गांजा तस्कर की पहचान भंगहा थाना क्षेत्र के भंगहा गांव निवासी शत्रुध्न भगत के 20 वर्षीय पुत्र अर्जुन कुमार के रूप में की गई है, जिसे 30 किलो गांजा के साथ पुलिस ने गिरफ्तार किया है. एसपी ने बताया कि पुलिस को इस मामले में गुप्त सूचना मिली थी कि एक गांजा तस्कर गांजा लेकर आ रहा है. इस सूचना के आधार पर पचरौता एसएसबी के सहयोग से छापेमारी कर तस्कर को गिरफ्तार गया गया है.

कारोबार

अशनिशा ने गुजरात सरकार से मिलाया हाथ

नयी दिल्ली। अशनिशा इंडस्ट्रीज ने गुजरात में 60 करोड़ रुपये के निवेश से नवीकरणीय ऊर्जा (आरई) परियोजनाएं स्थापित करने के लिए गुजरात सरकार के साथ एक शुरुआती समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं. कंपनी ने रविवार को यह जानकारी दी. बयान के अनुसार, कंपनी के अधिकारियों ने गांधीनगर में वाइब्रेंट गुजरात वैश्विक शिखर सम्मेलन (वीजीजीएस) 2024 के दौरान निगम आयुक्त प्रशासन के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए.

एफसीआई प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करे : गोयल

नयी दिल्ली। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने रविवार को सार्वजनिक क्षेत्र के भारतीय खाद्य निगम (एफसीआई) से अपने समग्र कामकाज में आधुनिक प्रौद्योगिकियों को अपनाने, परिचालन की लागत को कम करने और सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत किसानों और गरीब लाभार्थियों का भरोसा जीतने के लिए कहा. खाद्य एवं उपभोक्ता मामलों के मंत्री गोयल ने एफसीआई और उसके कर्मचारियों से किसी भी गलत काम को रोकने और अपने परिचालन में भ्रष्टाचार बर्दाश्त नहीं करने को भी कहा.

टीसीपीएल दो अधिग्रहण का वित्तपोषण करेगी

नयी दिल्ली। टाटा कंज्यूमर प्रोडक्ट्स (टीसीपीएल) अपने आंतरिक नकदी भंडार और ब्रिज फाइनेंसिंग (अल्पकालिक ऋण) के जरिये कैपिटल फूड्स लिमिटेड और ऑर्गेनिक इंडिया लिमिटेड का अधिग्रहण करेगी. इन कंपनियों का सामूहिक उपक्रम मूल्य 7,000 करोड़ रुपये है. कंपनी के प्रबंध निदेशक और मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) सुनील डिसूजा ने रविवार को यह जानकारी दी. उन्होंने कहा कि दोनों अधिग्रहण ऐसे क्षेत्रों के हैं जो वृद्धि का भारी अवसर प्रदान करते हैं. उन्होंने कहा कि इसके अलावा टीसीपीएल खाद्य और पेय खंड में अपने पोर्टफोलियो को मजबूत करना जारी रखेगी.

मुंबई में बने मेगा सीएफसी को लेकर जीजेइपीसी अध्यक्ष विपुल शाह बोले

रत्न व्यापार में निर्यात क्षेत्र को बदलेगा

भाषा । मुंबई

अन्य क्षेत्रों की तरह देश में रत्न और आभूषण के बाजार में भी तेजी आ रही है. इसे लेकर सरकार भी इस सेक्टर में नयी परियोजनाएं ला रही हैं. इसी में एक मुंबई के एसईईपीजेड सेज में बना मेगा कॉमन फैसिलिटी सेंटर ''भारत रत्नम मेगा सीएफसी है, जिसका उद्घाटन हाल ही में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया है. एसईईपीजेड सेज में बना मेगा कॉमन फैसिलिटी सेंटर केंद्र सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय की परियोजना है.

इसे जीजेईपीसी इंडिया और एसईईपीजेड सेज अथॉरिटी ने मिल कर विकसित किया है. इस सेंटर को बनाने में केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने विशेष रुचि रही है. इस परियोजना को लेकर आभूषण कारोबारियों में काफी उत्साह है. जेम्स एंड ज्वैलरी एक्सपोर्ट प्रोमोशन काउंसिल (जीजेइपीसी) के अध्यक्ष विपुल शाह का कहना है कि इस इस परियोजना का उद्देश्य जेम्स एंड ज्वैलरी इंडस्टी के अंतर्निहित कौशल को बढ़ावा देने के लिए एक विश्वस्तरीय बुनियादी ढांचा तैयार करना है. उन्होंने उम्मीद जताई कि मेगा कॉमन फैसिलिटेशन सेंटर उद्यमियों, एमएसएमई और छोटे कारोबारियों को आगे बढ़ने और फलने-फूलने के लिए एक सहायक और सहयोगात्मक वातावरण प्रदान करेगा.

उन्होंने बताया कि भारत रत्नम सीएफसी में 3डी मेटल प्रिंटर सहित अत्याधुनिक उपकरण होंगे. यह रत्न एवं आभूषण क्षेत्र के कारीगरों के लिए प्रशिक्षण और कौशल विकसित करने वाले केंद्र के रूप में काम करेगा. यहां दिव्यांग छात्रों के प्रशिक्षण के लिए अलग से व्यवस्था होगी. शाह का कहना है कि मेगा सीएफसी रत्न और आभूषण व्यापार में निर्यात क्षेत्र को बदल देगा और घरेलू विनिर्माण में भी मदद करेगा. विपुल शाह ने कहा कि भारतीय रत्न और आभूषण समुदाय की ओर से मैं प्रधानमंत्री को उनके दूरदर्शी दृष्टिकोण के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं. सरकार का दृढ़ समर्थन, जिसका उदाहरण एसईईपीजेड, मुंबई में मेगा सीएफसी भारत रत्नम की स्थापना है. उद्योग के भविष्य के विकास के लिए एक मजबूत नींव रखता है. मेगा सीएफसी एसईजेड निर्यात लक्ष्य को 7 अरब डॉलर से दोगुना कर 15 अरब डॉलर करने की उद्योग की योजना का अभिन्न अंग है. इस कॉमन फेसिलिटी सेंटर में सीएडी और सीएडी रेंडरिंग सेवाएं, 3डी प्रिंटिंग सेवाएं-धातु, 3डी प्रिंटिंग सेवाएं- सिरेमिक, 3डी प्रिंटिंग सेवाएं-रेजिन और वैक्स, कास्टिंग सेवाएं (सोना, प्लैटिनम और चांदी), सीएनसी सेवाएं, रिफ़ाइनिंग सेवाएं (सोना, प्लैटिनम और चांदी), बड़े पैमाने पर फिनिशिंग सर्विसेज, एलजीडी टेस्टिंग, हॉलमार्किंग सेवाएं, रंग लेजर उत्कीर्णन सेवाएं, इनेमल/कोटिंग सर्विसेज, एक्सआरएफ सहित लैब परीक्षण सर्विसेज, फोटोग्राफी एवं वीडियो सर्विसेज तथा ट्रेनिंग एंड स्किलिंग स्कूल है.

आभूषण उद्योग का देश की जीडीपी में 7% योगदान है

देश में रत्न और आभूषण उद्योग आज भारत के सबसे बड़े व्यवसायों में से एक बन गया है. यह देश की जीडीपी में 7% और भारत के कुल व्यापारिक निर्यात में 15.71% का योगदान देता है. यह उद्योग बड़ी मात्रा में विदेशी मुद्रा लाता है और संगठित और असंगठित दोनों क्षेत्रों में 4.64 मिलियन से अधिक श्रमिकों को रोजगार प्रदान करता है. 2020 के आंकड़ों के अनुसार, भारत का रत्न और आभूषण निर्यात दुनिया के कुल निर्यात का 3.5% है, जो इसे दुनिया के शीर्ष 7 सबसे बड़े निर्यातकों में से एक बनाता है. दुनिया के कुल निर्यात में हीरे के आभूषण 29.0% हिस्सेदारी के साथ पहले स्थान पर हैं. इसके बाद 22.0% और 32.7% हिस्सेदारी के साथ चांदी-कट हीरे और प्रयोगशाला में विकसित हीरे और सिंथेटिक पत्थर हैं. रत्न और आभूषण के सबसे बड़े निर्यातकों में से एक होने के नाते, यह उद्योग देश के कुल विदेशी मुद्रा भंडार में एक बड़ा योगदान दे रहा है. रिपोर्ट के अनुसार, भारत में पिछले वर्ष की तुलना में 54.13% की भारी वृद्धि देखी गई है.

बढ़ेगा व्यापार

- मेगा सीएफसी उद्योग मंत्रालय की परियोजना है
- इस सेंटर को जीजेईपीसी इंडिया ने विकसित किया है

ओएनजीसी ने की महानदी बेसिन में दो गैस की खोज

एजेंसी । नयी दिल्ली

सार्वजनिक क्षेत्र की ऑयल एंड नैचुरल गैस कॉरपोरेशन (ओएनजीसी) ने बंगाल की खाड़ी में महानदी बेसिन के गहरे पानी वाले ब्लॉक में लगातार दो महत्वपूर्ण प्राकृतिक गैस खोज की हैं. मामले की जानकारी रखने वाले दो सूत्रों ने बताया कि कंपनी ने ब्लॉक एमएन-डीडब्ल्यूएचपी-2018/1 में खोज की, जिसे उसने 2019 में मुक्त क्षेत्र लाइसेंसिंग नीति के तहत नीलामी के तीसरे दौर में हासिल किया था. गौरतलब है कि ये खोजें उस क्षेत्र में की गई हैं, जिसे पहले राष्ट्रीय सुरक्षा हितों के कारण 'नो-गो' क्षेत्र के रूप में वर्गीकृत किया गया था.

उन्होंने बताया कि पहली खोज जिसका नाम उक्तल है, 714 मीटर पानी की गहराई में की गई. शुरुआती परीक्षण के दौरान इससे प्रतिदिन तीन लाख घनमीटर से अधिक गैस निकली. दूसरी खोज 1,110 मीटर गहरे पानी में की गई है. उन्होंने बताया कि ओएनजीसी ने इनकी जानकारी अपस्ट्रीम नियामक हाइड्रोकार्बन महानिदेशालय (डीजीएच) को दे दी है. अब वह पूल आकार और वाणिज्यिक व्यवहार्यता का आकलन कर रही है.

सूत्रों ने बताया कि सरकार द्वारा तेल एवं गैस की खोज और उत्पादन के लिए करीब एक लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को प्रतिबंध से मुक्त करने के बाद ओएनजीसी तेजी से खोज करने में सक्षम हुई. 'नो-गो' क्षेत्र से तात्पर्य वह स्थान हैं जो या तो मिसाइल परीक्षण के रास्ते में या उपग्रह प्रक्षेपण मार्ग पर आते हैं. 2022 में 98 प्रतिशत से अधिक ऐसे क्षेत्रों पर प्रतिबंध हटा दिए गए थे. इससे ऊर्जा कंपनियों को तेल तथा गैस खोजने के लिए जहाज और 'ड्रिलिंग करने वाले जहाज' भेजने की अनुमति मिल गई. भारत अपनी करीब आधी गैस जरूरत को आयात से पूरा करता है. ऐसे में नई खोज देश की ऊर्जा सुरक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं. भारत ने 2030 तक अपने ऊर्जा इस्तेमाल में प्राकृतिक गैस की हिस्सेदारी को बढ़ाकर 15 प्रतिशत करने का लक्ष्य रखा है. यह अभी 6.3 प्रतिशत है.

शेयर भारत के आर्थिक कारक जीडीपी वृद्धि दर, वाहन खरीदी, निजी निवेश अच्छे बने हुए हैं, परंतु निर्माण क्षेत्र में कुछ धीमापन है

निफ्टी 22000 के ऊपर बंद होता है तो 22124 से 22400 का स्तर दिख सकता है

भारतीय शेयर मार्केट ने इस बार तो जनवरी के द्वितीय सप्ताह में ही सार्वकालिक सर्वोच्च स्तर बना दिया. निफ्टी ने 21928.25 का नया स्तर छुआ. यद्यपि पिछला सप्ताह तेजड़ियों तथा मंदड़ियों के मध्य भीषण संघर्ष सा रहा. व्यापारिक सत्रों के मध्य निफ्टी में सौ सौ अंकों की गिरावट दिखी. लगा मार्केट मंदी की ओर है परंतु तेजड़िये भी अपने दुर्ग की रक्षा करने में सफल रहे तथा अंततः निफ्टी पिछले सप्ताह 184 अंक बढ़ बंद हुआ. चूंकि मार्केट ने नई ऊंचाई बनाई है. ऐसे में अगले स्तर के लिए आकाश खुला है. सोमवार को निफ्टी 22000 के ऊपर बंद होता है तो 22124 से 22400 का स्तर भी दिख सकता है. पिछले सप्ताह दैनिक आधार पर जैसा बड़ा तथा अप्रत्याशित उतार चढ़ाव दिखा. उनका संकेत है कि मार्केट में कुछ पक रहा है. अप्रत्याशित स्तर भी दिख सकते हैं. ऐसे में लघु अवधि की ट्रेडिंग अतिरिक्त सावधानी के साथ की जानी चाहिए. फ्यूचर श्रेणी के ट्रेड पुट अथवा कॉल से सुरक्षित कर के करना चाहिए. मार्केट में छुपे हुए से बिकवाल तथा खरीदार दिखें हैं, अर्थात ऐसे खरीदार बिकवाल जो अवधारणा के विरुद्ध बड़ा लेनदेन कर रहे हैं. घोस्ट ट्रेडर.जब अवधारणा बनती है कि आज निफ्टी नीचे रहना चाहिए, गिफ्ट निफ्टी, विदेशी मार्केट भी नीचे हैं. उस दिन निफ्टी तेज खुल जाता तथा तेज ही रहता. इसका उल्टा भी हो रहा. यह किसी दिशा विशेष में तेजी अथवा मंदी में एक बड़ी चाल का संकेत लग रहा है. पलड़ा तेजड़ियों का ही भारी लग रहा है पर फिर भी मार्केट आपको चौंकाने के लिए तो जाना ही जाता है. भारत के आर्थिक कारक जीडीपी वृद्धि दर, वाहन खरीदी, निजी निवेश अच्छे बनें हुए हैं, परंतु निर्माण क्षेत्र में कुछ धीमापन दिख रहा है.

भारत में प्रति व्यक्ति खपत अभी बहुत नीचे है. इसका एक सकारात्मक पक्ष यह है कि इस कारण अभी भी बहुत अधिक वृद्धि की संभावना है, जो भारत में व्यापार में कई गुणा वृद्धि कर सकता है. भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर है ही. अतः भारतीय शेयर मार्केट का दीर्घकालीन में तो अच्छा है. बड़ी गिरावटों का उपयोग शेयर इकट्ठा करने में ही किया जाना चाहिए. क्रूड का मूल्य 27 महीने के निचले स्तर पर एशिया के लिए हुआ है. कारण सऊदी अरब ने मूल्य कम किया एशिया के लिए. यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बहुत अच्छा समाचार है. संकेत है कि क्रूड में मूल्य युद्ध है तथा प्रमुख उत्पादक राष्ट्र नीचे भावों में बेचने को तैयार हैं. रूस ने भी ऐसा किया है. भारत में वेनेजुएला के रूप में क्रूड के लिए नया स्त्रोत ढूंढ लिया है. एक बड़े तेल खोज का भी भी समाचार है जो भारत की आवश्यकता का 7 प्रतिशत कहा जा रहा है.

क्रूड भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों में से एक है. यदि क्रूड के मूल्यों में तेजी न होने के कारण बनते हैं तो भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए यह एक वरदान सदृश होगा. भारतीय अर्थव्यवस्था यदि क्रूड झटके से सुरक्षित होने की ओर होती है तो इससे भारत के रेटिंग भी अच्छी होगी तथा शेयरों में विदेशी निवेश भी बहुत बढ़ सकता है. निफ्टी ही नहीं मिड कैप तथा स्मॉल कैप सूचकांकों ने भी पिछले सप्ताह नई ऊंचाई बनाई. तेजी का आधार व्यापक होता जा रहा है. मार्केट का अगुवा रिलायंस अच्छी तेजी दिखा रहा है. परिणाम सत्र प्रारंभ हो चुके हैं. इंफोसिस तथा टीसीएस के दिसंबर 23 के तिमाही परिणामों से मार्केट प्रसन्न है. अन्य प्रमुख कंपनियों के परिणाम भी घोषित होने की हैं. परिणाम के पूर्व भी एक सुदृढता सी दिख रही है. यदि परिणाम अपेक्षा के अनुरूप, अच्छे आए तो शेयर विशेष में तो अच्छा उछाल देखा जा सकता है. यह सूचकांक को भी ऊपर की ओर खींच सकता है. ध्यान रखें, शेयर मार्केट में लाभ कमाने के लिए एक महत्वपूर्ण कारक यह है कि आपने किस भाव पर कौन शेयर खरीदे. शेयरों के चुनाव में इसका अवश्य ध्यान रखें. यह भी ध्यान में रखें कि कितना प्रतिशत बढ़ने की संभावना है. एफआईआई के पिछले सप्ताह 4000 करोड़ रूपए के शेयर नकद संभाग में बेचे, फिर भी मार्केट ने नई ऊंचाई बनाई. एफआईआई अब भारतीय शेयर मार्केट के एकमात्र सम्राट नहीं रहें हैं. वो भी एक प्रतिभागी मात्र रह गए हैं.

बड़ी तेजी लाने में भले उनका योगदान हो सकता है, बड़ी मंदी में नहीं. घरेलू संस्थागत निवेशकों ने पिछले सप्ताह बड़ी खरीदारी कर एफआईआई की बिकवाली का नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ने दिया. डाउ में पिछले सप्ताह 127 अंकों की बढ़त रही. यूएस में मुद्रास्फीति के आंकड़े में सामान्य वृद्धि हुई है. वैश्विक निवेशक ब्याज दरों में कटौती होने के पक्ष में हैं.

शशांक भारद्वाज
वीपी व्हॉइस ब्रोकिंग

पूर्व सीएम ने साहिबगंज कॉलेज में सोहराई पर्व पर आयोजित समारोह में लिया भाग

प्रकृति से प्रेम व मानवता का संदेश देता है सोहराई पर्व : बाबूलाल

- बाबुलाल व हेंब्रम ने लिया नृत्य का आनंद लिया
- आदिवासी कल्याण छात्रावास की ओर से किया गया था आयोजन

संवाददाता । साहिबगंज

झारखंड का प्रसिद्ध पर्व सोहराई के अंतिम दिन रविवार को साहिबगंज महाविद्यालय में आदिवासी कल्याण छात्रावास की ओर से भव्य कार्यक्रम का आयोजन हुआ. समारोह में झारखंड प्रदेश भाजपा के अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी भी शरीक हुए. उन्होंने बोरियो विधायक लोबिन हेंब्रम के साथ मांदर की थाप पर युवाओं के साथ कंधा से कंधा मिलाकर नृत्य का आनंद भी लिया. उन्होंने कहा कि सोहराई पर्व प्रकृति प्रेम व मानवता का संदेश देता है. दुखों को अपनी मेहनत से खुशी में बदलने और फिर उस खुशी को सबके साथ बांटना ही सोहराई पर्व है. यह पर्व आदिवासी सभ्यता व संस्कृति के दर्शन के साथ झारखंड में सशक्त व विकसित होते आदिवासी समाज का प्रतीक भी है.

सोहराई पर्व पर आयोजित समारोह को संबोधित करते बाबूलाल मरांडी

आदिवासी युवाओं के लिए कुछ नहीं कर रही है सरकार : लोबिन हेंब्रम

बोरियो विधायक लोबिन हेंब्रम ने कहा कि आदिवासी युवाओं ने अपनी मेहनत से शिक्षा हासिल कर समाज को बदलने का काम किया है. लेकिन अफसोस है कि राज्य की वर्तमान सरकार शिक्षा सहित आदिवासी युवाओं व समाज के उत्थान के लिए कुछ नहीं कर रही है. समारोह में राजमहल विधायक अनंत ओझा, डीसी रामनिवास यादव, डीएफओ मनीष तिवारी, कॉलेज के प्राचार्य डॉ राहुल कुमार संतोष, डॉ रणजीत कुमार सिंह, डीएसओ अमर प्रसाद, आदिवासी कल्याण छात्रावास के छात्र नायक विनोद मुर्मू, सचिव लक्ष्मण टुडू, अजय टुडू, लक्ष्मी टुडू सहित बड़ी संख्या में समाज के लोग मौजूद थे.

स्टेशन पर बाबूलाल का जोरदार स्वागत

साहिबगंज। रविवार को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष व झारखंड राज्य के प्रथम मुख्यमंत्री बाबूलाल मरांडी वनांचल एक्सप्रेस से रविवार को साहिबगंज पहुंचे. साहिबगंज रेलवे स्टेशन पर उतरने पर राजमहल विधायक अनंत ओझा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने उनका जोरदार स्वागत किया. इस मौके पर भाजपा के जिलाध्यक्ष रामदरश यादव, नगर परिषद के पूर्व उपाध्यक्ष रामानंद साह, एवं अनेक कार्यकताओं आदि मौजूद थे. कार्यकर्ताओं ने जोरदार नारे लगाए. साहिबगंज रेलवे स्टेशन से वे सीधे नया परिसदन पहुंचे जहां कार्यकर्ताओं से उन्होंने मुलाकात की.

आओ जानें सामान्य ज्ञान

झारखंड का राजकीय पुष्प कौन-सा हैं?
पलास

झारखंड में बेतला नेश्जनल पार्क की स्थापना कब हुई थी?
1986 में

झारखंड में कितने जिले नए बनाए गए हैं?
6 राज्य

राज्य के किस जिले में तोपचांची झील स्थित हैं?
धनबाद

झारखंड से होकर कितने राष्ट्रीय राजमार्ग गुजरते हैं?
13 राजमार्ग

किस जिलें में राजमहल फासिल अभ्यारण्य स्थित हैं?
साहिबगंज

राज्य में कुएं से सिंचाई की जाने वाला क्षेत्र हैं?
गुमला

झारखंड में लौहे इस्पात के उत्पादन कब शुरु हुआ था?
1913

झारखंड में एल्युमिनियम उद्योग की स्थापना कब हुई थी?
1937 ई. में

किन चट्टानों को धात्विक खनिज का भंडार कहा जाता हैं?
धारवाड़ युगीन

ब्रीफ खबरें

दुर्घटना में घायल उपमुखिया पति की मौत

गावां। सड़क दुर्घटना में घायल गावां प्रखंड की मंझने पंचायत के उपमुखिया पति अशोक पंडित की इलाज के दौरान मौत हो गई. रविवार को गावां मुखिया संघ के सदस्य रविवार को अशोक पंडित के घर पहुंचे और परिजनों से मिलकर ढांढ़स बंधाया. आर्थिक मदद भी की. मुखिया संघ के अध्यक्ष कन्हाय कुमार ने कहा कि सभी स्थानीय जनप्रतिनिधि इस दुख की घड़ी में पीड़ित परिवार के साथ हैं. उन्होंने हर संभव मदद का भरोसा भी दिया.

बोकारो जिला प्लस टू शिक्षक संघ की बैठक

बोकारो। झारखंड प्लस टू शिक्षक संघ बोकारो जिला कार्यकारिणी समिति की बैठक रविवार को सिटी पार्क, बोकारो में आयोजित हुई. जिसमें आगामी 20 जनवरी को आयोजित वार्षिक मिलन सह वनभोज समारोह की तैयारी को अंतिम रूप प्रदान करने के लिए कई निर्णय लिए गए. इस अवसर पर मुख्य अतिथि हेतु झारखंड प्लस टू शिक्षक संघ के प्रांतीय अध्यक्ष योगेंद्र प्रसाद ठाकुर एवं विशिष्ट अतिथि हेतु प्लस टू शिक्षक संघ, गढ़वा के जिला अध्यक्ष पवन तिवारी के नाम पर सहमति बनी. उक्त कार्यक्रम की विषय सूची को प्रस्तुत करने की जिम्मेदारी संरक्षक डॉ अजय कुमार पाठक को सौंपी गई.

ग्रामीणों के बीच कंबल और कपड़े वितरित

धनबाद। सरायढेला चैंबर ऑफ कॉमर्स ने रविवार को गोविंदपुर प्रखंड अंतर्गत मरिचो पंचायत के बेहराडीह, भोलमारा डिग्री, पंजनियां, घनुवाडीह, ताराजोरी आदि गांवों में जरुरतमंदों ग्रामीणों के बीच कंबल एवं गर्म कपड़े का वितरण किया गया. मौके पर सरायढेला चैंबर आफ कामर्स धनबाद के जिला अध्यक्ष शिव आशिष पांडेय, सचिव आशुतोष कुमार ओझा, कोषाध्यक्ष कालीचरण प्रसाद, समाजसेवी रंजीत कुमार महतो आदि मौजूद थे.

इमाम एसोसिएशन ने किया विरोध प्रदर्शन

पाकुड़। ऑल इंडिया इमाम एसोसिएशन झारखंड प्रदेश के संयोजक मो. आसराफुल शेख के नेतृत्व में स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा अधिसूचना नियमावली झारखंड राजकीयकृत प्रारंभिक विद्यालय शिक्षक प्रन्नति नियमावली 2024 के विरुद्ध पाकुड़ जिले में ऑल इंडिया इमाम एसोसिएशन के द्वारा उर्दू शिक्षक के पदों को खत्म करने को लेकर झारखंड सरकार के खिलाफ विरोध प्रदर्शन किया गया. स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग द्वारा अधिसूचना लिए झारखंड सरकार उर्दू भाषी व उर्दू लिपि को खत्म करने की साजिश रचने में लगे हुए हैं.

विस्थापित आदिवासी सहयोग समिति की बैठक

जरीडीह। विस्थापित आदिवासी सहयोग समिति, जय झारखंड विस्थापित मोर्चा एवं स्लैग कंपार्टमेंट मोर्चा की समीक्षा बैठक रविवार को बोदरोटांड स्थित कार्यालय में हुई. महासचिव प्रदीप महतो एवं महासचिव सोनू ने कहा कि 10 जनवरी को विस्थापितों द्वारा बीएसएल गेट जाम का कार्यक्रम पूर्ण रूपेण सफल रहा. साथ ही कार्यक्रम में आए बीएसएल प्रबंधन के द्वारा आगामी 15 दिनों में सकारात्मक पहल करते हुए प्लांट में चल रहे ठेकेदारी के कामों में 75 प्रतिशत स्थानीय आदिवासी, मूलवासी विस्थापितों को नियोजन देने सहित अन्य मांगों पर सकारात्मक पहल का आश्वासन मिला है.

पाकुड़ के लोगों को मिली बड़ी सौगात

अमृत भारत ट्रेन पाकुड़ में रुकी

संवाददाता। पाकुड़

- मालदा से बेंगलुरु तक सप्ताह में एक बार चलती ट्रेन
- अमर बाउरी ने हरी झंडी दिखा कर ट्रेन को किया रवाना

अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन के पाकुड़ में रविवार को पहली बार ठहराव पर झारखंड विधानसभा नेता प्रतिपक्ष भाजपा के विधायक अमर बावरी और राज्यसभा सांसद आदित्य साहू ने पाकुड़ स्टेशन से हरी झंडी दिखाकर किया रवाना. मालदा से बेंगलुरु तक चलने वाली सप्ताहिक ट्रेन का पाकुड़ में रविवार ठहरी. मौके पर हावड़ा रेल मंडल द्वारा आयोजित पाकुड़ स्टेशन के प्लेटफार्म नंबर एक पर संबोधित करते हुए अमर बावरी ने कहा कि पाकुड़ के लोगों को आज बहुत बड़ी सौगात मिली है बदलते भारत का सौगात पाकुड़ के लोगों को नरेंद्र मोदी ने दिया. भारतीय रेल आज आम लोगों के लिए लाइफ लाइन बन गया है ट्रेन का पाकुड़ में ठहराव होने से यहां के लोगों को काफी सुविधा मिलेगी. आज हमें विकसित भारत के लिए संकल्प लेने की जरूरत है विश्व भर में भारत को विकसित देश बनाना और देश में नरेंद्र मोदी का प्रधानमंत्री पद पर बिठाना है.

वहीं राज्यसभा सांसद आदित्य साहू ने कहा कि नरेंद्र मोदी ने देश की गरीबी को बहुत करीब से देखा है और वे छोटी-छोटी समस्याओं को बहुत गंभीरता से लेकर उस पर निराकरण करने का काम कर रहे हैं देश के आजाद होने के बाद पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने जिस प्रकार देश के लोगों का सेवा कर रहे हैं उनकी सेवा की चर्चा पूरे विश्व में हो रही है यह हमारे लिए गर्व की बात है. मौके पर उप विकास आयुक्त शाहिद अख्तर एसडीओ हरिवंश पंडित एसडीपीओ भाजपा जिला अध्यक्ष अमृत पांडे पूर्व विधायक बेनी प्रसाद गुप्ता अनुग्रहित प्रसाद शाह पिंकू शुक्ला बबलू भगत है सबरी पाल राणा शुक्ला विश्वनाथ भगत शर्मिला रजक मिसफिका हसन पंकज शाह शंभू भगत सहित अन्य मौजूद थे.

आम लोगों को होगी सुविधा : डीआरएम संजीव

वही हावड़ा रेल डिवीजन के डीआरएम संजीव कुमार ने कहा कि पाकुड़ में अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन का ठहराव होने से यहां के आम लोगों को काफी सुविधा होगी अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेन का 30 दिसंबर को नरेंद्र मोदी ने शुरुआत की है इस ट्रेन में राजधानी की तरह सुविधा दी गई है. वहीं झारखंड सरकार में मंत्री सह विधायक कांग्रेस पार्टी एवं उनके प्रतिनिधि तथा स्थानीय सांसद एवं उनके प्रतिनिधि झामुमो दिखाई नहीं दिए. बीते कल निमंत्रण पत्र पर मंत्री एवं सांसद का नाम नहीं होने के कारण पार्टी की ओर से बैठक कर विरोध जताया गया था.

ट्रेन के चालक-संरक्षक का किया गया स्वागत

13434 डाउन मालदा टाउन बेंगलुरू अमृत भारत एक्सप्रेस का ठहराव झारखंड के प्रथम मुख्यमंत्री-सह-प्रदेश अध्यक्ष बाबूलाल मरांडी के आग्रह पर रेल मंत्री भारत सरकार अश्विनी वैष्णव के द्वारा पाकुड़ रेलवे स्टेशन पर ठहराव दिया गया, जिसके प्रथम दिवस पर रेलवे स्टेशन पाकुड़ पर नागरिक अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया,जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में झारखंड विधानसभा के नेता प्रतिपक्ष अमर कुमार बाउड़ी,राज्यसभा सांसद आदित्य प्रसाद साहू,डीआरएम हावड़ा संजीव कुमार,उप विकास आयुक्त शाहिद अख्तर,अनुमंडल पदाधिकारी हरिवंश पंडित अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी अजीत कुमार विमल सहित हावड़ा मंडल के सभी वरीय पदाधिकारी एवं भारी संख्या में पाकुड़ के नागरिक उपस्थित थे. लोगों का उत्साह चरम पर था .चहुओर भारत माता की जय,वंदे मातरम,नरेंद्र मोदी जिंदाबाद,बाबूलाल मरांडी जिंदाबाद का जय घोष हो रहा था. पाकुड़ रेलवे स्टेशन पर भारी उत्साह का माहौल था .मोदी जी की चर्चा जोरों पर थी,सभी के मुख से प्रधानमंत्री मोदी और बाबूलाल की तारीफें हो रही थी .लोग गदगद थे.

स्व.सुमित केसरी मेमोरियल प्राइजमनी फुटबॉल टूर्नामेंट

ब्लैक टाइगर भंवराटोली बना चैंपियन

संवाददाता। पालकोट

पालकोट के कंदर्प हाई स्कूल मैदान में संपन्न तीन दिवसीय स्व.सुमित केसरी मेमोरियल प्राइजमनी फुटबाल टूर्नामेंट के फाइनल मैच में ब्लैक टाइगर भंवरा टोली की टीम ने एफसी पालकोट को पराजित कर खिताब पर कब्जा जमाया. राज्यसभा सांसद समीर उरांव, पूर्व विधायक शिव शंकर उरांव, प्रमुख सोनी लकड़ा, सांसद प्रतिनिधि सूरज देव सिंह, राम अवध साहू, शिव प्रसाद साहु आदि ने स्व.सुमित केसरी के तस्वीर पर श्रद्धासुमन अर्पित किया और खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर मैच आरंभ कराया. इससे पहले लगभग पचास असहाय जरूरतमंदों के बीच अतिथियों ने कंबल का वितरण किया. मैच एकतरफा रहा और ब्लैक टाइगर भंवराटोली की टीम ने एफसी पालकोट को तीन गोल से पराजित कर दिया. विजेता व उप विजेता टीम को भाजपा नेता मंगल सिंह भोगता और सदानंद बेसरा ने ट्राफी व प्राइजमनी देकर पुरस्कृत किया. इस अवसर पर पिंटू सिंह, केदार साहू, मनीष साहू, मनोज साव केसरी आदि शामिल थे. आयोजन समिति की ओर से अतिथियों का स्वागत किया गया. इस अवसर पर आयोजन समिति के अध्यक्ष राधेश्याम केसरी, सत्येंद्र केसरी, गोपाल केसरी, बेचन प्रसाद, प्रतिमा देवी, जितेंद्र लाल, पिंटू केसरी गुड्डू सिंह, मनोज केसरी, सूरज वर्मा, कौशल साहू, सुनील केसरी आदि उपस्थित थे.

खास बातें

- ब्लैक टाइगर भंवरा टोली ने एफसी पालकोट को हराया
- मैच से पहले लगभग पचास लोगों के बीच कंबल वितरित

'मानव सेवा के लिए प्रभु यीशु के मार्ग पर चलना जरुरी'

सिमडेगा। सदर प्रखंड के मुड़ीया चर्च में एवं कुरडेग केंदूटोली में पारिस स्तरीय क्रिसमस मिलन समारोह का आयोजन धूमधाम के साथ किया गया. दोनों ही स्थानों में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में सिमडेगा विधायक भूषण बाड़ा उपस्थित थे. उनके साथ जिप सदस्य जोसिमा खाखा भी शामिल हुई. मुड़िया चर्च में फादर सुशील गुड़िया,फादर सुमन कुल्लू के द्वारा पवित्र मिस्सा बलिदान चढ़ाया. जबकि कुरडेग चर्च में फादर सुनील तिर्की,फादर बिपिन सोरेंग, फादर अभिनाश टोप्पो,फादर अमृत ने मिस्सा बलिदान चढ़ाया. मौके पर चरणी में आशीष जल का छिड़काव भी किया गया. अपने संदेश में विधायक भूषण बाड़ा ने कहा कि सच्चाई व मानव सेवा करने के लिए प्रभु यीशु के बताए मार्ग पर चलना जरूरी है. उन्होंने कहा कि प्रभु ने दुख भोग कर जिस तरह मानव की सेवा की थी.

ट्रस्ट बाल तस्करी पर काम कर रही है: शंकर रवानी

संवाददाता। महुदा

झारखंड ग्रामीण विकास ट्रस्ट के प्रधान कार्यालय कंचनपुर में रविवार को कार्यकर्ताओं की समीक्षा बैठक हुई. इसकी अध्यक्षता पूनम वर्मा ने की. बैठक में कार्यकर्ताओं द्वारा ग्राम स्तर में कर रहे कार्यों का समीक्षा किया गया तथा बाल विवाह रोकथाम सर्वेक्षण कार्य को ससमय पुरा करने पर जोर दिया गया. बैठक को सम्बोधित करते हुए हुए झारखंड ग्रामीण विकास ट्रस्ट के संस्थापक शंकर रवानी ने कहा कि बाल विवाह मुक्त भारत निर्माण के लिए झारखंड ग्रामीण विकास ट्रस्ट कैलाश सत्यार्थी चिल्ड्रेन फाउंडेशन के सहयोग से धनबाद जिला के 150 गांव में सघन कार्य कर रही है. फिल्ड मोबलाइजर घर घर में जाकर घर के प्रत्येक सदस्यों को बाल विवाह से होने वाले अपराधों के बारे में जानकारी दें रहे है. लोगों को जागरूक कर रहे हैं. इसके अलावे बाल यौन शौषण, बाल तस्करी/बाल मजदूरी रोकथाम पर कार्य कर रही है. मई 2023 से अभियान का शुरुआत किया गया है. आज के दिन कुल 2,24,069 लोगों को बाल विवाह नहीं कराने का शपथ दिलाया गया है. साथ ही 22 बाल विवाह रोका गया है. 08 मामले वाल विवाह का लंबित हैं. जिसमें मामला दर्ज नहीं हो पाया है. शंकर रवानी ने आगे कहा कि जिला प्रशासन का भी सहयोग भरपूर मिल रहा है यह अभियान आगे भी जारी रहेगा. बैठक में कोषाध्यक्ष विनोद महतो, जिला समन्वयक नईमुद्दीन अंसारी, काउंसलर सीता कुमारी, ममता रवानी, सागर रवानी, दीपा रवानी, कामेश्वर महतो, बेबी प्रियंका, निजामुद्दीन अंसारी, असरफ आलम, योगेश्वर रवानी, नितेश कुमार वर्मा, सागर रवानी आदि मुख्य रूप से उपस्थित थे.

बुढ़ा बाबा मंदिर प्रांगण में टुसू चोड़ैल प्रतियोगिता का आयोजन

धनबाद। मकर संक्रांति के अवसर पर रविवार को तिलैया पंचायत के बेंहचिया गांव स्थित बुढ़ा बाबा मंदिर प्रांगण में टुसू चोड़ैल प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. आयोजन में मुख्य रूप से पीरटांड़ प्रमुख महेंद्र महतो, तिलैया पंचायत के मुखिया सुधीर महतो, समाजसेवी सुरेश महतो, राजु ठाकुर उपस्थित थे. कार्यक्रम में आस पास के दर्जनों गांवों के युवतियों ने एक से बढ़कर एक टुसू का चोड़ैल लेकर कार्यक्रम स्थल पहुंची. इस अवसर पर युवतियों ने ढोल नगाड़े मांदर के थाप पर एक से बढ़कर एक टुसू गीत नृत्य प्रस्तुत कर लोगों का मन मोह लिया. आयोजन में 50 टीमों ने भाग लिया. कार्यक्रम में तिलैया बेहराडीह की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया. वहीं छोटाजमुआ की टीम ने दूसरे एवं तीसरे स्थान प्राप्त किया. आयोजन में प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले टीमों को मुखिया सुधीर महतो, सुरेश महतो, मधुसूदन महतो ने नगद पुरस्कार देकर सम्मानित किया.

7.5 करोड़ से बाईपास की होगी मरम्मत

संवाददाता । चांडिल

चांडिल गोलचक्कर से जामडीह तक बदहाल हो चुकी राष्ट्रीय राजमार्ग 32 का मरम्मत कार्य का शिलान्यास रविवार को सांसद संजय सेठ व विधायक सविता महतो ने नारियल फोड़कर किया. चांडिल की जनता का बहुप्रतीक्षित मांग अब पूरी होती दिखाई दे रही है. एनएच 32 के इस 11.6 किमी लंबे हिस्से की मरम्मत 7 करोड़ 36 लाख रुपये की लागत से होगी. सांसद संजय सेठ व विधायक सविता महतो ने विधिवत पूजा-अर्चना करने के बाद मंत्रोच्चारण के बीच नारियल फोड़कर मरम्मति कार्य का शिलान्यास किया. इसके साथ ही अब ईचागढ़ विधानसभा क्षेत्र के चांडिल की जीवन रेखा कही जाने वाली उक्त सड़क की बदहाली दूर होने वाली है.

इस अवसर पर सांसद संजय सेठ ने कहा कि चांडिल बाईपास सड़क रेलवे की जमीन पर बना है. पहले रेलवे ने सड़क बनाने की सहमती दी. इसके बाद रेलवे ने ही पहले सड़क भी बनाकर दी. रेलवे ने सड़क बनाकर इसे एनएचएआई को सौंप दिया था. संवेदक द्वारा निर्माण कार्य में गुणवत्ता में कमी और निम्न स्तर का सामग्री इस्तेमाल के कारण सड़क जल्द ही बहदाल हो गई थी. अब नए सिरे से एनएचएआई की ओर से सड़क की मरम्मति का काम करवाया जाएगा. इससे लोगों को आवागमन में सहुलियत होगी. सांसद ने स्थानीय राजनीतिक दलों के नेता, कार्यकर्ता व आम लोगों को सड़क निर्माण कार्य की गुणवत्ता की निगरानी करने की अपील की ताकि सड़क का निर्माण अच्छी हो सके.

प्राण प्रतिष्ठा को लेकर गोड्डा में निकली रामभक्तों की टोली

गोड्डा। अयोध्या में होने वाले भगवान राम के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम को लेकर रामभक्तों की टोली ने नगर में परिभ्रमण कर नागरिकों के बीच पवित्र अक्षत एवं निमंत्रण कार्ड का वितरण किया. डाक बंगला रोड स्थित बजरंगबली मंदिर में समाज के जुड़े बुद्धिजीवियों ने एवं रामभक्तों ने बैठक कर पूरे कार्यक्रम को भव्य रूप से संपन्न करने को लेकर विस्तृत चर्चा की. कार्यक्रम को लेकर नगर में घूम-घूम कर राम मंदिर में अपना सहभागिता निभाने के लिए निमंत्रण दिया एवं पवित्र अक्षत का वितरण किया. रविवार की दोपहर रामभक्ति की टोली सरकंडा चौक पहुंची और मोहल्लों में रहने वाले सभी लोगों से मिलकर कार्यक्रम में शामिल होने का निमंत्रण दिया. अनूप जयसवाल ने बताया कि अयोध्या में भगवान राम के प्राण प्रतिष्ठा से एक दिन पूर्व 21 जनवरी को डाक बंगला रोड स्थित बजरंगबली मंदिर प्रांगण से 501 महिलाओं का जत्था को लेकर शोभायात्रा निकाली जाएगी.

मकर संक्रांति कैरो प्रखंड में मकर संक्रांति के अवसर पर पूजा अर्चना सह मेले का हुआ आयोजन

आपसी भाईचारगी को आगे बढ़ाना है : डॉ रामेश्वर उरांव

संवाददाता। कैरो-लोहरदगा

कैरो प्रखंड के खरता-हनहट कोयल नदी तट पर स्थित मनोकामना सिद्धि बाबा भोलेनाथ मंदिर प्रांगण में मकर संक्रांति के अवसर पर पूजा अर्चना सह मेला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर पंडित कौशल कांत त्रिपाठी व काशीनाथ पांडेय द्वारा श्रद्धालुओं को विशेष पूजा अर्चना कराया गया. पूजा अर्चना के बाद आयोजन में उपस्थित अतिथियों को समिति के ओर से बैच पहनकर व शॉल भेंटकर स्वागत किया गया. मेले के अवसर पर आयोजित रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम का उद्घाटन मुख्य अतिथि मंत्री सह लोहरदगा विधायक डॉ रामेश्वर उरांव व अन्य अतिथियों द्वारा फीता काट कर किया गया. सांस्कृतिक ग्रुप के द्वारा एक से बढ़कर एक सांस्कृतिक गीत संगीत प्रस्तुति कर लोगों का मन मोह लिया. आयोजन समिति के द्वारा भंडारे का आयोजन किया गया. मकर संक्रन्ति के अवसर पर मनोकामना सिद्ध बाबा भोलेनाथ मन्दिर प्रांगण में मेला लगा, जहां बच्चों द्वारा खूब मिठाइयां व खिलौने की खरीदारी की गई. कार्यक्रम में उपस्थित मुख्य अतिथि वित्तमंत्री यसह विधायक रामेश्वर उरांव ने कहा बाबा शिद्ध भोलेनाथ मंदिर में हरेक वर्ष मेला एवं कई प्रकार का कार्यक्रम आयोजित किया जाता है. सबसे पहले आयोजन समिति बधाई के पात्र हैं, जिनके द्वारा क्षेत्र वासियों के लिए एकजुटता, आपसी भाईचारगी एवं कला संस्कृति को आगे बढाने के लिए एक मंच प्रदान किया जाता है. अनुसूचित जनजाति मोर्चा प्रदेश महामंत्री बिंदेश्वर उरांव, आजसू पार्टी प्रखण्ड प्रतिनिधी बिपिन सिंह, जिला परिषद सदस्य सुखदेव उरांव, प्रखंड प्रमुख श्रीराम उरांव, बीस सूत्री प्रखंड उपाध्यक्ष बुधवा उरांव, मुखिया सुमित्रा उरांव, बजरंग उरांव, सीमा भगत, परमेश्वर भगत, संजय महतो, शयमसुन्दर उरांव, विवेक प्रजापति, नजिर आलम खान, जगबन्धन भगत, आयोजन समिति के मृत्युंजय तिवारी, कृष्णा मनी यादव, राजेन्द्र महतो, मुन्नी उरांव, मोहन साहू, बिनोद शुक्ला, सुसेन महतो, सोमनाथ महली, बीरबल महली, बहादुर उरांव, रमेश दुबे, शयाम सुन्दर उरांव, सुखदेव उरांव, बजरंग यादव समेत अन्य लोग मौजूद थे.

पेज एक का शेष

पूरा देश अन्याय के दौर में...

गांधी ने दावा किया, आज तक हिंदुस्तान के पीएम मणिपुर में आपके आंसू पोंछने, आपसे गले लगने, आपका हाथ पकड़ने नहीं आए... शर्म की बात है। शायद मोदी जी के लिए, भाजपा और आरएसएस के लिए मणिपुर हिंदुस्तान का भाग ही नहीं है. उन्होंने कहा, सवाल उठता है कि न्याय यात्रा क्यों? क्योंकि हम भारत में बड़े अन्याय के दौर से गुजर रहे हैं. सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक अन्याय... सिर्फ मणिपुर के लोगों, मणिपुर की परंपराओं के खिलाफ अन्याय नहीं है , बल्कि पूरे देश में अन्याय है. उन्होंने दावा किया, आर्थिक दृष्टि से एकाधिकार स्थापित हो रहा है और कुछ लोगों की देश की सारी संपत्तियों तक पहुंच है. अधिकतर व्यवसाय, छोटे और मध्यम व्यवसाय नष्ट हो रहे हैं. बड़े स्तर की बेरोजगारी, बड़े पैमाने पर महंगाई का सामना पूरा भारत कर रहा है. उन्होंने कहा, दलितों, आदिवासियों की देश की शासन व्यवस्था में कोई कारगर दखल नहीं है... ये वे मुद्दे हैं, जिन्हें हम 'भारत जोड़ो न्याय यात्रा' उठाने जा रहे हैं. कांग्रेस नेता ने कहा, हिंदुस्तान का जो अगला विज़न होगा, वह हिंसा का नहीं, नफ़रत का नहीं, एकाधिकार का नहीं, बल्कि सद्भाव, समुचित भागीदारी और भाईचारे का दृष्टिकोण होगा, जिसे हम आपके साथ मिलकर, आपकी आवाज सुन कर हिंदुस्तान के सामने रखने जा रहे हैं. बाद में उन्होंने 'एक्स' पर पोस्ट किया, न्याय की हुंकार के रूप में, देश भर में हो रहे भयंकर अन्याय के विरुद्ध, आज से भारत जोड़ो न्याय यात्रा की शुरुआत हो चुकी है. राहुल गांधी ने कहा, हम जन की बात सुनने आ रहे हैं, मन की बात सुनाने नहीं. हम जनता का दुख-दर्द समझने, उनसे संवाद करने आ रहे हैं. और इसी ज़मीनी संवाद से निकलेगा शांतिपूर्ण, समृद्ध और शक्तिशाली भारत के निर्माण का दृष्टिकोण. उन्होंने कहा कि भारत का दृष्टिकोण पेश करना है, जिसका आधार समानता, भाईचारा और सद्भाव हो, जिसमें नफ़रत, हिंसा और एकाधिकार के लिए कोई जगह न हो

ला लिगा : एथलेटिक बिलबाओ ने तालिका में बार्सिलोना व एटलेटिको मैड्रिड जैसी बड़ी टीमों को पीछे छोड़ा

रीयाल सोसिदाद को हराकर एथलेटिक बिलबाओ तीसरे स्थान पर पहुंचा

भाषा । बार्सिलोना

फारवर्ड एलेक्स बेरेंगुएर के दो गोल की मदद एथलेटिक बिलबाओ ने ला लीगा (स्पेन की शीर्ष घरेलू फुटबॉल लीग) मैच में रीयाल सोसिदाद पर 2-1 से जीत दर्ज की. इस जीत से एथलेटिक बिलबाओ ने तालिका में बार्सिलोना और एटलेटिको मैड्रिड जैसी बड़ी टीमों को पीछे छोड़ दिया. टीम तालिका में तीसरे स्थान पर है और चैंपियंस लीग के लिए क्वालीफाई करने की दौड़ में बनीं हुई है. बेरेंगुएर ने आठ मिनट (32वें और 40वें) के अंदर दो गोल कर टीम के पिछले 13 मैचों से चले आ रहे अजेय क्रम को जारी रखा. वहीं एक अन्य मैच में विलारीयाल को लास पाल्मास ने 3-0 से हराया. पांच मैचों में चौथी हार के बाद विलारीयाल की टीम तालिका में 15वें स्थान पर खिसक गयी है.

08 मिनट के अंदर एलेक्स बेरेंगुएर ने दागे दो शानदार गोल

13 मैचों से के अजय क्रम को एथलेटिक बिलबाओ ने जारी रखा

- 2-1 से जीती एथलेटिक बिलबाओ की टीम

मेजर सॉकर लीग

सुआरेज ने बार्सिलोना के पूर्व साथियों के साथ किया अभ्यास

भाषा । फोर्ट लॉडरडेल

बार्सिलोना के लिए एक साथ खेल चुके लियोनेल मेस्सी, लुईस सुआरेज,सर्जियो बस्केट्स और जोर्डी एल्बा ने अमेरिका के मेजर सॉकर लीग (एमएसएल) की टीम इंटर मियामी फुटबॉल क्लब के लिए एक साथ अभ्यास किया. इंटर मियामी का सत्र पूर्व अभ्यास शिविर आधिकारिक तौर पर शनिवार को शुरू हुआ. सुआरेज पहली बार टीम के अभ्यास सत्र में पहुंचे जहां 2014 में बार्सिलोना के उनके तीन अन्य पूर्व साथी पहले से मौजूद थे.

सुआरेज ने पिछले महीने ही इंटर मियामी से एक साल का करार किया है. सुआरेज ने कहा कि मेरी लिए एक ऐसी टीम में खेलना शानदार होगा जिसमें कई जाने-माने खिलाड़ी हैं. इन खिलाड़ियों को हर कोई जानता है. मेरे यह नया क्लब एमएसएल चैंपियन बनना चाहता है और मुझसे उसकी यही उम्मीद है कि मैं इस में पेशेवर तरीके से उनकी मदद करूं. सुआरेज और मेस्सी ने बार्सिलोना में एक साथ छह सत्र खेले हैं. टीम ने इस दौरान चार स्पेनिश लीग खिताब और नौ अन्य ट्रॉफियां जीतीं ,जिसमें एक चैंपियंस लीग खिताब भी शामिल था.

खास बातें

- इंटर मियामी के अभ्यास सत्र में पहली बार पहुंचे सुआरेज
- अभ्यास सत्र में मेस्सी, सुआरेज व एल्बा शामिल थे
- पिछले महीने सुआरेज ने इंटर मियामी के साथ किया था करार

ब्रीफ खबरें

न्यूजीलैंड की टीम ने पाकिस्तान को हराया

हैमिल्टन । सलामी बल्लेबाज फिन एलेन के आकर्षक अर्धशतक और तेज गेंदबाज एडम मिल्ने के चार विकेट की मदद से न्यूजीलैंड ने रविवार को यहां दूसरे टी-20 अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैच में पाकिस्तान को 21 रन से हराकर पांच मैचों की शृंखला में 2-0 से बढ़त बनाई, पहले बल्लेबाजी के लिए आमंत्रित किए जाने के बाद न्यूजीलैंड ने 8 विकेट पर 194 रन बनाए. इसके जवाब में पाकिस्तान की टीम 19.3 ओवर में 173 रन बनाकर आउट हो गई.

मैक्सिको ई-प्रिक्स में 16वें स्थान पर रहे जेहान

मैक्सिको सिटी । भारतीय रेसर जेहान दारूवाला फॉर्मूला ई के अपने पदार्पण रेस मैक्सिको ई-प्रिक्स में निराशाजनक 16वें स्थान पर रहे. पच्चीस साल के जेहान ने क्वालीफाइंग सत्र में ग्रुप ए में एक मिनट 14.469 सेकंड के साथ नौवां स्थान हासिल किया था. मासेराती एमएसजी रेसिंग टीम के इस ड्राइवर को इससे मुख्य रेस की ग्रिड में 17वां स्थान मिला. रेस की शुरुआत में उन्होंने अच्छा नियंत्रण दिखाया और 15वें स्थान पर पहुंचे लेकिन पहले लैप की समाप्ति पर वह 17वें और दूसरे लैप के बाद 20वें स्थान पर खिसक गये.

शॉन मार्श ने क्रिकेट को अलविदा कहा

सिडनी । ऑस्ट्रेलिया के क्रिकेट खिलाड़ी शॉन मार्श ने रविवार को पेशेवर क्रिकेट से संन्यास की घोषणा करते हुए कहा कि बुधवार को बिग बैश लीग में सिडनी थंडर के खिलाफ मेलबर्न रेनेगेड्स का मुकाबला उनका आखिरी मैच होगा. वह आरोन फिंच के साथ संन्यास ले रहे हैं. चालीस साल के मार्श ने रेनेगेड्स से जारी बयान में कहा कि मुझे रेनेगेड्स के लिए खेलना पसंद है. मैं पिछले पांच वर्षों में कुछ शानदार लोगों से मिला हूं और जो दोस्ती मैंने बनाई है वह जीवन भर रहेगी.

ऑस्ट्रेलिया ओपन : पांच सेट तक चले टक्कर के मैच में रूबलेव ने सेबोथ को हराया

> यह पक्का है कि मैं इस मैच को कभी नहीं भूलूंगा.
> -आंद्रे रूबलेव

उलटफेर का शिकार होने से बचे रूबलेव

खास बातें

- 7-5, 6-4, 3-6, 4-6, 7-6 से जीते रूबलेव
- लगातार 68वें ग्रैंड स्लैम में भाग लेकर कॉर्नेट ने बनाया रिकॉर्ड

भाषा । मेलबर्न (ऑस्ट्रेलिया)

फ्रेंच ओपन में आंद्रे रूबलेव को शिकस्त का स्वाद चखाने वाले थियागो सेबोथ वाइल्ड ने ऑस्ट्रेलियाई ओपन के पहले दौर में रविवार को यहां एक बार फिर उनके खिलाफ उलटफेर करने के करीब पहुंच गये थे लेकिन रूस के अनुभवी खिलाड़ी ने पांच सेट तक चले मुकाबले में आखिरी नौ में आठ अंक भुना कर मैच जीता. पांचवें सेट के 12वें गेम में चार मैच प्वाइंट गंवाने के बाद रुबलेव टाईब्रेकर में 5-2 से पीछे हो गए. उन्होंने धैर्य बनाये रखा और अगले नौ में से आठ अंक जीतकर 7-5, 6-4, 3-6, 4-6, 7-6 से जीत दर्ज की. इस जीत के बाद वह जमीन पर लेट गये और फिर खड़े होकर ब्राजील के प्रतिद्वंद्वी को गले लगाया. सेबोथ वाइल्ड के लिए यह ऑस्ट्रेलियाई ओपन के मुख्य ड्रॉ का पहला मैच था.

रूबलेव ने कहा कि उनके दिमाग में फ्रेंच ओपन की हार की यादें ताजा हो गयी. उन्होंन कहा कि जाहिर है मैं इस मैच को नहीं भूलूंगा. थिएगो खरतनाक खिलाड़ी है. वह काफी प्रतिभाशाली है और तेज प्रहार करता है. ऑस्ट्रेलियाई ओपन का आयोजन इस साल 14 की जगह 15 दिनों तक होगा और यह पहली बार है जब इसका आगाज रविवार को हुआ. कॉर्नेट ने लगातार 68वें ग्रैंड स्लैम स्पर्धा में भाग लेकर महिला टेनिस में रिकॉर्ड बनाया.

सिनर ने जैंडस्चुल्प को हराया

इटली के यानिस सिनर ने ऑस्ट्रेलियाई ओपन के मौजूदा सत्र के पहले मैच में विश्व रैंकिंग में 59वें पायदान पर काबिज बोटिक वान डे जैंडस्चुल्प पर 6-4, 7-5, 6-3 से जीत दर्ज की. नवंबर में नोवाक जोकोविच को दो बार हराकर इटली को डेविस कप जीतने में अहम भूमिका निभाने वाले ने सिनर ऑस्ट्रेलियाई ओपन के शुरुआती मैच को जीतने के लिए लगभग ढाई घंटे का समय लिया.

अन्य मुकाबलों के परिणाम

- इटली के एक अन्य खिलाड़ी माटेओ अर्नाल्डी ने पहले दौर के मैच में एडम वाल्टन को 7-6 , 6-2, 6-4 से हराया.
- अर्जेंटीना के 22वीं वरीयता प्राप्त फ्रांसिस्को सेरुंडोलो ने मौजूदा सत्र में पांच सेट तक चले पहले मैच में ऑस्ट्रेलिया के स्वीनी को 3-6, 6-3, 6-4, 2-6, 6-2 से हराया.
- साल 2018 में उपविजेता रहे मारिन सिलिच को हंगरी के फैबियन मारोज्सन ने 6-1, 2-6, 6-2, 7-5 से मात दी.
- महिला वर्ग में आठवीं वरीयता प्राप्त मारिया सककारी ने जापान की नाओ हिबिनो को 6-4, 6-1 से शिकस्त दी.
- अमेरिकी ओपन 2021 की उपविजेता लेयला फर्नांडीज 17 वर्षीय सारा बेजलेक को 7-6, 6-2 हराकर दूसरे दौर में पहुंची.
- नौवीं वरीयता प्राप्त बारबोरा क्रेजिसिकोवा से पहले सेट में पिछड़ने के बाद वापसी करते हुए माई होंटामा को 2-6, 6-4, 6-3 से शिकस्त दी.

मारिया सककारी

- सोलह साल की ब्रेंडा फ्रुहविर्टोवा अपने पहले ग्रैंड स्लैम मैच को जीतने में सफल रही.
- चेक गणराज्य की इस खिलाड़ी ने रोमानिया की अन्ना बोगदान को 2-6, 6-4, 6-3 से हराया.
- विश्व रैंकिंग में 28वें स्थान पर काबिज लेसिया सुरेंको ने लूसिया ब्रोंजेटी पर 3-6, 7-5, 6-3 जीत दर्ज की.
- रूस की मारिया टिमोफीवा ने फ्रांस की अनुभवी एलिज कॉर्नेट को 6-2, 6-4 से हराया.
- अमांडा अनिसिमोवा ने वापसी पर शानदार खेल जारी रखते हुए 13वीं वरीयता प्राप्त ल्यूडमिला सैमसोनोवा पर 6-3, 6-4 से जीत दर्ज की.

हॉकी में सट्टेबाजी को वैध बनाने के फैसले का बचाव किया

संवाददाता । रांची

अंतरराष्ट्रीय हॉकी महासंघ (एफआईएच) ने रविवार को स्वीडन स्थित सट्टेबाजी फर्म स्प्रिंग मीडिया के साथ चार साल के लिए भागीदारी करने के अपने फैसले का बचाव करते हुए कहा कि यह खेल के विकास के लिए धनराशि जुटाने का एक जरिया है. एफआईएच ने हाल ही में स्प्रिंग मीडिया के साथ साझेदारी की है, ताकि खेल प्रशंसकों को एक सट्टेबाजी पैकेज की पेशकश की जा सके, जिसमें इसके सभी टूर्नामेंट शामिल होंगे, जिनमें चार साल में 1300 से अधिक मैच होंगे. हॉकी जगत में इस कदम पर कई की भृकुटियां तन गयीं, लेकिन एफआईएच ने अपने फैसले का समर्थन करते हुए कहा कि खेल की दुनिया में कानूनी सट्टेबाजी ही आगे बढ़ने का रास्ता है.

एफआईएच के एक शीर्ष अधिकारी ने यहां महिला ओलंपिक क्वालीफायर के मौके पर कहा, हमने एक कानूनी सट्टेबाजी इकाई के साथ करार किया है इसलिए सत्यनिष्ठा का कोई सवाल ही नहीं है. यह पूरी तरह से कानूनी और नियंत्रित तरीके से होती है. उन्होंने कहा, एफआईएच ने एक इंटिग्रिटी कोड बनाया है और कुछ वर्षों से एक इंटिग्रिटी इकाई भी है. निश्चित रूप से से इस कदम से कुछ फंड भी आएगा.

ईसीबी व बीसीसीआई के सदस्यों ने लिया जेएससीए का जाएजा

संवाददाता । रांची

इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड (ईसीबी) के तीन और बीसीसीआई के एक सदस्य ने आगमी 23 फरवरी से होने वाले भारत इंग्लैंड टेस्ट क्रिकेट मैच के लिए रविवार को जेएससीए स्टेडियम के ग्राउंड, पिच ,प्रैक्टिस पिच, ड्रेसिंग रूम, जिम, इंडोर क्रिकेट फैसिलिटी एवं सुरक्षा के मानदंडों का निरीक्षण किया गया.

इंग्लैंड क्रिकेट बोर्ड के सदस्यों का विशेष ध्यान मैच के विकेट पर था. स्टेडियम के साथ-साथ टीम के रुकने के लिए रेडिसन ब्लू होटल का भी निरीक्षण किया गया. स्टेडियम के सभी सुविधाओं और व्यवस्था से सभी सदस्य संतुष्ट और प्रसन्न दिखे.

किया निरीक्षण

- 23 फरवरी से होगा भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट मैच
- होटल रेडिसन ब्लू का भी किया गया निरीक्षण

दोस्ती कभी मिले नहीं पर एक दूसरे को अच्छे से जानते हैं और करते है सम्मान

सोशल मीडिया पर कोहली व जोकोविच करते हैं बातें

भाषा । इंदौर

भारतीय क्रिकेट के दिग्गज विराट कोहली ने रिकॉर्ड 24 बार के ग्रैंड स्लैम विजेता टेनिस खिलाड़ी नोवाक जोकोविच के साथ सोशल मीडिया से शुरू हुई दोस्ती की बातें साझा करते हुए कहा कि वह सर्बिया के इस महान खिलाड़ी का काफी सम्मान करते हैं. यह सब तब शुरू हुआ जब कोहली ने सोशल मीडिया के जरिये जोकोविच को एक संदेश भेजा. उन्हें हालांकि यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस दिग्गज टेनिस खिलाड़ी ने पहले से ही उन्हें संदेश भेजा था. कोहली ने बीसीसीबाई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) के 'एक्स (पूर्व में ट्विटर) पर जारी वीडियो में कहा कि मैं नोवाक के साथ बहुत ही व्यवस्थित तरीके से संपर्क में आया, मैं एक बार इंस्टाग्राम पर उनकी प्रोफाइल देख रहा था. मैनें बस उन्हें अभिवादन करते हुए एक संदेश भेज दिया. उन्होंने कहा कि जब मैं उनके लिए संदेश लिख रहा था तब मुझे यह देख कर आश्चर्य हुआ कि मेरे इनबॉक्स में पहले से ही उनके अभिवादन का एक संदेश था. मैंने हालांकि कभी इसे पढ़ा नहीं था. मैंने संदेश देखने के बाद फिर से प्रोफाइल की जांच की कि कहीं यह फर्जी तो नहीं. कोहली ने कहा कि मैंने इसकी दोबारा जांच की और यह वैध था. इसके बाद हम बात करने लगे. हम समय-समय पर संदेशों का आदान-प्रदान करते रहते हैं. मैंने उन्हें उनकी सभी अद्भुत उपलब्धियों के लिए बधाई दी.

कोहली के 50वें शतक पर जोकोविच ने स्टोरी पोस्ट कर दी थी बधाई

कोहली ने जब एकदिवसीय में अपना 50वां शतक जड़ा था तब जोकोविच ने भी इंस्टाग्राम स्टोरी पोस्ट करके उन्हें बधाई दी थी . कोहली ने कहा कि हाल ही में जब मैंने अपना 50वां शतक पूरा किया, तो उन्होंने मुझे बधाई संदेश भी भेजा . यह आपसी प्रशंसा और सम्मान की बात है . भारतीय खिलाड़ी ने कहा कि वैश्विक एथलीटों से जुड़ना वास्तव में अच्छा है . आप जानते हैं कि वे उच्च स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन कर रहे हैं . मेरे मन में उनके लिए, उनकी जीवन यात्रा के लिए, फिटनेस के प्रति उनके जुनून के लिए बहुत सम्मान है .

जोकोविच के साथ कॉफी पीना चाहते हैं कोहली

कोहली ने कहा कि अगर उन्हें जोकोविच से मिलने का मौका मिला तो वह सर्बिया के इस खिलाड़ी के साथ कॉफी पीना चाहेंगे . उन्होंने कहा कि अगर वह कभी भारत आते है या मैं उस देश में रहूं जहां वह खेल रहे हैं तो मैं निश्चित रूप से उनसे मिलना चाहूंगा .

कोहली से तारीफ सुनना सौभाग्य की बात: जोकोविच

जोकोविच ने कहा कि विराट कोहली और मैं कुछ साल से एक दूसरे को मैसेज कर रहे हैं . हमें कभी व्यक्तिगत रूप से मिलने का मौका नहीं मिला, लेकिन उनके जैसे खिलाड़ी से अपनी तारीफ सुनना मेरे लिए वास्तव में सम्मान और सौभाग्य की बात है .

मलेशिया ओपन सुपर 1000 बैडमिंटन

फाइनल में हारे सात्विक-चिराग

भाषा । कुआलालंपुर

भारत के सात्विकसाईराज रंकीरेड्डी और चिराग शेट्टी रविवार को यहां मलेशिया ओपन सुपर 1000 बैडमिंटन टूर्नामेंट के पुरुष युगल के फाइनल में चीन के लियांग वेई केंग और वांग की विश्व में नंबर एक जोड़ी से संघर्ष पूर्ण मुकाबले में हार गए और इस तरह से उन्हें उपविजेता बनकर संतोष करना पड़ा.

दोनों जोड़ियों ने बेहतरीन खेल का प्रदर्शन किया लेकिन एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीतने वाली सात्विक और चिराग की जोड़ी पहला गेम जीतने और निर्णायक गेम में 11-7 की बढ़त का फायदा नहीं उठा पाई और आखिर में उन्हें लियांग और वांग से 21-9, 18-21, 17-21 से हार का सामना करना पड़ा. सात्विक ने मैच के बाद कहा कि हमें खुशी है कि आखिर में हम किसी टूर्नामेंट में खेल पाए लेकिन थोड़ी निराशा है क्योंकि हम दबाव झेलने में नाकाम रहे. उन्होंने कहा कि मैच जब निर्णायक मोड़ पर था तब हम पर उनकी तुलना में अधिक दबाव था और हमने गलतियां की. उन्होंने हालांकि हम पर दबाव बनाए रखा.उम्मीद है कि अगली बार हम उनसे बदला चुकता करने में सफल रहेंगे. भारतीय जोड़ी की लियांग और वांग के हाथों यह चौथी हार है. यह दोनों जोड़ियां पिछले साल चार बार आमने-सामने थी जिनमें चीन की जोड़ी तीन मुकाबले जीतने में सफल रही थी.

बैडमिंटन टूर्नामेंट

- चीन की जोड़ी से हारे सात्विक और चिराग
- 21-9, 18-21, 17-21 से हारी भारतीय जोड़ी

शाहरुख, सलमान, सचिन तेंदुलकर ने इरा-नूपुर के प्रीतिभोज में शिरकत की

मुंबई। शाहरुख खान, सलमान खान, सचिन तेंदुलकर, माधुरी दीक्षित और जूही चावला समेत कई जानी-मानी हस्तियों ने अभिनेता आमिर खान की बेटी इरा खान और फिटनेस ट्रेनर नूपुर शिखरे के प्रीतिभोज में शिरकत की. अभिनेता आमिर खान और प्रोड्यूसर रीना दत्ता की बेटी इरा और नूपुर ने राजस्थान के उदयपुर में ईसाई रीति रिवाजों से आठ जनवरी को शादी की थी. उनका विवाह समारोह तीन दिन तक चला था, जिसमें संगीत, मेहंदी और विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया. रेखा, जया बच्चन, हेमा मालिनी, रणबीर कपूर, माधुरी दीक्षित नेने, कैटरीना कैफ, कंगना रनौत, नागा चैतन्य, अनिल कपूर, सोनाली बेंद्रे, फरहान अख्तर, जोया अख्तर, सुनिधि चौहान, कार्तिक आर्यन, सुष्मिता सेन, श्वेता तिवारी, भूमि पेडनेकर और कपिल शर्मा भी शनिवार शाम को यहां नीता मुकेश अंबानी सांस्कृतिक केंद्र (एनएमएसीसी) में आयोजित प्रीतिभोज में नव-दंपति को आशीर्वाद देने पहुंचे. केंद्रीय मंत्री स्मृति ईरानी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के साथ ही उद्योगपति दंपति नीता अंबानी और मुकेश अंबानी भी प्रीतिभोज में शामिल हुए. इससे पहले इरा ने तीन जनवरी को उपनगर मुंबई में एक पांच सितारा होटल में नूपुर के साथ अपनी शादी का पंजीकरण कराया था.

ब्रीफ खबरें

हुती के खिलाफ हमलों में शामिल नहीं: सिंगापुर

सिंगापुर। सिंगापुर के रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को कहा कि उनके देश ने यमन में हुती विद्रोहियों के खिलाफ सैन्य हमलों में भाग नहीं लिया, लेकिन वह लाल सागर में जहाजों को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से बने बहुराष्ट्रीय कार्य बल में शामिल है. रक्षा मंत्रालय ने कहा कि सिंगापुर के बल लाल सागर में यमन के हुती विद्रोहियों द्वारा मालवाहक जहाजों पर हमलों से निपटने के लिए बनाए गए एक अंतरराष्ट्रीय समुद्री सुरक्षा बल 'ऑपरेशन प्रॉस्पेरिटी गार्जियन' में शामिल हैं.
मंत्रालय ने 'द स्ट्रेट्स टाइम्स' के हवाले से एक बयान में कहा, ऑपरेशन प्रॉस्पेरिटी गार्जियन का हुती विद्रोहियों के खिलाफ सैन्य हमलों से संबंध नहीं है.

कॉकपिट में दरार आने के बाद विमान लौटा

तोक्यो। ऑल निप्पन एयरवेज के एक विमान के कॉकपिट की एक खिड़की पर दरार दिखने के बाद विमान उत्तरी जापान के सप्पोरो स्थित हवाई अड्डे पर वापस लौट आया. विमानन कंपनी और मीडिया ने यह जानकारी दी. विमानन कंपनी ने बताया कि एएनए उड़ान संख्या 1182 शनिवार को मध्य जापान के तोयामा हवाई अड्डे के लिए रवाना हुई थी, लेकिन मरम्मत के लिए न्यू चितोस हवाई अड्डे पर लौट आयी. कंपनी के मुताबिक विमान में सवार 65 व्यक्तियों में से किसी को कोई चोट नहीं आयी. कंपनी ने बताया कि विमान बोइंग 737-800 था. यह मॉडल बोइंग 737 मैक्स9 से अलग है.

सड़क दुर्घटना में पिता-पुत्र की मौत

जलपाईगुड़ी । प. बंगाल के जलपाईगुड़ी जिले में एक ट्रक ने स्कूटर सवार पिता-पुत्र को टक्कर मार दी, जिससे दोनों गिर गए और अनेक वाहन उन्हें रौंदते हुए गुजर गए. हादसे में दोनों की मौत हो गई। पुलिस ने यह जानकारी दी. कोतवाली पुलिस थाने के एक अधिकारी ने बताया कि स्कूटी में व्यक्ति की पत्नी भी सवार थी और इस दुर्घटना में वह गंभीर रूप से घायल हो गयी है. यह घटना शुक्रवार रात राष्ट्रीय राजमार्ग-31 पर दस दरगाह इलाके की है. अधिकारी ने बताया कि अचानक तेज रफ्तार ट्रक ने उन्हें टक्कर मार दी.

देश की राजधानी का तापमान 3.5 डिग्री से., छाया घना कोहरा

दिल्ली सहित देश के कई भागों में कड़ाके की ठंड

भाषा। नयी दिल्ली

राष्ट्रीय राजधानी सहित देश के विभिन्न भागों में रविवार सुबह भी कड़ाके की ठंड जारी रही. इस दौरान दिल्ली का न्यूनतम तापमान गिरकर 3.5 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया, जो इस सर्दी का सबसे कम तापमान है. कई हिस्सों में घना कोहरा देखा गया. मौसम अधिकारियों ने यह जानकारी दी. भारत मौसम विज्ञान विभाग के अनुसार, रविवार को दिल्ली का न्यूनतम तापमान मौसम के औसत से चार डिग्री कम दर्ज किया गया. आईएमडी ने राष्ट्रीय राजधानी में अगले दो दिन तक बहुत घने कोहरे और शीतलहर की स्थिति की संभावना जताई है. आईएमडी ने कहा है कि राष्ट्रीय राजधानी में 20 जनवरी तक घना कोहरा देखने को मिल सकता है. भारतीय रेलवे ने रविवार को कहा कि राष्ट्रीय राजधानी और कई अन्य राज्यों में घने कोहरे के कारण दिल्ली आने वाली 22 ट्रेन एक से छह घंटे की देरी से चलीं. मौसम कार्यालय के अनुसार, बहुत घना कोहरा तब होता है जब दृश्यता 0 से 50 मीटर के बीच होती है, 51 से 200 मीटर के बीच घना, 201 से 500 मीटर के बीच मध्यम और 501 से 1,000 मीटर के बीच कम होता है. केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) के आंकड़ों के अनुसार, दिल्ली का समग्र वायु गुणवत्ता सूचकांक सुबह नौ बजे 458 था, जो गंभीर की श्रेणी में आता है.

हरियाणा, पंजाब में शीत लहर का प्रकोप बढ़ा

चंडीगढ़। रविवार को हरियाणा और पंजाब शीत लहर की चपेट में रहे, दोनों राज्यों में न्यूनतम तापमान सामान्य से नीचे चला गया. मौसम विभाग की एक रिपोर्ट के अनुसार, पंजाब के शहीद भगत सिंह नगर जिले के बल्लोवाल सौंखरी में तापमान शून्य डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया.

पंजाब और हरियाणा में कई स्थानों पर घना कोहरा छाया रहा. दोनों राज्यों में कई स्थानों पर न्यूनतम तापमान सामान्य से दो से चार डिग्री नीचे दर्ज किया गया. दोनों राज्यों की साझा राजधानी चंडीगढ़ भी भीषण ठंड की चपेट में रही, जहां न्यूनतम तापमान 3.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो सामान्य से 3.7 डिग्री कम था. पंजाब में अमृतसर में न्यूनतम तापमान 4.1 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जबकि पटियाला और लुधियाना में न्यूनतम तापमान क्रमशः 3.4 और 2.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया. पठानकोट, बठिंडा, फरीदकोट और गुरदासपुर में न्यूनतम तापमान क्रमशः 6.2, 4.2, चार और 4.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया.हरियाणा में नारनौल सबसे ठंडा स्थान रहा, जहां तापमान दो डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया.

राजस्थान के कई हिस्सों में शीतलहर जारी, पिलानी सबसे ठंडा रहा

जयपुर। राजस्थान के कई हिस्सों में रविवार को भी शीतलहर का प्रकोप बना रहा, जबकि कुछ इलाकों में कोहरा के कारण आयी दृश्यता की कमी के चलते वाहन चालकों परेशानियों का सामना करना पड़ा. मौसम विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि तीन डिग्री सेल्सियस के न्यूनतम तापमान के साथ पिलानी राज्य का सबसे ठंडा स्थान रहा. बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू और झुंझुनूं में कोहरे के कारण दृश्यता में कमी दर्ज की गयी और इन हिस्सों में शीतलहर का प्रकोप भी रहा. विभाग के अनुसार रविवार सुबह चुरू में न्यूनतम तापमान 4.2 डिग्री, अलवर में 4.4 डिग्री, श्रीगंगानगर में 5.3 डिग्री, संगरिया में 5.6 डिग्री, फतेहपुर में छह डिग्री, सिरोही में 6.1 डिग्री, करौली में 6.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया. राज्य के एकमात्र पर्वतीय पर्यटक स्थल माउंट आबू में रविवार सुबह न्यूनतम तापमान जमाव बिंदु पर दर्ज किया गया.

मिलिंद ने कांग्रेस छोड़ी, भगवा थामा

भाषा। मुंबई

लोकसभा चुनावों से पहले मुंबई में कांग्रेस को झटका देते हुए पूर्व केंद्रीय मंत्री मिलिंद देवड़ा ने विकास के पथ पर चलने के लिए रविवार सुबह पार्टी छोड़ दी और महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे नीत शिवसेना में शामिल हो गए. इसके साथ ही, देवरा ने कांग्रेस पार्टी के साथ अपने परिवार के 55 साल पुराने रिश्ते को खत्म कर दिया. भारत जोड़ो न्याय यात्रा की शुरुआत होने से ठीक पहले देवड़ा के इस्तीफा देने पर कांग्रेस ने आरोप लगाया कि उनके पार्टी (कांग्रेस) छोड़ने की घोषणा का समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने यात्रा का जवाब देने के लिए किया, ताकि इसे मीडिया में प्रमुख खबर बनाया जा सके. दक्षिण मुंबई से पूर्व सांसद देवड़ा ने रविवार सुबह 'एक्स' पर एक पोस्ट में कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से अपने इस्तीफे की घोषणा की. उन्होंने कहा, मेरी राजनीतिक यात्रा का एक महत्वपूर्ण अध्याय आज समाप्त हो गया. मैंने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता से इस्तीफा दे दिया है, जिससे पार्टी के साथ मेरे परिवार का 55 साल पुराना रिश्ता खत्म हो गया है. बाद में, वह पूजा-अर्चना करने प्रभादेवी स्थित सिद्धिविनायक मंदिर गए. दोपहर में, देवड़ा मुख्यमंत्री के आधिकारिक आवास 'वर्षा' में एक कार्यक्रम में शिंदे की मौजूदगी में शिवसेना में शामिल हो गए. देवरा हाल में अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के संयुक्त कोषाध्यक्ष नियुक्त किये गए थे. देवड़ा ने दक्षिण मुंबई लोकसभा सीट पर उद्धव ठाकरे नीत शिवसेना (यूबीटी) द्वारा दावा किये जाने पर असहमति जतायी थी.

पंजाब में सरपंच की गोली मारकर हत्या

तरनतारन (पंजाब)। पंजाब के तरन तारन जिले में रविवार सुबह दो अज्ञात हमलावरों ने एक सरपंच की गोली मारकर हत्या कर दी. चब्बल गांव के सरपंच अवन कुमार उर्फ सोनू चीमा एक सैलून में अपने बाल कटवा रहे थे, तभी उन्हें नजदीक से गोली मार दी गयी. अवन को एक अस्पताल ले जाया गया, जहां उन्होंने दम तोड़ दिया. पुलिस ने बताया कि हमलावरों का पता लगाने के प्रयास जारी है. आसपास के इलाकों के सीसीटीवी फुटेज भी खंगाले जा रहे हैं.

भारत में कोविड के 375 नए मामले सामने आये

भाषा। नयी दिल्ली

भारत में बीते 24 घंटे में कोरोना वायरस संक्रमण के 375 नए मामले सामने आये हैं, जबकि उपचाराधीन मरीजों की संख्या कम होकर 3075 पर आ गई है. स्वास्थ्य मंत्रालय ने रविवार को यह जानकारी दी. मंत्रालय के मुताबिक, इस अवधि में कर्नाटक में दो संक्रमितों की मौत हो गयी. पिछले साल पांच दिसंबर तक दैनिक मामलों की संख्या घटकर दोहरे अंक तक आ गई थी, लेकिन ठंड और वायरस के नए उपस्वरूप जेएन.1 के कारण मामलों में तेजी आई है. आधिकारिक सूत्रों ने बताया कि पांच दिसंबर के बाद एक दिन में कोविड-19 के सर्वाधिक नए मामलों की संख्या 31 दिसंबर 2023 को 841 दर्ज की गयी, जो मई 2021 में दर्ज सर्वाधिक मामलों का 0.2 प्रतिशत था. कोविड-19 के 3,238 उपचाराधीन मरीजों में से तकरीबन 92 प्रतिशत मरीज घर पर ही पृथकवास में हैं.

हमास को कुचल कर रहेंगे : नेतन्याहू

एजेंसी। गाजा पट्टी

इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने गाजा में जारी युद्ध के 100 दिन पूरे होने के बीच कहा कि इजराइल हमास के खिलाफ जीत मिलने तक युद्ध जारी रखेगा और अंतरराष्ट्रीय न्यायालय (आईसीजे) समेत कोई उसे रोक नहीं सकता. संयुक्त राष्ट्र की शीर्ष अदालत ने दक्षिण अफ्रीका के इन आरोपों को लेकर दो दिन सुनवाई की कि इजराइल फलस्तीनियों का जनसंहार कर रहा है.

इजराइल ने इन आरोपों को सिरे से खारिज किया है. नेतन्याहू ने आईसीजे में सुनवाई के बाद यह बयान दिया. दक्षिण अफ्रीका ने न्यायालय से इजराइल को यह आदेश देने का अनुरोध किया है कि वह अपने भीषण हवाई और जमीनी हमलों को अंतरिम कदम के तहत रोके.

आईसीजे का मुख्यालय हेग में है. नेतन्याहू ने ईरान और उसके सहयोगी मिलिशिया का जिक्र करते हुए शनिवार शाम को टेलीविजन पर प्रसारित टिप्पणियों में कहा, हमें कोई नहीं रोकेगा, न हेग, न कोई और. अंतरराष्ट्रीय न्यायालय के समक्ष मामले की सुनवाई वर्षों तक चलने की संभावना है लेकिन अंतरिम कदमों पर फैसला कुछ हफ्तों के भीतर आ सकता है. न्यायालय के फैसले बाध्यकारी हैं, लेकिन उन्हें लागू करना कठिन है. नेतन्याहू ने स्पष्ट किया कि इजराइल लड़ाई रोकने के आदेशों की अनदेखी करेगा, जिससे उसके अलग-थलग पड़ जाने की आशंका है.

इजराइल पर युद्ध समाप्त करने का अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ रहा है. इस युद्ध के दौरान गाजा में 23,000 से अधिक फलस्तीनी मारे जा चुके हैं. इजराइल का तर्क है कि युद्ध समाप्त करने का मतलब हमास की जीत होगा.

खास बातें

- नेतन्याहू ने कहा- जीत मिलने तक युद्ध जारी रहेगा
- अंतरराष्ट्रीय न्यायालय समेत अन्य को दी चुनौती

वरिष्ठ कांग्रेस नेता टी एच मुस्तफा का निधन

कोच्चि (केरल)। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता एवं केरल के पूर्व मंत्री टी एच मुस्तफा का वृद्धावस्था से जुड़ी कई बीमारियों के कारण रविवार को यहां एक निजी अस्पताल में निधन हो गया. वे 82 वर्ष के थे. उनके परिवार के सूत्रों ने यह जानकारी दी. मुस्तफा के परिवार में पत्नी और आठ बच्चे हैं. मुस्तफा केरल में के. करुणाकरण मंत्रिमंडल में खाद्य मंत्री रहे थे और पांच बार के विधायक थे. अस्पताल के सूत्रों ने कहा कि उनका विभिन्न बीमारियों के लिए निजी अस्पताल में इलाज चल रहा था, जहां सुबह पांच बजकर 43 मिनट पर उन्होंने अंतिम सांस ली. विभिन्न राजनीतिक दल के नेताओं ने मुस्तफा के निधन पर शोक जताया.

नयी दिल्ली में पोंगल के मौके पर कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें पीएम मोदी ने गो-सेवा की, पूजा अर्चना भी की.

तैयारी पूरी उद्घाटन समारोह तीन दिन तक चलेगा, जो आज शुरू होगा, संतों का जमावड़ा

पुरी में 17 को जगन्नाथ मंदिर गलियारे का लोकार्पण

भाषा। पुरी

ओडिशा के सत्तारूढ़ बीजू जनता दल (बीजद) ने पुरी स्थित प्रतिष्ठित जगन्नाथ मंदिर के चारों ओर 800 करोड़ रुपये की लागत से नवनिर्मित आयताकार परिक्रमा पथ को अगले कुछ दिन में जनता को समर्पित करने के बाद आगामी लोकसभा और विधानसभा चुनाव से पहले राज्य के लगभग 10,000 मंदिरों व विभिन्न पूजा स्थलों के जीर्णोद्धार का खाका तैयार कर पूरे प्रदेश का माहौल 'जय जगन्नाथ' मय करने की तैयारी कर ली है. बनारस के काशी विश्वनाथ मंदिर और उज्जैन के महाकाल मंदिर की तर्ज पर विकसित जगन्नाथ मंदिर की चहारदीवारी के 75 मीटर के

गलियारे का उद्घाटन अयोध्या में राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह से पहले 17 जनवरी को मुख्यमंत्री नवीन पटनायक के हाथों होगा. उद्घाटन समारोह में देश की कुछ नामचीन हस्तियों व शंकराचार्यों और सभी प्रमुख मंदिरों के शीर्ष प्रतिनिधियों के शामिल होने की संभावना है. हिंदू धर्म के अनुसार, पुरी देश के चार पवित्र धामों में से एक है. धिकारियों ने बताया कि राज्य सरकार पूरे प्रदेश में लगभग 10,000 पूजा स्थलों के नवीनीकरण का काम भी कर रही है और इन पर करीब 4,000 करोड़ रुपये व्यय किए जाएंगे. उनके अनुसार, 18 जनवरी से लगभग 15 दिन तक राज्य से प्रतिदिन 10,000 तीर्थयात्रियों को मंदिर यात्रा की सुविधा भी प्रदान की जाएगी और इस उद्देश्य के लिए कुल 20 करोड़ रुपये का बजट रखा गया है.

'श्री मंदिर परिक्रमा प्रकल्प' मुख्यमंत्री पटनायक का 'ड्रीम प्रोजेक्ट' है : पुरी के जिलाधिकारी समर्थ वर्मा ने यहां बताया कि 'श्री मंदिर परिक्रमा प्रकल्प' मुख्यमंत्री पटनायक का 'ड्रीम प्रोजेक्ट' है और इसे तीन साल में ही पूरा कर लिया गया. उन्होंने बताया कि परियोजना को समय पर पूरा करने के लिए भूमि अधिग्रहण सबसे चुनौतीपूर्ण काम था, क्योंकि मंदिर परिसर के इर्द-गिर्द घनी आबादी थी जो पीढ़ियों से यहां रह रही थी, लेकिन सिर्फ एक महीने के भीतर करीब 26 एकड़ भूमि अधिग्रहीत कर ली गई. किसी ने कोई विरोध नहीं किया और लोगों ने प्रभु जगन्नाथ के लिए खुशी-खुशी अपने घर, मकान और जमीन दे दिए. वर्मा ने बताया कि सभी लोगों का विभिन्न स्थलों पर पुनर्वास करा दिया गया है. उन्होंने कहा कि परियोजना के लिए कुल 4.88 एकड़ निजी भूमि का अधिग्रहण किया गया है, जिसमें 445 दुकानें, 30 लॉज और 19 मठ थे. इसके अलावा 49 अतिक्रमण हटाए गए हैं व 659 रेहड़ी-पटरी वालों को स्थानांतरित किया गया है. परियोजना के लिए भूमि अधिग्रहण नवंबर 2019 में शुरू हुआ था. पटनायक ने नवंबर 2021 में परियोजना की आधारशिला रखी थी.

माउंट मरापी जवालामुखी में फिर से हुआ विस्फोट

अगम (इंडोनेशिया)। इंडोनेशिया के माउंट मरापी ज्वालामुखी में रविवार को फिर से विस्फोट हो गया, जिससे हवा में दूर-दूर तक धुआं और राख फैल गई. हालांकि किसी के हताहत होने की सूचना नहीं है. वेस्ट सुमात्रा प्रांत में 'द मरापी वॉल्केनो ऑब्जरवेशन पोस्ट' ने विस्फोट के दौरान लगभग 1,300 मीटर ऊंचाई तक राख का गुबार दर्ज किया और उसके बाद मानो राख की बारिश होने लगी हो. आसपास के गांवों की सड़कें और वाहन राख से अट गये. इंडोनेशियाई अधिकारियों द्वारा बुधवार को चेतावनी जारी कर कहा गया था कि ज्वालामुखी का स्तर दो से तीन या दूसरे उच्चतम स्तर तक बढ़ाने की आशंका है, जिसके बाद शुक्रवार को आसपास के इलाकों से कम से कम 100 लोगों को सुरक्षित स्थानों तक पहुंचाया गया.

उत्तर कोरिया ने समुद्र की तरफ बैलिस्टिक मिसाइल दागी

एजेंसी। सियोल

दक्षिण कोरिया ने कहा है कि उत्तर कोरिया ने अपने पूर्वी तट पर एक बैलिस्टिक मिसाइल दागी है. दक्षिण कोरिया के ज्वाइंट चीफ्स ऑफ स्टाफ ने बताया कि मिसाइल रविवार को दागी गयी, लेकिन उन्होंने अन्य कोई जानकारी नहीं दी जैसे कि मिसाइल ने कितनी दूर तक उड़ान भरी. जापान के रक्षा मंत्रालय ने भी कहा कि उसने उत्तर कोरिया द्वारा संभावित बैलिस्टिक मिसाइल प्रक्षेपण किए जाने का पता लगाया है, लेकिन और कोई जानकारी नहीं दी.

उत्तर कोरिया द्वारा 18 दिसंबर को अपनी ह्वासोंग-18 ठोस ईंधन चालित अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल का परीक्षण किए जाने के बाद से यह

खास बातें

- उ. कोरिया ने अपने खिलाफ बयानबाजी तेज की
- उ. कोरिया ने अपनी पूर्वी तट पर मिसाइलें जादी हैं

उत्तर कोरिया का पहला मिसाइल प्रक्षेपण है. ह्वासोंग-18 को अमेरिका के मुख्य भूभाग तक मार करने की क्षमता के साथ बनाया गया है. इससे कुछ दिन पहले उत्तर कोरिया ने दक्षिण कोरिया के साथ लगती अपनी समुद्री सीमा के समीप कई गोले दागे थे, जिसके बाद दक्षिण कोरिया ने भी उसी क्षेत्र में इस तरह का कदम उठाया.

प्राण प्रतिष्ठा समारोह : भगवान राम के दर्शन के लिए आने वाले श्रद्धालुओं को योगी का तोहफा

अयोध्या में 50 इलेक्ट्रिक बस व डिजिटल टूरिस्ट ऐप की शुरुआत

भाषा । अयोध्या (उप्र)

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने रविवार को अयोध्या धाम में नवनिर्मित मंदिर में भगवान श्रीरामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा से पूर्व विभिन्न कार्यक्रमों में हिस्सा लेते हुये ई वाहनों (50 इलेक्ट्रिक बसों एवं 25 ई ऑटो) को हरी झंडी दिखाई. एक आधिकारिक बयान के अनुसार मुख्यमंत्री ने 'डिजिटल टूरिस्ट ऐप' और अयोध्या पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट की भी शुरुआत की. इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने उपस्थित लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि अयोध्या धाम में श्रीरामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम से पूर्व आने वाले श्रद्धालुओं के लिए जन परिवहन की अच्छी सुविधा उपलब्ध हो सके, इस उद्देश्य से अयोध्या नगर निगम क्षेत्र और अयोध्या शहर में इलेक्ट्रिक-बस और इलेक्ट्रिक ऑटो, पर्यटन केंद्रित मोबाइल ऐप और अयोध्या पुलिस की आधिकारिक वेबसाइट की शुरुआत की गई है. रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा 22 जनवरी को होगी. उन्होंने कहा कि 22 जनवरी की तिथि भारत की श्रद्धा और आस्था को सम्मान देने की तिथि है और भारत के स्वाभिमान तथा सम्मान को पुनर्स्थापित करने की भी पावन तिथि है. मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि जब प्रभु श्रीराम 500 वर्षों के बाद अपने भव्य मंदिर में विराजमान होंगे तो न केवल अयोध्या धाम में बल्कि पूरे देश और प्रदेश में रामराज्य की स्थापना के प्रयास को मूर्त रूप प्रदान करते हुए यशस्वी भविष्य की कामना के साथ हमें उनका आशीर्वाद भी प्राप्त होगा. उन्होंने कहा कि आयोध्या ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश और देशभर में रामराज्य की स्थापना का कार्य 2014 में शुरू हुआ था. उन्होंने कहा कि इस पौराणिक और ऐतिहासिक तिथि को आने वाले श्रद्धालुओं, भक्तों, आस्थावान यात्रियों और पर्यटकों की सुविधा के लिए अयोध्या का सौंदर्यीकरण किया जा रहा है. मुख्यमंत्री ने कहा कि यात्रियों को कोई परेशानी न हो, इसके लिए इलेक्ट्रिक बस, इलेक्ट्रिक ऑटो और अन्य सुविधाएं शुरू की जा रही हैं.

टूरिस्ट ऐप के जरिए अयोध्या का अवलोकन कर सकेंगे श्रद्धालु

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि यहां आने वाला कोई भी श्रद्धालु 'डिजिटल टूरिस्ट ऐप' के जरिये अयोध्या की हर जगह का अवलोकन कर सकेगा .टूर योगी ने अयोध्यावासियों को मकर संक्रांति की बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कह कि देश और दुनिया आतुर है कि कब उन्हें अयोध्या में प्रभु श्रीराम के दर्शन का अवसर मिलेगा. हम सौभाग्यशाली हैं कि यहां पर हमें प्रभु का आशीर्वाद मिल रहा है. उन्होंने कहा कि हमारी जिम्मेदारी बनती है कि सबसे पहले अयोध्या को स्वच्छ और सुंदर बनाया जाए. सरकार का जो काम है वह कर रही है. बुनियादी ढांचे, सड़कों का चौड़ीकरण, रेलवे लाइन, हवाई हड्डे जैसी सुविधाओं के साथ ही इलेक्ट्रिक बस के जरिये अयोध्या आने वालों को एक अच्छा जन परिवहन विकल्प दिया गया है.

प्रसिद्ध गीता प्रेस के सामने 'रामचरित मानस' की मांग पूरी करने की चुनौती बढ़ी

गोरखपुर (उप्र)

अयोध्या में श्री रामलला प्राण प्रतिष्ठा की तारीख की घोषणा के बाद से ही यहां के प्रसिद्ध गीता प्रेस को रामचरितमानस की मांग को पूरा करने की चुनौती का सामना करना पड़ रहा है. गीता प्रेस के प्रबंधक लालमणि त्रिपाठी ने कहा कि मांग को ध्यान में रखते हुए प्रेस रामचरितमानस को वेबसाइट पर अपलोड करेगा जिसे 16 जनवरी से मुफ्त में डाउनलोड किया जा सकता है. उन्होंने कहा कि हम रामचरितमानस को गीता प्रेस की वेबसाइट पर अपलोड कर रहे हैं और मंगलवार से यह मुफ्त डाउनलोड के लिए उपलब्ध होगा. हम 15 दिनों के लिए यह सेवा प्रदान करेंगे, जिसे 50 हजार लोग डाउनलोड कर सकेंगे. मांग बढ़ने पर उन्होंने कहा कि ''हम इसकी क्षमता बढ़ाएंगे, जिससे एक लाख लोग एक साथ रामचरितमानस डाउनलोड कर सकेंगे. इस सेवा अवधि को बढ़ाया भी जा सकता है. त्रिपाठी ने बताया कि जब से अयोध्या में राम मंदिर ''प्राण प्रतिष्ठा'' समारोह की तारीख की घोषणा के बाद रामचरितमानस की मांग बढ़ गई है और इसकी आपूर्ति का दबाव बढ़ गया है.

अमेरिका की सोनल सिंह 22 को प्रयागराज में 11,000 बार लिखेंगी 'राम' नाम

लखनऊ

न्यूयॉर्क में रह रहीं 38 वर्षीय सोनल सिंह बेशक 'रामलला' की ऐतिहासिक 'प्राण प्रतिष्ठा' देखने के लिए अयोध्या में मौजूद नहीं होंगी लेकिन वह निराश नहीं हैं, उनके पूर्वज अपनी उत्पत्ति इस मंदिर नगरी से ही मानते हैं और सोनल का मानना है कि भगवान राम एक आदर्श हैं जो केवल अयोध्या या भारत तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि पूरे ब्रह्मांड के स्वामी हैं.सोनल सिंह ने कहा कि वह प्रयागराज में संगम क्षेत्र से अभिषेक समारोह देखेंगी. उन्होंने कहा कि अभिषेक के दिन मैं 11000 बार राम लिखूंगी. सोनल सिंह एक सॉफ्टवेयर सलाहकार हैं और आध्यात्म में उनका पूरा रुझान है. वह अभी प्रयागराज के संगम क्षेत्र में अक्षय वट मार्ग पर 'राम नाम बैंक' के माघ मेला शिविर में हैं. उनका मानना है कि ''राम केवल एक नाम नहीं है, बल्कि एक (ऊर्जात्मक) शब्द है, जो सकारात्मक कंपन पैदा करता है और एक दिव्य शक्ति हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा पैदा करती है. सिंह ने कहा कि भगवान राम केवल एक प्रतीक नहीं हैं जो अयोध्या या भारत तक ही सीमित हैं. वास्तव में, उनकी आभा दुनिया भर में फैली हुई है. वह पूरी मानवता के लिए एक प्रतीक हैं.

प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए बीएपीएस स्वामीनारायण को किया गया निमंत्रित

एजेंसी । नयी दिल्ली

भव्य मंदिरों को लेकर दुनियाभर में प्रख्यात अहमदाबाद की बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था को अयोध्या में राममंदिर में आगामी प्राण प्रतिष्ठा समारोह के लिए निमंत्रण मिला है. सूत्रों ने बताया कि संस्था के संतों का एक समूह 22 जनवरी को इस पवित्र नगरी में 'प्राण प्रतिष्ठा' में भाग लेगा. समझा जाता है कि संस्था के शीर्ष नेतृत्व को यह निमंत्रण दिया गया है. बीएपीएस स्वामीनारायण संस्था की वेबसाइट के अनुसार यह संस्था विश्वास, सेवा एवं वैश्विक सद्भाव के हिंदू मूल्यों का प्रचार प्रसार कर व्यक्तित्व विकास के जरिए समाज सुधार के लिए समर्पित आध्यात्मिक, स्वयंसेवी आधारित फेलोशिप है.

कांग्रेस नेता मीरा कुमार को मिला निमंत्रण

एजेंसी । नयी दिल्ली

विश्व हिंदू परिषद (विहिप) ने रविवार को कहा कि वरिष्ठ कांग्रेस नेता एवं लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष मीरा कुमार को अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने के लिए औपचारिक रूप से आमंत्रित किया गया है. विहिप ने कहा कि प्राण प्रतिष्ठा समारोह में शामिल होने के लिए लोकसभा के पूर्व उपाध्यक्ष करिया मुंडा को भी निमंत्रण दिया गया है. विहिप प्रवक्ता विनोद बंसल ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट में कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) अखिल भारतीय संपर्क प्रमुख रामलाल ने लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष एवं बाबू जगजीवन राम जी की बेटी मीरा कुमार को निमंत्रण दिया है.

खरमास खत्म आज से शुरू होगी तैयारी

- **15 जनवरी 2024 :** 15 जनवरी को मकर संक्रांति है. साथ ही खरमास भी समाप्त हो जाएगा. इस खास दिन पर रामलला के विग्रह यानी श्री राम के बालरूप की मूर्ति को गर्भगृह में स्थापित किया जाएगा.
- **16 जनवरी 2024 :** इस शुभ दिन पर रामलला के विग्रह के अधिवास का अनुष्ठान शुरू होगा.
- **17 जनवरी 2024 :** इस खास दिन पर रामलला की प्रतिमा को नगर भ्रमण के लिए निकाला जाएगा.
- **18 जनवरी 2024 :** इस दिन से प्राण-प्रतिष्ठा की विधि आरंभ होगी. साथ ही मंडप प्रवेश पूजन, वास्तु पूजन, गणेश पूजन, वरुण पूजन, विघ्नहर्ता और मार्तिका पूजन होगा.
- **19 जनवरी 2024 :** इस शुभ दिन पर राम मंदिर में यज्ञ अग्नि कुंड की स्थापना की जाएगी. इसके अलावा अरणी मंथन से यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित की जाएगी. फिर नवग्रह होम होगा.
- **20 जनवरी 2024 :** इस दिन राम मंदिर के गर्भगृह को 81 कलशों के जल से 'जिन्हें अलग-अलग नदियों के जल से इकट्ठा किया गया है' उनसे पवित्र किया जाएगा.
- **21 जनवरी 2024 :** इस तिथि को यज्ञ विधि में विशेष पूजन और हवन के बीच राम लला का 125 कलशों से दिव्य स्नान होगा.
- **22 जनवरी 2024 :** इस दिन मध्यकाल में मृगशिरा नक्षत्र में रामलला की मूर्ति गर्भगृह में स्थापित होगी. साथ ही इस दिन पूरे विधि-विधान से महापूजा होगी.

राम, सीता की चित्र वाली चूड़ियां महिलाओं को भेंट करेंगे निर्माता

एजेंसी । फिरोजाबाद (उप्र)

अयोध्या में 22 जनवरी को होने वाले राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में यूं तो कई तरह से लोग अपनी सहभागिता कर रहे हैं, लेकिन फिरोजाबाद के चूड़ी व्यापारियों ने समारोह में आने वाली महिलाओं को राम, सीता एवं हनुमान की चित्र वाली चूड़ियां निशुल्क भेंट करने का संकल्प लिया है. फिरोजाबाद के चूड़ी निर्माता आनंद अग्रवाल एवं उनके पुत्र निशांक अग्रवाल ने चूड़ी एवं कंगनों के ऊपर प्रभु श्री राम, माता सीता एवं मारुति नंदन हनुमान के चित्रों की आकृतियां उकेर कर उन्हें मनमोहक रूप में तैयार किया है. व्यापारी आनंद अग्रवाल ने कहा कि विभिन्न रंगों में आकर्षक डिजाइनों के बीच इन चित्रों के लगभग 10,000 पैक तैयार किया जा रहे हैं जो 22 एवं 23 जनवरी को राम जन्मभूमि समारोह स्थल पर पर स्टॉल लगाकर वितरित किए जाएंगे. उन्होंने कहा कि समारोह में आने वाली महिलाओं में इनका वितरण निशुल्क किया जाएगा. अग्रवाल ने कहा कि इसके लिए समारोह समिति से भी अनुमति ले ली गई है. उन्होंने बताया कि मंदिर आंदोलन के दौरान खुद कारसेवक के रूप में उन्होंने न केवल सहभागिता की थी अपितु इस दौरान वह दो दिन पुलिस हिरासत में भी रहे थे. उन्होंने बताया कि फिरोजाबाद में इन चूड़ी एवं कंगनों का निर्माण हिंदू एवं मुस्लिम कारीगरों द्वारा पूरी लगन के साथ किया गया है. उनका कहना था कि आधे से अधिक माल की पैकिंग हो चुकी है और जल्दी पूरा 10000 पैक तैयार कर लिये जाएंगे. आनंद अग्रवाल ने कहा कि चूड़ी की इन डिब्बियों को एक दर्जन चूड़ी के साथ तैयार किया गया है.

बलिया के राम मंदिर में भी 22 को होगी प्राण प्रतिष्ठा

एजेंसी । बलिया (उप्र)

अयोध्या में 22 जनवरी को रामलला (भगवान राम) की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा की तैयारियों के बीच राज्य के बलिया जिले में मुस्लिम कारीगरों की देखरेख में राम मंदिर का निर्माण किया जा रहा है. सांप्रदायिक सौहार्द की मिसाल पेश कर रहा यह मंदिर आकर्षण का केंद्र बना हुआ है. अयोध्या की तर्ज पर इस मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा भी 22 जनवरी को ही होगी. भृगु क्षेत्र के नाम से मशहूर धार्मिक और आध्यात्मिक आस्था के केंद्र बलिया में भी राम दरबार सज रहा है. जिला मुख्यालय के प्रसिद्ध भृगु मंदिर के समीप एक नये मंदिर को आकार देने में राजस्थान के मकराना से आए मुस्लिम कारीगर साजिद, सादात और समीर जुटे हुए हैं. वह और उनके साथी बलिया में बन रहे राम मंदिर के निर्माण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. मंदिर का निर्माण करा रहे सामाजिक कार्यकर्ता रजनीकांत सिंह ने रविवार को बताया कि शायद भगवान राम की यही मंशा थी की अयोध्या में रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा वाले दिन ही वह अपने नये मंदिर में विराजमान हों.

कॅरियर-काउंसिलिंग

डिप्लोमा इन एग्रीकल्चर कर युवा बना सकते हैं कॅरियर

एजुकेशन रिपोर्टर । रजनीश प्रसाद

एग्रीकल्चर डिप्लोमा दो साल का कोर्स होता है, जो एग्रीकल्चर के विभिन्न रूपों, पशुधन और फसल प्रबंधन, एग्रीकल्चर विस्तार, एग्रीकल्चर रसायन विज्ञान आदि के बारे में ज्ञान प्रदान करता है. नवीनतम एग्रीकल्चर नीति के अनुसार, भारत 2022 तक अपने वैश्विक निर्यात को 60 बिलियन अमरीकी डॉलर से अधिक तक बढ़ाने की योजना बना रहा है. यह एग्रीकल्चर के क्षेत्र में बड़े अवसर पैदा करेगा. कृषि डिप्लोमा कोर्स के ग्रेजुएट सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में रोजगार पा सकते हैं. इस क्षेत्र के विशाल दायरे और एग्रीकल्चर के तहत विभिन्न क्षेत्रों या शाखाओं में फैले पर्याप्त अवसरों को देखते हुए, यह उन लोगों को शिक्षित करने के लिए पूरी तरह समर्पित है जो इसे औपचारिक रूप से जानने में रुचि रखते हैं. भारत में ही नहीं, बल्कि पूरे विश्व में पर्याप्त विश्वविद्यालय, कॉलेज और संस्थान हैं जो एग्रीकल्चर में डिप्लोमा प्रदान करते हैं.

एग्रीकल्चर में डिप्लोमा कोर्स क्यों करें?

- एग्रीकल्चर जैविक प्रक्रिया से संबंधित है. इस कार्यक्रम का उद्देश्य तकनीकी स्तर पर मानव संसाधन का विकास कर एग्रीकल्चर उद्योग की प्रगति करना है.
- इस कोर्स में किसी भी एग्रीकल्चर उद्योग में काम करने वाले श्रमिकों के कौशल को बढ़ाया जाता है.
- एग्रीकल्चर में डिप्लोमा कोर्स के साथ छात्र 10वीं के बाद से ही अपने प्रारंभिक कॅरियर की शुरुआत कर सकते हैं.
- इस कोर्स के जरिए एग्रीकल्चर उद्योग में आवश्यक कौशल सीखने से अच्छी गुणवत्ता वाले उत्पादों का उत्पादन करने में मदद मिलेगी क्योंकि गुणवत्ता वाले उत्पादों की मांग अधिक है.
- कृषि डिप्लोमा कोर्स छात्रों के सामने कॅरियर के विभिन्न अवसर खोलता है. बड़ी-बड़ी नामी कंपनियां जैसे- आईटीसी, ब्रिटानिया, गोदरेज आदि डिप्लोमा छात्रों को इंटर्नशिप भी ऑफर करती हैं.

एग्रीकल्चर डिप्लोमा कोर्स: स्पेशलाइजेशन

- **फूड प्रोसेसिंग** – एग्रीकल्चर डिप्लोमा में, छात्रों को कई फूड प्रोसेसिंग प्रक्रियाओं, मेगा उत्पादन में शामिल विभिन्न मशीनरी इकाइयों, विभिन्न तकनीकों आदि के बारे में ज्ञान प्रदान किया जाता है.
- **सीड टेक्नोलॉजी** – एग्रीकल्चर में डिप्लोमा का अध्ययन करते समय उम्मीदवारों को बीज, गुणवत्ता के उपाय, जैविक खेती प्रक्रियाओं, जैविक खेती के लाभ, बीज रोपण तकनीकों में सुधार आदि के बारे में कई तकनीकों को सिखाया जाता है.
- **पशुपालन** – एग्रीकल्चर डिप्लोमा कोर्स, पशुपालन के भू विभिन्न पहलुओं के बारे में अध्ययन प्रदान करता है और एग्रीकल्चर, कटाई, खेती आदि के बारे में कई उप अवधारणाओं को शामिल करता है ताकि खेती और एग्रीकल्चर तकनीकों में सुधार किया जा सके.
- **जैविक खेती** – यह स्पेशलाइजेशन आजकल बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि यह उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग किए बिना खेती करने में मदद करती है, जिसे विभिन्न किसानों और युवाओं द्वारा सराहा जा रहा है। उम्मीदवारों को कृषि डिप्लोमा के इस स्पेशलाइजेशन कोर्स के माध्यम से रसायन मुक्त खेती के बारे में सिखाया जाता है.

डिप्लोमा के लिए विश्व के टॉप विश्वविद्यालय

- डलहौजी विश्वविद्यालय
- ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी
- तारातही इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
- कैलिफोर्निया स्टेट यूनिवर्सिटी, फ्रेस्नो
- वैगनिंगन विश्वविद्यालय
- वीएचएल यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड साइंसेज
- साउथ डकोटा स्टेट यूनिवर्सिटी
- जॉर्जिया विश्वविद्यालय
- मिशिगन स्टेट विश्वविद्यालय

भारत के टॉप विश्वविद्यालय

- इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी (आजीएनओयू)
- द इंस्टिट्यूट ऑफ केरला वेटेरिनरी एंड एनिमल सांइस, केरला
- द इंस्टिट्यूट ऑफ आनन्द एग्रीकल्चर, गुजरात
- द इंस्टिट्यूट ऑफ इंदिरा गांधी एग्रीकल्चर विश्वविद्यालय छत्तीसगढ़
- द इंस्टिट्यूट ऑफ महाराष्ट्र एनिमल एंड फिशरी साइंसेज, महाराष्ट्र
- यूनिवर्सिटी ऑफ एग्रीकल्चर एंड टेक्नोलॉजी, उदयपुर
- द इंस्टिट्यूट ऑफ श्री वेंकटेश्वर वेटरनरी, आंध्रप्रदेश
- द इंस्टिट्यूट ऑफ कर्नाटक वेटरनरी, एनिमल एंड फिशरीज

जॉब अलर्ट

राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड ने पशुपालन विभाग के अंतर्गत चतुर्थ श्रेणी पशु परिचर के भर्ती के लिए नोटिफिकेशन जारी किया है.

- संस्था – राजस्थान कर्मचारी चयन बोर्ड (आरएसएमएसएसबी)
- पद नाम – पशु परिचर
- पद संख्या – 5934
- अधिसूचना – जारी
- सैलरी – 20,200/- रूपये
- योग्यता – 10वीं
- नौकरी का स्थान – राजस्थान पशुपालन विभाग
- आवेदन मोड – ऑनलाइन
- फॉर्म भरने की तिथि – 19 जनवरी - 17 फरवरी 2024
- ऑफिसियल साईट – rsmssb.rajasthan.gov.in
- शैक्षणिक योग्यता – उम्मीदवार को भारत के किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10वीं पास करना जरूरी है.
- आयु सीमा 18 से 40 वर्ष

एग्रीकल्चर डिप्लोमा कोर्स

एग्रीकल्चर डिप्लोमा कोर्स 1 से 2 साल के छोटी अवधि के कोर्स होते हैं, जो छात्रों को एग्रीकल्चर के मूल सिद्धांतो की गहन शिक्षा प्रदान करते हैं। संस्थान 10वीं या 12वीं स्तर की शिक्षा के बाद एग्रीकल्चर में डिप्लोमा प्रदान करते हैं। एक अनुमान के अनुसार, एग्रीकल्चर क्षेत्र दिन-ब-दिन बढ़ रहा है, इस क्षेत्र में कॅरियर के बढ़ते रुझानों ने सार्वजनिक जीवन में एग्रीकल्चर की बढ़ती आवश्यकता को सुनिश्चित किया है और पिछले कुछ वर्षों में यह देखा भी गया है। यदि आप भी एग्रीकल्चर में डिप्लोमा के जरिए अपने प्रारंभिक कॅरियर को आयाम देना चाहते हैंतो आइए इस ब्लॉग में हम एग्रीकल्चर डिप्लोमा कोर्स के बारे में विस्तार से जानते हैं।

- कोर्स : एग्रीकल्चर में डिप्लोमा
- अवधि : 1 से 2 साल
- कोर्स स्तर : प्लोमा
- आवश्यकता : कक्षा 10 या 10 2
- कोर्स प्रकार : सेमेस्टर
- एडमिशन का तरीका : मेरिट और प्रवेश परीक्षा द्वारा आधारित
- कोर्स के बाद जॉब प्रोफाइल : एग्रोनॉमिस्ट, एग्रीकल्चर इंजीनियर, एग्रीकल्चर इंस्पेक्टर
- वेतन : 2 से 10 लाख INR/वर्ष

एग्रीकल्चर में डिप्लोमा के लिए आवश्यक स्किल

- मेहनती
- उद्योग के प्रति प्रतिबद्धता
- कुशल
- संगठन कौशल
- टीम वर्क
- प्रबंधन कौशल
- समस्या को सुलझाने के कौशल
- तकनीकी कौशल
- वैज्ञानिक ज्ञान
- जिज्ञासु मन

कुछ प्रमुख एग्रीकल्चर डिप्लोमा कोर्सेस

- कृषि में डिप्लोमा
- खाद्य प्रसंस्करण में डिप्लोमा
- बीज प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा
- बागवानी में डिप्लोमा
- जैविक खेती में डिप्लोमा
- पशुपालन में डिप्लोमा
- कृषि उत्पाद प्रसंस्करण में डिप्लोमा
- पोस्ट हार्वेस्ट टेक्नोलॉजी में डिप्लोमा
- डेयरी प्रौद्योगिकी में डिप्लोमा

भारतीय विश्वविद्यालयों में आवेदन प्रक्रिया

- सबसे पहले अपनी चुनी हुई यूनिवर्सिटी की ऑफिशियल वेबसाइट में जाकर रजिस्ट्रेशन करें.
- यूनिवर्सिटी की वेबसाइट में रजिस्ट्रेशन के बाद आपको एक यूजर नेम और पासवर्ड प्राप्त होगा.
- फिर वेबसाइट में साइन इन के बाद अपने चुने हुए कोर्स का चयन करें जिसे आप करना चाहते हैं.
- अब शैक्षिक योग्यता, वर्ग आदि के साथ आवेदन फॉर्म भरें.
- इसके बाद आवेदन फॉर्म जमा करें और आवश्यक आवेदन शुल्क का भुगतान करें.
- यदि एडमिशन, प्रवेश परीक्षा पर आधारित है तो पहले प्रवेश परीक्षा के लिए रजिस्ट्रेशन करें और फिर रिजल्ट के बाद काउंसलिंग की प्रतीक्षा करें। प्रवेश परीक्षा के अंको के आधार पर आपका चयन किया जाएगा और लिस्ट जारी की जाएगी.

प्रवेश परीक्षा

- आचार्य एनजी रंगा एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी एग्रीकल्चर एंट्रेंस एग्जाम
- आनंद एग्रीकल्चर एंट्रेंस एग्जाम
- आंध्रप्रदेश एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी, एग्रीकल्चर एंट्रेंस एग्जाम
- बाबा फरीद इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एग्रीकल्चर एंट्रेंस टेस्ट.

कॅरियर विकल्प

- एग्रोनॉमिस्ट
- कृषि अधिकारी
- कृषि इंजीनियर
- एग्रीकल्चर इंस्पेक्टर

मुद्रक तथा प्रकाशक लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लगातार इंफोटेनमेंट प्राइवेट लिमिटेड के पक्ष में, सिमलिया, रिंग रोड, पीएस-रातू, रांची - 835222 से मुद्रित तथा 304-305 समृद्धि स्क्वायर, किशोरगंज चौक, हरमू रोड, रांची- 834001, झारखंड द्वारा प्रकाशित.
संपादक - **सुरजीत सिंह**, स्थानीय संपादक - **संजय सिंह***. फोन नंबर- 0651-2961734 आर.एन.आई. नंबर - **JHAHIN/2023/84487** (*पीआरबी अधिनियम के तहत खबरों के चयन के लिए जिम्मेदार.)